प्रेमकान्ता सन्तति।

ऐय्यारी और तिलस्मी घटनाओंसे परिपूर्ण.

श्रीहरिः।

प्रेमकान्ता सन्तति

या

(हीरे का तिलस्म)

पहिला हिस्सा।

लेखक—

आशुकवि शम्भुप्रसाद उपाध्याय।

प्रेम बन में प्रेम है फूले फले प्रेमी बनो।
प्रेम-मनमें लो, अमल रस के तुम्ही नेमी बनो॥

प्रकाशक—

बाबू बनारसी प्रसाद खत्री
उपन्यास दर्पण आफिस, बनारस सिटी।

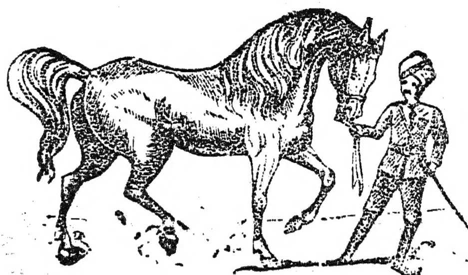
प्रथमवार १०००) १९२५ (मूल्य ॥=)

प्रकाशक—

बाबू बनारसी प्रसाद खत्री।

उपन्यास दर्पण, बनारस सिटी।





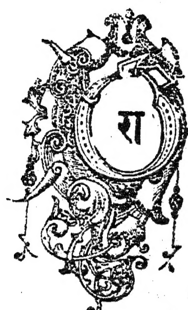
मुद्रक—

मैनेजर-महेशप्रसाद,

सत्यनाम प्रेस, बनारस सिटी

उपोद्घात ।

" अब सँभल कर सब रहो, मौका नहीं दिन का रहा ।
अब उसी जलमें बहो, जिसमें सभी कुछ है बहा" ॥



राजकुमारी प्रेमकान्ता तो अपने समय में बहुत कुछ दुःख उठाकर; अब अपने आराध्य देवता के साथही साथ योग्य वहन और सुन्दर सन्तान को पा एक तरह पर उन बातोंको भूल सी गई है। राजकुमार नरेन्द्रसिंह भी दो दो सुशीला, सच्चरित्रा पत्नीरत्न के साथही साथ तीन तीन लड़के; लड़की को पाकर पहलेके दुःखों को एकबारगीही हृदय से भूल गये हैं। उधर राजकुमार बीरेन्द्रसिंह और उनकी दोनो पत्नियोंका भी यही हाल है। गदाधरसिंह, भैरवसिंह; अर्जुनसिंह; इन्द्रदेव; भरतसिंह; रामनाथ और गिरिजा भी सब तरह के आनन्दों को पा उन सब बातों को भूले हुए हैं। महाराज सुदर्शनसिंह की महारानी शशिप्रभा भी अपनी सखी सहेलियों के साथ अपने पतिके पास सिंघपुर चली जा चुकी हैं। उनके ऐय्यारों की खानदान के भी उन्हीं के साथ वहीं पहुँच चुके हैं। इन लोगों के शत्रुओं में अब इधर कोई दिखाई नहीं पड़ते हैं। विलासपुर के महाराज भूपालसिंह भी एक तरह से चुप्पी साधे बैठे हुए हैं। बरसों से नरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह की

ग्रहदशा भी सीधे मार्गपर चली आरही है। तिलस्मसे जितनी दौलत निकली थी; उसमें से कुमारी प्रेमकान्ता के तोड़े हुए तिलस्मकी दौलत उन्हे और बांकी आधी आधी बाँटकर दोनो कुमारों के हिस्से में आ चुकी है। टूटे फूटे तिलस्म को भी महाराज कल्याणसिंह ने मरम्मत करके सुघड़; सुन्दर और निरापद बना दी है। दोनो कुमारों का दबदबा दिन पर दिन बढ़ रहा है; दोनो राज्यों ने इस समय बड़ी उन्नति कर रक्खी है। महाराज कृष्णसिंह और महाराज बलभद्रसिंह ने तमाम राज्यों का कार्य्य अपने अपने लड़कों को सौंप दिया है; अब वे दोनो राजकुमार से महाराज हुए हैं। उनकी पत्नियाँ भी राजकुमारी कहलानेके बदले महारानी कहलाने लग गईं हैं। महाराज कृष्णसिंह के दीवान जयसिंह ने भी अपना काम अपने लड़के गदाधरसिंह के सुपुर्दकर उस ओर से अपना हाथ हटा लिया है। भैरवसिंह नायब दीवान का काम करने लग गये हैं। इन्द्रदेव और गिरिजा ऐय्यारों के सरदार बने हुए हैं। ज्योतिषि रामनाथ को दोनो राज्यों की प्रोहिताई मिली हुई है ;—वे दोनो ओर से गहरी गहरी रकमोंको चीरते रहते हैं। महाराज दिग्विजयसिंह के समय में दीनाजपुर की दीवानी का काम सुरेशसिंह करते रहे। अब भी वही करते हुए आरहे हैं। उनके नीचे अर्जुनसिंह नायब दीवानीका काम करते हैं; भरतसिंह तमाम ऐय्यारों की सरदारी करते आते हैं। इसतरह एकएक आदमी एकएक कामको थामे हुए राज्य को बड़ी खूबी के साथ चला रहे हैं। दोनो राज्यों में किसी को किसी बात की तकलीफ होने नहीं पाती है। सब राजी खुशी के साथ सब तरह की उन्नति को करते हुए आगे की ओर बढ़ रहे हैं। दुश्मन लोग इनके नामोंसेही काँप उठने लग

गये हैं। महाराज नरेन्द्रसिंह ने मुंगेर से लेकर बस्ती तक के राज्यों को धीरे धीरे अपनी मातहती में कर लिया है। उधर महाराज वीरेन्द्रसिंह ने भी दीनाजपुर से लेकर शिलोङ्ग तक के राज्यों को अपने क़ब्जे में कर लिया है। इस समय इन दोनो राज्यों के मुक़ाबले में भारतवर्ष भर कोई राज्य भी ठहरते हुए दिखाई नहीं पड़ते हैं।

इन दोनो के दुश्मन लोग इन दोनोकी बढ़ती देख; सुनकर भीतर ही भीतर जल उठते हैं; परन्तु सामना होकर भिड़नेका साहस नहीं करते हैं। बदला लेनेकी लालसा दिन पर दिन बढती ही आती है; वे लोग उसको किसी तरह से छोड़ नहीं सकते हैं। महारानी स्वर्णकुमारी को अभी तक महाराज नरेन्द्रसिंह की मुहब्बतका नशा चढ़ा ही हुआ है। महाराज सुदर्शनसिंह अभी भी मुङ्गेर के साथ तमाम भारत वर्षके चक्रवर्त्ती होने का स्वप्न देख रहे हैं। महाराज प्रतापसिंह की प्रेमिनी होकर कमलिनी रह चुकी है। मनोरमाने झख मारकर दिवाकरसिंह ही के पास अपनी जिन्दगी को बेचड़ाली है। गिरधरसिंह को शिरींने फिर दूसरी औरत का मुंह देखने नहीं दिया है। हरिसिंहने गौहर ही के प्रेमका दमभरा। महाराज सुदर्शनसिंह और महारानी स्वर्णकुमारीके पाश बेशुमार दौलत थी; गौहर भी अपनी दौलत को बचाए हुए लाई थी;—गिरधरसिंहने भी बहुत कुछ ले आया था। सबोंने उसी दौलत को लगाकर सिंहपुर को आबाद किया; जगह जगह से रैय्यतों को लाकर बसाया। उसकी उन्नति के लिए बहुत कुछ कोशिश की। इस तरह जी जान लड़ाने के वाद वह भी एक शहरमें गिना जाने लगा। तीन चार लाखकी खासी वस्ती वहां भी होगई। महारानी स्वर्णकुमारी को नरेन्द्रसिंह के हाथ से झक्कड़सिंह ही बचाकर

ले आया था; इसलिये वह अपनी पुरानी मुहब्बत को याद दिलाकर उन्हीं के पाश रहने लगगया है। सुदर्शनसिंह;—वहां के महाराज हुए हैं; प्रतापसिंह फौज के सिपहसालार होकर काम करने लगे हैं। हरिसिंह ने दीवानीका बोझा उठाया है। गिरधरसिंह खजाञ्ची बनाए गए हैं। दिवाकरसिंहको नायब दीवानी का काम सौंपा गया है। महारानी स्वर्णकुमारी सब के ऊपर हुकूमत चलाने वाली बनी हुई है। गोली; बारूद; बन्दूक और तोपें सब वहीं तय्यार होने लग गई हैं। धीरे धीरे फ़ौजको बढ़ाकर लड़ाईका सामान जुटारहे हैं। इनके ऐयार और जासूस बराबर दीनाज़पुर और मुङ्गेर की खबर दिया करते हैं। कई लाख फ़ौज होचुकी परन्तु अभी तक दोनो राज्यों में से एक राज्यके ऊपर आक्रमण करने का भी इन लोगों को साहस नहीं हुवा है। ये लोग लाख भी कोशिश करें मगर धोके के सिवाय खुल्लम खुल्ला लड़कर जय पाने की गवाही इन लोगों का जी ही नहीं देता है। महाराज भूपालसिंह के यहां इनका आना जाना बरोबर होता है; वे भी उन दोनो को नीचा दिखाने के लिए सब तरह से तत्पर हैं परन्तु हिम्मत साथ नहीं देती है। बराबर हौसला करके हिचक जाते हैं। बरसों इसी तरह की उधेड़ बुन में रहने के बाद इन लोगों ने आपस में सलाह कर धोका देने के लिए अपने ऐयारों को भी भेजा मगर उनके किये कुछ भी न होसका। अन्तको फ़ौज बढ़ाकर लड़ने का ही जी में ठान उसी काम को करने लगे। प्रबन्ध में कोई त्रुटि नहीं हुई—चुपचाप ये लोग अपने समय को देखते हुए आरहे हैं। रेवा से लेकर मान्डला तक के छोटे छोटे राज्यों को भी इन लोगों ने अपने राज्य में मिला लिया। इस तरह इन लोगों की शक्ति भी धीरे धीरे बढ़ती

हुई आने लगी। महाराज सुदर्शनसिंहको महारानी शशिप्रभाको ओरसे एक लड़का और एक लड़की भी हुई है। लड़केका नाम शिवदत्तसिंह रक्खा गया है; लड़की सुभद्राके नामसे पुकारी जाती है। महाराज भूपालसिंह को भी महारानी निर्मला की ओर एक लड़की और एक लड़का हुवा है;—लड़के का नाम भीमसिंह है; लड़की का नाम सावित्री रक्खा गया है। और सब ऐयारों के भी लड़के लडकियां हुई है। वे सब अपने अपने राजकुमार के दोस्त और राजकुमारियों की सखी होकर रहने लग गए हैं।

महाराज बीरेन्द्रसिंह के एक लड़की और दो लड़के हुए हैं। चन्द्रकला के लड़केका नाम बीरकेशरी सिंह रक्खा है; वे सब से बड़े हैं। कोकिला के लड़के का नाम अजयसिंह रक्खा गया है। सब से छोटी लड़की का मान सरोजिनी रक्खा है। अर्जुनसिंहके लड़के का नाम श्यामसिंह है; लड़की का नाम बसन्ती है। भरतसिंह के लड़के का नाम, दिलीप-सिंह है, लड़कीका नाम अनन्ती है। राजकुमार बीरकेशरीसिंहके साथ श्यामसिंह का उठना बैठना बहुत होता है। अजयसिंह के साथ दिलीपसिंहकी बड़ी मुहब्बत है। राजकुमारी सरोजिनीके साथ बसन्त और अनन्त रातदिन रहा करती है। उन तीनों की मुहब्बत दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है। दोनों राज-कुमारों को पढ़ानेका अच्छा बन्दोवस्त किया गया था; ये लोग अभीतक भी पढ़ही रहे हैं। दोनो कुमारों में से बीरकेशरीसिंह की उमर इस समय सोलह बरस की हो चुकी है; अजयसिंह की उमर पन्द्रह से ज्यादे की नहीं हुई है। राजकुमारी सरो-जिनी अभी चौदह ही बरसकी है। अनन्ती और बसन्ती भी पन्द्रह के पार नहीं पहुँची है। श्यामसिंह और दिलीपसिंह ने

सोलह के ऊपर पैर रक्खा है। दोनो कुमार पढ़ने लिखने में बड़े होशियार हो निकले हैं; भारतबर्ष की हर एक भाषा और हर तरहकी कलाओं को वे सीख चुके हैं। कसरत में; कुस्ती में; सवारी में;—लड़ने में; शिकार में; तैरने में; दौड़ने में; उन्हे कोई नहीं पासकता है। समय के अनुसार उन लोगों ने कुछ कुछ ऐयारी भी सीखली है। श्यामसिंह और दिलीपसिंह तो अभीसेही ऐयारी में नामी हो निकल आए हैं। कुमारी सरोजिनी भी हर तरह की विद्याओं में निपुण हो गई है; घोड़े-की सवारी में तो उसने बहुत कुछ पुरष्कार भी पाया है। ऐयारी भी उसने कुछ कुछ सीखली है। अनन्ती और वसन्ती तो ऐयारी के फ़न में किसी को अपने सामने ठहरने नहीं देने लग गई हैं। इन सब बातों से यहाँ के लोगों को सब तरह का सन्तोष होरहा है; सब निश्चिन्तता के साथ अपने अपने कामों में लगे हुए हैं।

मुंगेर की अवस्था इससे भी अच्छी है। महाराज नरेन्द्र-सिंह के दोनो लड़कों में से महारानी प्रेमकान्ता की ओर के लड़के का नाम रणधीरसिंह रक्खा गया है। इनकी उमर सोलह बरस के ऊपर पहुँच चुकी है। इन्होने अच्छे अच्छे शिक्षकों से अच्छी अच्छी विद्या हासिल की है। ये किसी से डरना जानतेही नहीं हैं। हिन्दुस्तान भरकी कोई भी भाषा इन्होने नहीं छोड़ी है। इनकी खूबसूरती ही इनको सबसे बढ़कर बना रही है। इन्होने ऐय्यारी भी अच्छी सीखी है। संस्कृतमें कोई भी शास्त्र इन्होने बांकी नहीं छोड़ा है। कई एक कलाओं में बड़ा नाम भी पाया है। अरबी; फ़ारसी; तुर्की; चीनी; बर्मी और श्यामी ज़बान तक ये जानने लग गए हैं। घोड़े की सवारी में तो अपनी बरोबरी का किसी को नहीं समझते हैं।

राजनीति में भी ये एकही हो आये हैं। महारानी किशोरी के लड़के का नाम कुलदीपसिंह रक्खा गया था। परन्तु किशोरी ने उनका नाम महेन्द्रसिंह रक्खा; इस लिये वे उसी नाम से बुलाये जाने लग गये हैं। अभी उनकी उमर सोलह के भीतरही है। परन्तु उन्होने अपने भाई से भी बढ़कर विद्या हासिल किया है। ऐय्यारी में तो वे ऐय्यारों का कान भी काटने लग गये हैं। खूबसूरत भी ये परले सिरे के हैं। लड़ाई के फनमें इनको पानेवाला इस समय कोई नहीं दिखाई देता है। सारी कलाओं में इनकी दस्तन्दाजी है। मुसौवरी में तो बहुत बड़ा नाम भी पा चुके हैं। कोई वाद्य इनसे बचा नहीं है। सङ्गीत शास्त्र तो इनके सामने हाथ बाँधे खड़ा रहता है। नीतिमें भी अत्यन्त कुशल हो चले हैं। कभी कभी अपने बाप; दादे तक को भी राय देने में पीछे नहीं हटते हैं।

महारानी किशोरी की लड़की का नाम कुसुमलता है; उनकी उमर अभी चौदह के ऊपर भी नहीं पहुँची है; इसी अवस्थामें इन्होंने अपने भाइयों की तरह समस्त विद्याओं को सीख लिया है। ऐय्यारी भी बहुत जान चुकी हैं। संगीत; वाद्य; सीना; पिरोना;—गृहस्थियों का कार्य; चित्रकारीके अलावे हर-एक ज़बानों को भी समझ लिया है, संस्कृतमें कविता तक भी कर सकती हैं। हिन्दी में बहुत कुछ बनाया भी है; बङ्गला; मराठी; गुज़राती में बहुतसी किताबें लिख डाली हैं। सबसे बढ़कर अच्छी अच्छी कारीगरी भी कर दिखाती है। गजब की खूब-सूरत है, इसके सामने किसीकी भी खूबसूरती नहीं ठहरती है। सुशीला; सच्चरित्रा; दयालु है। किसी को किसी बात से तकलीफ़ नहीं होने देती है। इसके अच्छे स्वभावों को देखकर सब इससे प्रसन्न रहते हैं। इसकी तारीफ़ इनदिनों समस्त

भारतवर्ष में हो रही है। जितनी भाषा; इसके दोनो भाई जानते हैं उतनी ही भाषाओं में ये उनसे बोल भी सकती है। घोड़े पर ही सवार होकर यह कई मर्तबः अपने नानाके यहाँ भी हो आई है; कई दफ़ा दीनाज़पुर भी चली गई है। इसकी यह सवारी बड़ी ही प्रिय है; यह और औरतों की तरह ताम-जान और पालकी में बन्द रहकर चलना पसन्द नहीं करती है। विज्ञानमें इसने बहुत कुछ उन्नति भी किया है। तैरना भी यह जानती है। इसकी मँगनी के लिए ग्वालियर; इन्दोर; जयपुर; वरोदा; जोधपुर; पञ्जाब; सिन्ध; और काशमीर के महाराजों ने समाचार भेजा था परन्तु स्वयं इसने अपने भाइयों की शादी न हो लेनेतक अपनी शादी करना स्वीकार नहीं किया; इसलिए किसीने इस बात पर ज़ोर भी नहीं दिया। राजकुमारी सरोजिनी के साथ इसकी बड़ी मुहव्वत होगई है; महीने में दोनो दो दो मर्तबः भी मिल लिया करती हैं।

गदाधरसिंह के लड़के का नाम विक्रमसिंह रख्खा गया है। उनकी उमर सत्रह सालकी हो चुकी है। ये ऐयारी में अपनी शानी नहीं रखते हैं। इनकी मुहब्बत कुमार रणधीर-सिंह से बहुत है। ये रात दिन उन्हीं के पास बैठा करते हैं। भैरवसिंह के लड़के का नाम जोवनसिंह है; इनकी उमर भी सोलह के पार हो चुकी है। ये भी अपनी ऐयारी के सामने किसी को कुछ नहीं समझते हैं। इनका प्रेम छोटे कुमार महेन्द्रसिंह पर सब से ज्यादः है। वे इनकी आँखों के ओट होते ही इनको बड़ाही कष्ट होता है। इन्द्रदेव के लड़केका नाम जयदेव रख्खा गया है; इसकी उमर भी लगभग सत्रह सालकी होगी; यह अत्यन्त मसखरा हो निकला है। इसकी बुद्धि भी बड़ी तेज़ है। यह सब किसी

को छकाने में बड़ा ही सिद्धि हस्त है। यह दोनो कुमारों से बरोबर प्रेम रखता है। इसकी ऐयारी भी किसी से कम नहीं है। सौदामिनी की लड़की का नाम सरस्वती है; माधवी की लड़की का नाम कालिन्दी है। इन्द्रदेव की लड़की का नाम सत्यभामा है। इन तीनों की उमर भी करीब करीब पन्द्रह सालकी है। तीनों ऐयारी के फ़नमें होशियार हो निकली हैं। इन्होने भी कुसुमलताकी तरह अनेक विद्याओं को हासिल कर लिया है। ये भी अपने को किसी बात में किसी से कम नहीं समझती हैं। इन तीनों का और कोई काम नहीं है; रातदिन कुमारी कुसुमलताके पाश रहकर उसको हर तरहका आराम दिया करती हैं। कुमारी भी इनलोगों को प्राण से बढ़कर चाहती हैं।

राज्यका प्रबन्ध बहुत ठीक तरहसे चला आता है; दिन पर दिन तरक्की होती जाती है। किसी को किसी बात की चिन्ता नहीं है। राज्यका बिस्तार अब बढ़कर पीलीभीत तक होगया है। नैपाल से भी इनकी मैत्री होगई है; वे भी इनको मानने लग गए हैं। जगह जगह पाठशालाएँ खुली हैं; मौक़ मौक़ेपर फौज भी रक्खी गई हैं। धर्मशालाओं की कमी नहीं है। राज्य भर में अपठित व्यक्ति बहुत कम दिखाई पड़ने लग गए हैं। बड़े बड़े राजे महाराजे इनको मानने लग गए हैं। सिंघपुर की बातें भी इनलोगोंके कानो तक आपहुँची है मगर उसकी ज़रा भी परवाह नहीं रखते हैं। वास्तव में ये लोग अब किसी को कुछ नहीं समझने लग गए हैं। महारानी किशोरी को कुछ खुटका सा होता था; वे दुश्मन को अपने से छोटा नहीं समझती थी। इस लिए उन्होने गदाधरसिंह से सलाह कर गुप्त रूपसे कई एक चालाक जासूस, ऐय्यार और जासूसिनी,

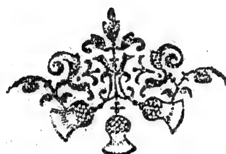
ऐयारों को विलासपुर और सिंघपुर में हमेशा रहकर ख़बर देने के लिए भेजा था। वे लोग वहाँ रहकर उन लोगों का राई रत्ती समाचार दिया करते थे। दोनो कुमार कभी कभी दीनाज़पुर जाकर वहाँ के दोनो कुमारों से मिल लिया करते थे, कभी कभी वेही दोनो आकर इन लोगोंसे मिलते रहते थे। इस तरह इन चारो में बड़ाही घनिष्ट प्रेम हो चला था। सोलह सत्रह बरस का ज़माना गुज़र चुका परन्तु अभी तक इन लोगों के ऊपर कोई विपत्ति नहीं आई है। ये लोग अब एक तरह से तमाम दुश्मनों को दिल से भूल रहे हैं। कभी कभी प्रसंगवश उन लोगोंकी बातें आती भी है तो दिल्लगीही में उड़ा देते हैं। कोई कुछ भी नहीं सुनता है।

दोनों कुमारों की शादी के लिए बड़े बड़े राज्यों से बात चीत आई परन्तु अभी तक किसी को ठीक जवाब नहीं दिया गया है। उन दोनों की राय भी अभी शादी करने की दिखाई नहीं पड़ती है। समयसे वे लोग कुछ नई रोशनीके हो निकले हैं इसलिए बिना देखा देखी के,—जीवन भर की साथिनी बनाना—ज़रा भी पसन्द नहीं करते हैं। उन दोनों की खूबसूरती और लायक़ी को सुन चाहनेवाली बहुत सी राजकुमारियाँ दिखाई भी पड़ने लग गई हैं मगर इन दोनों का दिल किसीके ऊपर बैठता हुवा दिखाई नहीं देता है। कितनों ने अपनी तस्वीर को भेजा; कितनों ने समाचार भर पहुँचाया परन्तु परिणाम में उन सभों को निराशही होना पड़ा है। कितनी लड़की उन दोनों के पीछे बावली भी होगईं, कितनी जोगिन बनके जङ्गल जङ्गल टकराने लग गईं परन्तु उन दोनो के प्रेम को न पा सकीं। वे दोनो किसी को भी अपने से बढ़कर खूब-सूरत नहीं समझते हैं; किसी को भी अपने लायक़ नहीं मानते

हैं। परन्तु तुच्छ करके किसीको छेड़ते भी नहीं हैं। अभी तक इन दोनोका पढ़ना लिखना छूटा नहीं है। जब कभी फुरसत मिला करती है तब कुछ न कुछ नई बातें सीखाही करते हैं। प्रेमका पाठ अभी इन दोनो को पढ़ने का मौक़ाही नहीं मिला है; इसलिए भी किसीकी बात नहीं सुनते हैं। इन दोनो ने अपनी ओरसे कई जगह कई तरह की विद्याओं के सीखने की पाठशालाएँ भी खोल रक्खी है। दोनो भाइयों को व्यायाम बहुत पसन्द है; इसलिए कई जगह इसके अच्छे अच्छे अखाड़े भी बनवाए हुए हैं। लड़ाई के काममें इन दोनो भाइयों से बढ़कर कोई भी होशियार नहीं है। आपस में फौज को बाँटकर दोनों हफ़्ते में दो एक मर्तब झूठी लड़ाई भी किया करते हैं। अब देखें, ये किस के प्रेममें फँसकर कितनी बहादुरियों के साथ अपनेको दुनियाँके सामने एकही कहलाते हुए दुश्मनों को नीचा दिखाकर अपना काम बनाते हैं। उन्हीं सब बातोंको मैं इस सन्तति में लिख कर दिखाता हूँ; महाराज वीरेन्द्रसिंहके दोनो लड़कों की बहादुरी को मैं इसके उपसंहार रूप दूसरी सन्तति "सोने का तिलस्म" में लिखकर नज़र कराने आऊँगा।

इस सन्तति में जितनी बातें गुप्त रक्खी जायगी; जितने रहस्य न खुलेंगे वे उस सन्तति में खुलेंगे। उसके बाद इसमें विचित्रता दिखाने वाला परम साहसी, चतुर, बहादुर अद्भुत नाथ के लोमहर्षण कामों का भेद "अद्भुतनाथ" के कई एक हिस्से में लिखे जायंगे। साथही उस सन्तति में आने वाली जगत प्रसिद्ध सुन्दरी मदन मोहनी का चरित्र भी "मदन मोहिनी" के नामसे कई एक हिस्से में उसकी विचित्रता को दिखाए जांयगे। यह उपन्यास, यह विषय एकदम कल्पना के आधार पर नहीं लिखा जा रहा है, इसमें सत्यता की मात्रा

बहुत ज्यादा है। लण्डन रहस्य को पढ़ने वाले जैसा उस समय के लण्डन को समझने लग गये हैं, वैसाही यह भी उस समय के भारतवर्ष को बता कर समझाता है। उसमें अत्याचार की शाखा बहुत कुछ फैली हुई है, इसमें अत्याचार करने वाले को दमन करने वाले की विशेषता है। उसमें रोचकता की सीमा कुछ है तो इसमें बहुत कुछ है। उसमें सामाजिक उल्लेख विशेष है तो इसमें भी कम नहीं है। तिलस्मी और ऐयारी के विषयों को पढ़कर असम्भव समझना उन दिनों के भारतवर्ष की कलाओं के सामने बिलकुल ज्यादती है। विशेष नहीं तो उनके प्रमाण अब भी बहुत कुछ मिलते हैं। हम इस उपन्यास में उन्हीं सब भारत के गौरव की बातों को प्रत्यक्ष रूप से दिखाने का प्रयत्न करते हुए इसको हर एक रस से ऊँचा बनावेंगे।



श्रीहरिः।

श्रीइष्ट देवता चरण कमले भ्योनमः।

प्रेमकान्ता सन्तति।

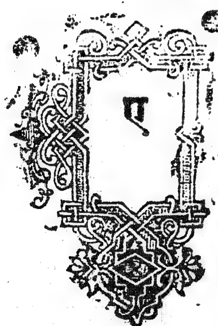
या

(हीरे का तिलस्म)

पहिला हिस्सा।

पहिला बयान।

"आगए शिर पर वही, जिसको बहुत शंका रही।
आगए जोड़ी नई, आफ़त खड़ा इसमे भयी" ॥



क तरह पर संध्या बीती; रजनी ने अपना आधिपत्य जमाया। उजाले का परदा हटाकर अन्धःकारने संसार को छिपाया घर घर में रोशनी जग मगा उठी;—कमलिनीकी बढ़ी हुई शेखी टूटी;—प्रेमिनियों की बिरह वेदना छूटी। तारे बिखरकर चमकने लगे; नवयौवना के मुखड़े दमकने लगे। हवा

शीतलताको लेकर चलने लगी। कुमुदिनी की खुशी एक बारगिही रोशन हो निकलने लगी। चाँदमी आए;—चकोरों ने उन्हींके ऊपर लौ लगाए। ऐसे मनभावन समय में मुङ्गेर के कीले से उतर कर आने वाली जनानी घाट पर एक सुन्दर नौजवान औरत को; हथेलीपर गाल रक्खे; किसी गहरी चिन्ता में डूबी हुई बैठी देख रहे हैं। उसके पैर के नीचे ही गङ्गाजी कलकल ध्वनि से बहरही है। चारो तरफ़ सन्नाटा पड़ा हुवा है। घाटके अग़ल बग़ल तीन चार बजड़ोंके अलावे कई एक नावें भी बँधी हुई हैं;—परन्तु इस समय किसी में भी मल्लाह दिखाई नहीं पड़ते हैं। घाटसे ऊपर जाने वाली सीढी के आखिर में कई एक लालटेनें तो जल रही हैं; परन्तु इस समय वहाँ भी कोई पहरा देने वाला दिखाई नहीं पड़ता है। इस घाटपर निकलने वाला फाटक ख़ास नज़रबाग़ से मिला हुवा है; इसलिए इस जगह पहरे का तो बहुत बड़ा इन्तज़ाम रहता था मगर आज उस इन्तजाममें कुछ फ़र्क मालूम देरहा है। सब छोड़कर घाट में भी कई एक बजड़े इधर उधर घूम फिरकर चौकसी किया करते थे; परन्तु वे सब भी इस समय सन्नाटा खींचे अग़ल बग़ल बँधे पड़े हैं। वह नौजवान औरत चिन्तामें डूबी हुई तो मालूम पड़ती थी मगर उसकी चञ्चल बड़ीबड़ी आँखें; बड़ी चञ्चलता के साथ; शिरको उठाए विना ही गङ्गाजी की विशाल पाट पर इधर उधर दौड़ती जाती थी। इसको इस तरह किसीकी प्रतिक्षा किए हुए घन्टे भर से ज्यादः होगया; परन्तु न कोई आता ही दिखाई पड़ा न किसी के आने की आहटही मालूम हुई। यह बिलकूल मामूली पोशाक पहिने हुए थी; इसके बदन गहनेके मुहताज़ भी नहीं थे तब भी दो एक गहने पहने हुए दिखाई पड़ते थे। उसके बायें हाथ के सहारे

दोनो घुटनों के बीच में पड़ी हुई एक छोटीसी गठरी भी चाँद के उजाले में अच्छी तरह दिखाई पड़ रही थी। उसकी महीन रेशमी चदर शिरसे कुछ खसककर कन्धे पर पड़ी हुई थी इसलिए काले चिकने लम्बे लम्बे बाल मजेमें दिखाई पड़ रहे थे। उसने कुछ देर और ठहरनेके बाद बड़ी उदासी से गङ्गाजी की तरफ़ देखकर आपही आप कहा–"क्या वे लोग किसी बिपत्तिके मुंह में तो नहीं जा पड़े। निश्चित समय को बीते बहुत देर होगई; अब इससे ज्यादा मैं यहां ठहर नहीं सकती। मुझे राजकुमारी खोजती हुई इधर उधर फिर रही होगी"।

उसके मुंह से यह अन्तिम शब्द निकलते ही गङ्गाजी की तरफ़ से किसी के सीटी बजाने की आवाज आई। उसको सुनते ही उस औरत के मुंह से प्रसन्नता झलकने लगी; उसने उसका जवाब सीटीही से दिया। इसके बाद गङ्गाजीके बीचो बीच से एक विचित्र तरह की नीली रोशनी दिखाई पड़ी। उसको देखकर इस औरतने भी खड़ी हो अपनी बग़ल में से एक चोरलालटेन निकाल; उसकी रोशनी उसी ओर कर इधर उधर हिलाया। साथ ही वह नीली रोशनी बड़ी तेजी के साथ-इधरही आती हुई दिखाई देने लगी। देखते २ उस रोशनीके साथ ही साथ एक बहुत बड़ा बजड़ा घाटके कुछही दूर पर आता हुवा दिखाई पड़ा। यह औरत घाट के बीचोबीच की सीढ़ी पर खड़ी हुई। तबतक वह बजड़ा भी घाट किनारे आकर लग गया। साथ ही उस पर से एक रस्सीकी सीढ़ी फेंकी गई और काले लवादेसे अपने तमाम को बदन को ढँका हुवा एक आदमी उसमें से जल्दी जल्दी उतरकर इसके पास आपहुँचा। उसको देखते ही इस औरत ने पूछा "रामबाग़ में मौसिम अच्छा है ! उसने कहा—जहाँ हमेशा घनश्याम विराजते हैं वहाँ मौसिम

अच्छा न होगा? यह सुनते ही उस औरत ने कहा-फिर तुम्हें आने में इतनी देर क्यों लगी?

वह—मेरा बजड़ा एक मर्तबः इसी घाटपर से होकर चला गया। जाती बेर मैंने चारो तरफ़ देखकर सीटी भी दी। मगर न मैंने तुम्हें ही देखा न सीटीका जवाब ही पाया। इस लिए बजड़े को बीचोबीच लेजाकर लङ्गर डाल चुप चाप तुम्हारे आसरे से बैठा रहा। वहाँ मुझे बैठे बहुत देर होगयी तब भी तुम्हारी कोई आहट न मिली इसलिए मैंने उकता कर सीटी की आवाज़ दी, तुमने जवाब दिया; साथही लालटेनका इशारा भी किया। तब मैंने बजड़े को किनारे लगाने का हुक्म दिया। कहो; तुम तो घड़ीभर रात जाते जाते यहाँ आने को कहती थी; क्यों इतनी देर करके चली आई?

औरत—यह उलटी उलाहना तुम हम्हीं को सुनाते हो। खैर इन सब झगड़ों से क्या मतलब? (हाथकी गठरीको देती हुई) इस गठरीको लेकर तुम जल्दीसे गङ्गाजी के बीचो बीच लङ्गर डालकर खड़े हो जावो। मैं एक मर्तबः कुमारी से मिलकर; उनको किसी तरह का बहाना दे; एक और मतलब की चीज़ भी ले आती हूँ। यहाँ के पहरे वालों और मल्लाहों से तुम निश्चिन्त रहो; मैं सब को दबाकर चुकी हूँ।

वह—यह सब तो हुवा और होता भी रहेगा मगर जिस चीज़ की सबसे ज्यादः आवश्यकता थी वह तो अभी तक न आसकी?

औरत—तुम तो भुवन! कभी कभी लड़के की तरह बातें करने लग जातेहो। बरसों की मेहनत से तो मैं कुमारी की लौंडी शीतला के भेष में आने पाई हूँ; अब आते ही तुम्हें कुमार रणधीरसिंह की आवश्यकता भी होगई; इन्द्रदेव वाले तिलस्मकी

ताली भी निकाल कर अपने क़ब्जेमें करनेका उद्वेग हो आया। मैं इस तरह जल्दी का काम पसन्द नहीं करती। जल्दी करने वाले कभी सँभल कर अपने ठिकाने नहीं पहुँच सकते। तुम घबड़ाओ मत; धीरे धीरे मैं सब कुछ कर दिखाऊँगी।

भुवन—बिमला! मैं क्या बताऊँ; मेरा चित्त किसी तरह से भी स्थिर नहीं होता। उनकी उस मुहब्बत को भूलने की कोशिश करते रहने पर भी हृदयमें लगी हुई लौ दूर नहीं होती। आज तुम एक हफ्तेसे यहाँ हो;मगर मैंने यह हफ्ता किस तरह से काटा वह मेरी ही आत्मा जानती होगी। अच्छा यह तो बताओ; इस गठरी में क्या है?

बिमला—मैं सब कुछ बताऊँगी; तुम बजड़े पर जाकर घंटे भर तक मेरा इन्तज़ार तो करते रहो। मैं कुमारी कुसुम-लता से आज कुछ कह सुनकर रात भर के लिए छुट्टी माँग आती हूँ। उसके बाद निश्चिन्त होकर सब बातें सुनो; जैसी राय ठहरेगी उस मुताबिक़ काम करने के लिए कहूँगी। अब तुम क्षण भर भी यहाँ न ठहर; बजड़े पर चले जाओ, मैं अभी आई। इतना कह; बिमला तेजी के साथ सीढ़ियों पर चढ़ती हुई नज़रबाग़ के अन्दर घुस गई। भुवन भी गठड़ी को लिए हुए; धीरे धीरे उसी रस्सी की सीढ़ी के सहारे चढ़ बजड़े पर आगया। उसके उसपर आतेही मल्लाहों ने बजड़े को खोल किनारे से हटाया। भुवन कुछ देरतक छतही पर टहलता रहा, इसके बाद मल्लाहों को कुछ समझा कर वह नीचे उतर कमरे के भीतर चला गया। बजड़ा बहुत बड़ा तो नहीं था मगर तब भी उसके भीतरका कमरा कई एक सुन्दर सुन्दर पलङ्गोंसे सजा हुवा था। उसकी दिवारों में दोशाखी; तीशाखी दीवालगीर भी लगी हुई थी। बीचो बीच में एक छोटासा झाड़ भी लटक

रहा था। हरे; लाल; नीले; पीले शीशे लगी हुई खिड़कियां बाहर की झिलमिली से बन्द थी; इसलिए अन्दर की भरपूर रोशनी भी बाहर नहीं निकल पाती थी। हर एक पलङ्गके नीचे मखमली गद्देदार बिछौना बिछा हुआ था। उन सबों में कई एक खूबसूरत खूबसूरत कमसीन औरतें भी बैठी हुई थी। इस कमरे के उस तरफ़ एक और छोटा सा कमरा था; उस कमरे में बारह सिपाही हथियारों से लैस हो आपस में धीरे धीरे बातें कर रहे थे। भुवन के पहुँचतेही उस कमरे में जितनी औरतें बैठी हुई थी सबकी सब उठ खड़ी हुई और एकने उनमें से आगे बढ़कर पूछा–बिमला तो आई ही होगी; क्या हम लोगों का परिश्रम सुफल हुआ?

भुवन–(बैठकर) मेरी किस्मत अभी किनारे में आकर लगना नहीं चाहती। उसको मुझे हलाक़ानकर बहुतसी जगहों में ठोकर खिलाना बाँकी ही है।

वह–हम लोगों के रहते हुए आप नाहक़ही इस तरह परेशान होती फिरती हैं। इससे एक न एक दिन हम लोग बहुत बड़ा धोखा उठावेंगे।

भुवन—नहीं;-तरला! मैं आज से अब कभी न आऊँगी।

तरला–तो क्या हम लोगों को निराश ही होकर लौटना पड़ेगा? यह तो बताइये; बिमला क्या कहती थी; आपके हाथ में यह गठरी कैसी है?

भुवन–बिमला क्या कहती; बिमला के हाथमें तो मेरी तक़दीर नहीं है। इस गठरी के बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं;–न इसको खोल करही मैंने देखा है। अभी बिमला यहीं आने को कहती थी; अगर आगई तो वही बतावेगी। ज़रा सुनो तो, घाट की ओर से कौन सीटी दे रहा है। उसकी यह बातें सुन

तरला दौड़कर बाहर चली आई और साथही उसने भी सीटी बजाकर जवाब दिया। घाट की तरफ़ से दो एक बार किसी ने लालटेन का इशारा किया। मल्लाहों ने तेजी के साथ बजड़े को खेकर किनारे पहुँचाया। साथही बिमला कूदकर बजड़े में आगई और आतेही उसने उसको तेजी के साथ बहाव की ओर लेजाने को कहा। मल्लाहों ने उसको कुछ बीच धारे की तरफ़ हटा बहाव में छोड़कर जी जान से खेना शुरू किया। कुछ देर तक घाट की ओर देखने के बाद तरला को ले बिमला कमरे के अन्दर आई। अबकी उसका चेहरा घबराहटसे कुछ उतरा हुवा सा मालूम पड़ता था। उसको देखतेही भुवन ने कुछ चकित होकर कहा—कहो बिमला तुम्हारी यह हालत कैसी हो रही है?

बिमला—मैं इस समय बाल बाल बचकर आई हूँ।

भुवन—(चौंककर) क्यों क्यों; ऐसा क्यों? क्या तुम्हें कोई पहिचान गया?

बिमला—क़रीब क़रीब ऐसाही हुवा। मैं जब कुसुमलता के कमरे में पहुँची तो देखा; वह अकेले निश्चिन्त होकर खुर्राटा ले रही है। मैंने इस मौके को बहुत ही अच्छा समझा और बाहर भीतर सब देख भाल कर उसको उठा लानेके लिए मसहरी के पास पहुँची भी नहीं थी; इतनेमें उसी जगह रक्खा हुवा एक अलामारी का पल्ला ज़ोरसे खुला और उसके अन्दर से वही लाम्बे कदका शैतान निकल कहने लगा—ख़बरदार हाथ न लगाना। जाओ; इसी दम यहाँ से भाग जाओ; नहीं तो मैं उस दिन की तरह तुम सबों को बजड़ा समेत पकड़कर गड्डे-दार पहियों के नीचे डाल दूँगा"। उसकी यह बातें सुन; मेरा तो होश पैतरा हुवा; मैं कुछ जवाब दिए बिना ही लड़खड़ाती हुई निकल आई।

भुवन-अफसोस! वह शैतान क्यों मेरे पीछे पड़ा हुवा है?

तरला-(काँपकर) उसकी याद आते ही मुझे तो कँपकँपी पैदा होने लग जाती है।

बिमला—उससे कई बार भेंट हो चुकी; मगर अभी तक हम लोगों में से किसीने भी पहचान नहीं पाया है। इसके जवाब में एक दूसरी औरत कुछ कहाही चाहती थी इतने में एक सुन्दर; अधेड पुरुषने कमरे के अन्दर आकर कहा—मुझे पहिचानकर तुम लोग क्या करोगे; लो मैं आपहुँचा; पहिचानो, अगर न पहिचान सको तो जिसके उभाड़ने से तुम चली आई हो, जो इनदिनों तुम्हारे यहाँ आकर टिकी हुई है उसी स्वर्ण-कुमारी से जाकर पूछो?

बिमला-अरे! बापरे बाप! तुम यहाँ कैसे आपहुँचे?

वह-(हँसकर) मैं कैसे आपहुँचा;-यह सवाल तो आज मैं तुम्हारे ही मुंहसे सुनरहा है। मैं कहां नहीं पहुँचता; मुझे कहां की ख़बर नहीं रहती है। उड़ भी सकता हूँ; छिप भी सकता हूँ; डूब भी सकता हूँ; तैरभी सकता हूँ। इसी लिए तो लोग मुझे भूत; प्रेत; शैतान; जिन्न सब कुछ कहा करते हैं।

भुवन-(अपने को सँभालकर) तुम कुछ भी नहीं हो; एक ऐयार मात्र हो। अच्छा यह तो बतावो; तुम यहाँ किसके हुक्म से चले आए?

वह-मुझे भी किसी के हुक्मकी ज़रूरत पड़ती है। मैं योंही टहलते टहलते चला आया। मगर खूब समझ रक्खो भुवनेश्वरी! तुम अभी मर्दाना पोशाक में हो; तुम्हें जल्दी कोई पहिचान नहीं सकता; परन्तु मैं तुम्हारे बाप दादे तकको भी पह-चानता हूँ इसलिए बज़ड़े के बाहर ही से पहचान गया;-तुम इन सब झमेलों में मत पड़ो;-अगर मेरा कहना न मानकर

उलझ पड़ोगी तो अवश्य धोका खावोगी। तुम्हें पछताकर रोने के लिए भी जगह न मिलेगी।

भुवन–तुम बार बार इन्ही सब बातों को दोहरा कर मुझे क्यों पीछे हटाते हो?

वह--मैं तुम्हें कुछ भी न कहता; मगर क्या करूँ; कुछ दिनों तक तुम्हारे बापके साथ रहकर मैंने बहुत कुछ सुख उठाया है; इसीलिए तुम्हें सचेत करने के लिए आता रहता हूँ। अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। तुम रणधीरसिंह को चाहती हो तो चाहो; मगर उन्हें अपने मकान में लेजाकर किसी दूसरे के प्रेमको चूर चूर करने का उद्योग न करो?

भुवनेश्वरी—मैं यह सब कब कर रही हूँ?।

वह–तो फिर बिमला; क्यों शीतला के भेष में बैठी हुई धीरे धीरे उनके फ़ायदे की चीज़ों को चुरा चुराकर छिपाती थी?

बिमला–नहीं नहीं मैंने ऐसा कब किया?

वह—चल लुच्ची! दाई से कहीं पेट की बात छिपती है। आज क्या तूने कुमारी कुसुमलता को उड़ाकर अपने कब्जे में लाने का इरादा नहीं किया था?

भुवनेश्वरी–तो क्या मैं उन्हे लाकर मरवा डालती?

वह—नहीं मरवा डालती, मगर उसके बदले तुम रणधीरसिंह को अपने यहाँ बुलाकर तो फँसाती। मैं इन सब फ़ज़ूल की बातोंको नहीं चाहता। जाओ; अब हर्गिज़ महाराज नरेन्द्रसिंह के ख़ान्दानो में हाथ डालने का साहस न करो।

भुव–तुम मेरे ऊपर इस तरह की हुकूमत लड़ाने वाले कौन होते हो?

वह—मैं कोई नहीं होता हूँ मगर तब भी तुम ऐसी एक तुच्छ छोकड़ी के ऊपर सब कुछ कर सकता हूँ। मेरा कहा न

मानोगी तो मैं उस दिन की तरह इस बजड़े को इसीके नीचे डूबो दूँगा ।

भुव-अच्छी बात है; मैं तुम्हारी बातें मानती हूँ; मगर देखना; मेरी सहायता करने में पीछे न हटना; जा तरला ! मल्लाहों को बजड़ा फिराने के लिए कह आ ?

वह-(तरला से) ख़बरदार! यहाँ से उठी तो, मैं तुम सबोंकी चाल समझ चुका हूँ । तू सिपाही को होशियार करने जा रही है । ख़ैर, चली जा; कोई चिन्ता नहीं, मैं भी डरपोक की तरह क्यों इस समय उतावला हो उठा । तेरे इने गिने इन मामूली सिपाहियों से तो क्या तमाम राजभर के सिपाहियों से भी डरता नहीं । उठ; बुला; अगर तुझसे बुलाया न जाय तो मैं बुला देता हूँ । अच्छा; पहले उस गठड़ी को मेरे हवाले कर, मैं इसी के लिए यहाँ आया हूँ । मुझे सबसे ज्यादः इसी की । ज़रूरत है । उसकी यह बातें सुन बिमला तो सन्न होगई, तरला से उठा नहीं गया । भुवनेश्वरी कुछ कहाही चाहती थी इतने में उस शैतान के पीछे से एक काली शकल ने निकल उसके सामने रक्खी हुई उस गठड़ी को उठा;बिजली की तरह दौड़कर अपने को गङ्गाजी में डाल दिया । वह शैतान बड़ी लापरवाही से उनऔरतों के बीच में खड़ा हो; सबों को अपनी डपट से कँपा रहा था; इस समय उस गठड़ी को इस तरह देखते देखते अपने सामने से किसी दूसरे के हाथ में पड़ गायब होती हुई देख; अपने को सँभाल न सका । वह भी उसके कूदतेही बड़े धम्माके के साथ उसी के पीछे गङ्गाजी में कूद पड़ा । ये सब औरतें हक्की बक्की सी हो एक दूसरे का मुंह देखने लगीं ।

दूसरा बयान।

" छिपा था चाँद बादल में, वही अब सामने आया।
छिपा था भेद जिस जल में, उसी ने भाव दर्शाया" ॥

बैसाख का महीना; मध्यान्ह का समय; बालू से भरा हुवा स्थान; कोसों तक पेड़ों का नाम नहीं;–लूसे आगकी ज्वाला निकल रही है। तमाम संसार तप्त हो रहा है। आसमान में उड़नेवाले चिड़िया तक दिखाई नहीं पड़ते हैं। मैदान को देखतेही रोंगटा खड़ा हो उठता है; चलने के नाम से ही पसीना छूटने लगता है; ऐसे समय भागलपुर के पासही एक रेगिस्तान में एक सोलह सत्रह बरस का अत्यन्त सुन्दर नवयुवक; अपने घोड़े को सरपट फेंकता हुआ सीधे दक्षिण की तरफ जा रहा है। इसकी पोशाक राजसी ढङ्ग की है;–कमर से एक छोटी सी तलवार लटक रही है। घोड़ा भी बेशक़ीमत साज़ों से सजा हुआ है। यह नवयुवक बार बार अपनी बड़ी बड़ी चञ्चल आँखें चारो तरफ़ फिराकर किसी चीज़ को देखता भी जाता है। इसके कपड़े पसीने से लथपथ होगए हैं। मगर यह इस बात की कुछ भी परवाह नहीं करता है। इसकी धून इसको मज़बूर कर आगे की ओरही बढ़ा रही है। घोड़ा बहुतही अच्छे नसल का मालूम पड़ता है;–इसलिए वह भी पसीने के साथही साथ फेनको फेंकता हुआ अपने मालिक की तरह हवा होकर सामनेही की तरफ़ बढ़ रहा है। घंटे भर तक लगातार इसी तरह चलने के बाद इस नवयुवक को कुछ प्यास सी मालूम पड़ने लगी; बार बार रूमाल

से अपने सुन्दर मुखड़े को पोंछता हुआ इधर उधर चञ्चल दृष्टिसे देखन लगा। साथही घोड़े की भी कुछ चाल में कमी आगई। भगवान भास्कर अपनी प्रखर किरणों से आग बरसा रहे थे; उन्हे इन दोनो प्राणियों को इस तरह मैदान में चलते हुए देखकर भी कुछ तरस नहीं आता था।

प्यास के मारे युवक की जबान तालूसे लगने लगी; वह बार बार होंठ को भिगोने की कोशिश करने लगा। परन्तु कड़कड़ाती हुई धूप से धीरे धीरे थूक भी सूखती हुई जा रही थी इसलिए उससे भी वह मज़बूर होने लगा। पानी की खोज में उसने दूर तक अपनी नज़र दौड़ाकर देखा; मगर उस जन शून्य मैदान में उसकी लालसा पूरी होती हुई दिखाई न पड़ी। बदन से जितना पसीना निकलकर वह उसमें सराबोर होरहा था; अब तप्तज्वालाके कारण सूखकर नामके लिए भी नहीं रह गया था। घोड़े की जात अच्छी न होती तो अब तक कभी का बेदम होचुका होता मगर यह ज़रासी चाल को कम करने के सिवाय उसीतरह सरपट दौड़े हुए इस भयङ्कर मैदानको पार करने की कोशिश कर रहा था। पन्द्रह बीस मिनट और चलने के बाद प्यास के मारे विकल होकर इस नवयुवकने आपही आप कहा—अफ़सोस ! मैंने बहुत बड़ी गलती की; और नहीं तो पानीकी तूंबी तो अपने साथ लाना चाहिए था। अब प्यास को बर्दाश्त करने की ताकत मुझमें नहीं रह गई। दम निकला जा रहा है। कोसों चले आए; मगर उस गाँवका पता ही नहीं चलता। मैंने किसी से इस बारे में कहा भी नहीं;—वे सब मुझे न देखकर क्या कहते होंगे। अब तक कितनी खलबली मच चुकी होगी। वह ख़बर देने वाला आदमी भी फिर मुझसे मिला नहीं। मुझे और को तो नहीं मगर अपने दोस्त विक्रम-

सिंहको तो सचेत कर देना चाहिए था। अब क्या करूँ;-यहाँ आकर तो मैं बेढ़ब मुसीबत में फँसा। क्या लौट चलूं; नहीं, यह हो ही नहीं सकता। यह लम्बा चौड़ा मैदान इस समय इस घोड़े से वापस होकर पार होना ही असम्भव है। मगर वह गाँव क्यों नहीं दिखाई पड़ता ? क्या मुझे धोका तो नहीं दिया गया ? परन्तु मुझे इस तरह धोका देनेकी किसको आवश्यकता आपड़ी थी। शायद हमारे पुराने दुश्मन तो नहीं उभड़ पड़े;मगर यह ख्याल मेरा जमता ही नहीं। ओफ़! कितने ज़ोर की प्यास लगी हुई है; कलेजा जल रहा है। ऐसा समय तो मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी देखाही नहीं था।

युवक के मुंह से इतनी बातें निकलते ही; उसकी नज़रने कुछ दूर पर एक छोटा सा टीला देखा। मृगतृष्णाकी तरह उसको कुछ उम्मीद होआई। उसने अपने घोड़ेको बड़ी मुहब्बत से थपथपाकर कहा—बस; मेरे प्यारे जानवर! अब ज़रा सा और ज़ोर मारकर अपने को उस टीले तक पहुँचा"। मालूम होता था; घोड़ा उसकी बातें समझ लिया करता है। उसके इतना कहते ही उसने अपने दोनो कानोंको फड़फड़ाकर अपनी चाल को दूनीकर दिया। देखते देखते; मरुभूमि पीछे छूटी;-हरे भरे खेत दिखाई पड़ने लगे; साथ ही तरह तरह के पेड़ों से घिरा हुआ एक आलीशान मकान भी दिखाई पड़ा। उसको देखकर यह युवक कुछ सोचने भी न पाया था; इतने में घोड़े ने अपने को उसी मकान के नीचे पहुँचा दिया। उसके चारो तरफ़ बड़े बड़े साएदार पेड़ थे;—सायेके नीचे आतेही दोनोंकी तबीअत हरी होगई। ठन्डी ठन्डी हवाके झपेटोंसे बातकी बात में दोनो खिल उठे। मकान बहुत बड़ा था; परन्तु उसकी अवस्था अच्छी नहीं थी। मालूम होता था; बरसोंसे यहां किसी आदमी

की आवाजाही नहीं हुई है। उसकी चहार दीवारी बिलकूल बरसाती पानी से ज़मीन के बरोबर हो चुकी थी; । मकान भी कहीं कहीं से गिर रहा था। बग़ीचे की सूरत तो दिखाई पड़ती थी मगर इस समय भाड़ भंखाड़ से ढका रहने के कारण बगींचा कहनेको जी नहीं चाहता था। युवकने निगाह उठाकर देखा; सामने ही दो आमके पेड़ की आड़ में एक बहुत बड़ा दरवाज़ा दिखाई पड़ा। घोड़े से उतरकर यह उसकी लग़ाम थामेहुए वहाँ पहुँचा। पास ही में एक गहरा कूआँ भी नज़र आया, परन्तु पानी खींचनेके लिए रक्खा हुवा कोई डोल या रस्सा दिखाई नहीं पड़ा। युवकने घोड़े की जीनपोश खोल; उसको एक लम्बी बाग़डोर के सहारे एक पेड़ में बाँध; उसको बड़ी मुहब्बत से चुचकारकर कहा—नीलम! तूने आज अपने साथ-ही मेरी जानको भी बचाया; अब कोई हर्ज नहीं; यहाँ आदमी न भी होंगे तो मैं किसी तदवीरको लड़ाकर अपने साथही तेरी प्यास को भी बुझाऊँगा। उसकी यह बातें सुन वह जानदार घोड़ा हिनहिनाता हुवा टापों से जमीन को खोदने लगा।

युवक ने दरवाजे के पास आकर उसको खोलना चाहा; मगर वह किसी तरह से भी नहीं खुला। बाहर साँकल लटकी हुई थी; उसने उसको पकड़कर कई मर्तबः दरवाजे को खट-खटाया परन्तु किसीने भी आकर उसको नहीं खोला। अन्तको लाचार हो उसने जोर से पुकार कर कहा—इस मकान के भीतर कोई है; अगर है तो एक प्यासके मारे मरते हुए परदेशी की ख़बर लो? तब भी किसी ने जवाब नहीं दिया। उसने कई बार इसी तरह पुकार कर कहा। दरवाजे को पीटा;—साँकल को हिलाया;—मगर दरवाजे का खुलना तो दूर रहे किसी ने वहाँ होने की साँस तक भी न ली। युवक माथेपर हाथ रखकर

कुछ देर तक सोचता रहा, इसके बाद उसने ज़ोर से दरवाजे को खटखटा कर कहा—मैं अब तक किसी आदमी के आकर दरवाज़ा खोलने का इन्तज़ार कर रहा था; मगर वह बातें होने की सूरत दिखाई नहीं पड़ती। मैं उठाईगीरा नहीं हूँ;—न मैं किसी को सताने वाला ही हूँ अतएव मुझे किसी बात का संकोच भी नहीं है। मेरी जान पर आ बनी है; मैं इस समय सभ्यता को बग़ल में दाब कर चुपचाप नहीं रह सकता। मुझे अब इस मामूली कील; काँटों से जड़ा हुआ दरवाज़ा अन्दर आने से नहीं रोक सकता। मैंने कह दिया; मुझे कोई दोष लगाने का विचार न करें ?

युवक के इन बातों का प्रभाव तत्कालही दिखाई पड़ा। अन्दर से किसी कोमल कण्ठ ने; बड़ी मुलामियत के साथ कहा—बाबा ! तुम कौन हो;—इस तरह यहाँ आकर हम दुखियों को क्यों तङ्ग करते हो ? युवक ने कुछ लज्जित होकर कहा—माफ़ करना; मैं इस समय प्यास के मारे सभ्यता को छोड़ कर तकलीफ़ देने आरहा हूँ। यह न्याय की बात नहीं है, परन्तु मैं कोई चोर, डाँकू, लुटेरा भी नहीं हूँ। आप लोगों को मेरे हाथ से किसी तरह का कष्ट भी न पहुँचेगा। दरवाज़ा खोलकर एक गर्मी के मारे जलता हुआ परदेशी की जानको बचाइए। अन्दर से उसी सुरीली आवाज़ में जवाब मिला—हम लोगों को आपके हाथ से कष्ट न पहुँचने का कैसे विश्वास हो ? इस तरह बहुतों ने आजिज़ीके साथ दरवाज़ा खुलवाकर हम लोगों को सताया हैं। अतएव इस समय भी दरवाज़ा खोलने के लिए उठे हुए हाथ एकाएक रुके जाते हैं। युवक ने कुछ उत्तेजित होकर कहा—नहीं नहीं यह आप लोगों का भ्रम मात्र है। मैं उन दुष्टों

में से नहीं हूँ, मेरे जीवन में मेरे हाथों से एक चीउँटी तक को भी तकलीफ़ न पहूँची होगी। मैं सिवाय भलाई के बुराई की ओर कभी निगाह उठाकर भी नहीं देखता। इस समय भी मैं एक निःसहाय अबला की भलाई के लिए ही आरहा था, मगर अफ़सोस मुझे वहाँ तक पहुँचने का कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा है। मैं सच्चे क्षत्री का बच्चा हूँ,—हम लोगों को तलवार से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है। अतएव मैं इसी तलवार की क़सम खाकर कहता हूँ, मेरी ओर से सिवाय भलाई के आप लोगों की बुराई हर्गिज़ न होगी। इसकी यह बातें सुन अन्दर से आवाज़ आई–अच्छा तो आप इस तरह सौगन्द खा रहे हैं तो, ठहरिये, मैं दरवाजे को खोल देती हूँ।

युवक दरवाजे को छोड़कर हट गया। साथही भीतर से साँकल उतारने की आवाज आई। दरवाजे के दोनों पल्ले एक साथही खुलकर अन्दरकी तरफ़ चले गए। मगर युवकने किसी को नहीं देखा। सामने बहुत बड़ी एक चौक दिखाई पड़ती थी। वहाँ उजाला तो भरपूर था; मगर धूप नहीं थी। दरवाजे के भीतर ही एक कमरा था; उसको लाँघ कर चौक में जाना पड़ता था। सरसरी तौरपर देखने से उस मकान की जैसी हालत बाहर की तरफ़ से दिखलाई पड़ती थी वैसी भीतर की तरफ़ नहीं थी। सभी जगह साफ़ सुथरी थी। कूड़ा करकट का कहीं नाम निशान नहीं था। युवकने कुछ सोचकर दरवाजे के अन्दर पैर रक्खा; इस तरह अन्दर आते ही उसकी बाईं बग़ल से किसी औरत के चीखने की आवाज़ आई। उसने चौंककर देखा; पासही दो कमसीन औरत खड़ी ताजुब मिली हुई खुशी केसाथ इसी की तरफ़ देख रही थी। उन दोनों में से एकने बहुत लम्बी घूँघट काढ रक्खी थी; एकका मुंह खुला हुवा था।

जिसने अपने को घूँघट में छिपाया हुवा था; उसके बारे में तो इस समय कुछ नहीं कह सकते थे मगर जिसका मुँह खुला हुवा था; उसकी खूबसूरतीको देख युवककी नज़र चकरा गई। वह एक टक उसीकी तरफ़ देखता रह गया। उसको इस तरह अपनी ओर देखते देख उस औरतने मुस्कुराकरबड़ीनम्रताकेसाथ कहा-माफ़कीजियेगा;हम लोगोंने आपको कोई दूसरा ही समझ रक्खाथा;नहीं तो दरवाज़ा खोलनेमें इतना विलम्ब क्यों होता।अब आइए; ज़रा ऊपर चलकर आराम लेनेके बाद हाथ मुँह धो पानी पीजिएगा। उसकी यह बातें सुन युवक की नींद टूटी; उसने चौंककर कहा-नहीं नहीं अभी मैं ऊपर जाकर आराम न करूँगा मुझे सबसे पहले अपने घोड़े की ख़बर लेनी है। आप मेहरबानी करके एक घड़ा पानी दीजिए। उसकी ऐसी बातें सुन; उस औरत ने घूँघटवालीको धीरे से चुटकी काटकर मुस्कुराते हुए कहा—अब जाकर पानी क्यों नहीं लाती हो। यहाँ खड़े खड़े बातें सुनने का तुम्हे भी शौक़ चर्रा उठा।

उसने इस बातका कोई जवाब नहीं दिया; वह औरत हँस कर-अब काहे को किसी की सुनोगी। कहती हुई चौकको ओर चली गई। उसके जाते ही वह घूँघटवाली भी उसीके पीछे पीछे चली गई। युवक के दिल में तरह तरह का ख्याल पैदा हुवा। मगर उसने इन दोनोका बर्ताव देख किसी चरित्रहीनता की शंका को अपने पास तक आने नहीं दिया। उसने समझा; यह दोनो बड़े घरकी लड़की मालूम होतीहै; मुसीबत आधमकी होगी; इसलिए इस तरह इस मकान में छिपकर अपनेको दुष्टों से छिपा रही हैं। इनकी सुशीलता, लजीली आंखे, अच्छी बोल चाल को देख कोई भी इन्हे दुश्चरित्रा कहने का साहस नहीं कर सकता। इसके बाद उसने आपही आप कहा-वाह कैसी खूब-

सूरती है; मगर उस घूँघटवाली की सूरत तो देखने में न आई; वह भी ऐसी ही खूबसूरत होगी; परन्तु उसकी उमर इससे कुछ कम मालूम पड़ती है।यह औरत भी सोलह से ज्यादे की न होगी;—अच्छी है ।बहुत अच्छी है । इसके आगे भी न जाने वह युवक क्या २ बकना चाहता था मगर उसी समय वह औरत एक हाथ में बालटी, बगल में पानी से भरा हुवा घड़ा दावे चली आई । इस समय उसके साथ घूँघटवाली औरत नहीं थी। उसने आते ही इसकी ओर देखकर कहा—चलिए; मैं आपके साथ चल कर घोड़े को पानी पिला आती हूँ । उसकी बातें सुन युवकने कहा—नहीं नहीं आप इससे बढ़कर और क्यों कष्ट उठावेंगी । मैं अपने हाथों से उसे मलकर पानी पिला आता हूँ उसकी बातें सुन उस औरत ने कुछ हँसकर कहा—मुझे किसी तरह का कष्ट न होगा; चलिए-मैं चलती हूँ । आपके रहते अब हम लोगों को बाहर निकलने का भय भी नहीं है। युवक ने एक। नसुनी, उसके हाथ से बालटी और घड़ा लेकर बाहर आया । वह औरत भी उसके पीछे पीछे दरवाजे के बाहर तक आई । युवक ने घोड़े को मलकर पानी पिलाया; उस युवती ने भीतर से घाँस का एक गट्ठर लाकर घोड़े के आगे डाल दिया । इस काम से निवृत्त होकर युवक ने दरवाजे की ओर दृष्टि की; साथही किसी चन्द्र मुखी को उसके अन्दर से अपनी ओर देखते देखा । वह विधुवदनी भी इसको अपनी ओर देखते देख बिजली की तरह चमक कर गायब होगई ।

युवक का चित्त अत्न्त अधीर हो उठा, वह औरत दरवाजे के पासही खड़ी थी, यह भी धीरे धीरे कुछ सोचता बिचारता दरवाजे के पास आ खड़ा हुवा । उसके आते ही उस युवतीने कहा—कुमार ! अब आइये, मेरे साथ ऊपर चलकर नहा धो

कुछ जलपान कीजिये ? यहां से वहां आपको बड़ाही आराम मिलेगा ?

युवक- (चैाँककर) ऐं ? आपने मुझे कुमार क्यों कहा ? क्या आप मुझे पहचानती हैं ?

युवती-(हँसकर) मैं आपको न पहचानूँगी तो कौन पहचानेगा ? मगर आप मुझे आप आप कहकर क्यों बुलाते हैं ? मैं तो आपकी दासी की भी दासी हूँ।

युवक—नहीं नहीं ऐसा कहकर मुझे लज्जित न कीजिये ? मैं आपके एहसान से दबता जा रहा हूँ। परन्तु.........

युवती-कहिए कहिए; परन्तु क्या ?

युवक— (कुछ सोचकर) यही कि मैं ज्यादः देर यहाँ ठहर कर विश्राम नहीं ले सकता। आपकी दयासे मेरी और मेरे घोड़े की थकावट मिटगई, अब आप मुझे ज़रासा ठन्डा पानी पिलाकर वीरपुर का रास्ता बता दीजिए ? मैं एक अबला को बचाने के लिए इसी दम वहाँ जाता हूँ।

युवती—वह सब बातें मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। आप ऊपर तो चलिये, वीरपुर यहाँ से दूर नहीं है, मैं उसको बातकी बात में पहुँचने का रास्ता बता दूँगी।

युवक— (चौंक कर) आप वे सब बातें कैसे जानती हैं ?

युवती- (हँसकर) यह भी मैं ऊपरही चलकर बताऊँगी; आप डरिये मत, हम लोग आपका अनिष्ट नहीं कर सकेंगी। उसकी बातें सुन युवक भी हँसने लगा। युवती ने बड़े प्रेम से उसको अपने पीछे पीछे आनेके लिए कहकर दरवाजे के भीतर पैर रक्खा। युवक भी कुछ सोचता हुवा उसके पीछे पीछे चला गया। दोनो के अन्दर आतेही युवतीने दरवाजे को बन्द

कर दिया। तब तक युवक खड़ा हो चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। दरवाजे को बन्द करते ही वह युवती चौक में चली आई,-युवक भी साथही साथ चला आया; बाईं ओर एक बहुत बड़ी दालान थी, दोनो वहीं पहुँचे। युवक की निगाह इधर उधर घूमकर किसी को खोजने लगीं। युवती इस बात से बेखर न थी मगर उसने उस बातको एक तरह पर तरह दिया। दालानके एक कोनेमें ऊपर चढ़ने की सीढ़ी लगी हुई थीं। युवती के पीछे पीछे युवक भी उसी सीढ़ि से होता हुवा ऊपर की मञ्जिल में आ पहुँचा। वहाँ एक बहुत बड़ी सहन थी,-आमने सामने दो बड़ी बड़ी कोठरियाँ बनी हुई थी। दोनो के दरवाजे खुले हुए थे, युवक ने वहाँ के सामानों को एकही नज़र में देख लिया। दोनो कमरे अच्छे अच्छे सामानों से सजे हुए थे। युवती ने बायें कमरे की ओर दिखा कर कुछ कहने के लिए मुँह खोला भी न था इतने में नीचे से किसी औरत के चिल्लाने की आवाज़ आई। युवती ने जल्दी से झाँक कर देखा,—उसी घूँघटवाली औरत को चार बड़े बड़े भयङ्कर नकाबपोश बड़ी बेरहमी के साथ पकड़ कर घसीटते हुए दालान की तरफ़ लेजा रहे थे, वह बेवश हो रोती चिल्लाती थी। यह देखते ही उसने घबड़ाकर युवक की तरफ़ देख कहा-कुमार! जल्दी कीजिये,-आप जिसकी रक्षा करने के लिए इस तरह अकेले बीरपुर जारहे थे, उसी राजकुमारी सावित्री को दुष्ट लोग निर्दयिता से पकड़े लिए जा रहे हैं, बचाइए? उस बिचारी को उन सबों के हाथों से बचाइए? युवक यह सुनते ही तीर की तिरह नीचे उतर आया और उन लोगों के सामने पहुँच अपनी क़मर से तलवार को खींचता हुवा डपट कर कहनेलगा—ख़बरदार! पाजियों! एक अबला

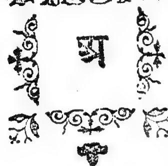
के ऊपर ज़बरदस्ती करके मेरे सामने से कहीं जा नहीं सकते, खड़े रहो, एक क़दम बढ़े नहीं, यह तलवार चीर फाड़ कर दो हिस्सा बनाके निकलेगी। उसकी यह डपट सुन चारो नक़ाबपोश सहम कर इसी की तरफ़ देखने लगे।



तीसरा बयान ।

घो रहो मुँह, लालसा को छोड दो।
हो रहो अब दूर, दिल भी तोड दो॥





अनुमान एक घण्टे के करीव दिन बाँकी है। लूका चलना बन्द होगया है। मालियों ने बगीचे में पानी छिड़कना शुरू करदिया। कुछ कुछ ठण्डी हवा चलने लग गई। ठीक ऐसे समय महाराज नरेन्द्रसिंह के नज़र बाग में; कुमारी कुसुमलता अपनी तीनो सखी सरस्वती; कालिन्दी और सत्यभामा के साथ ही साथ कई एक सहेलियों, लौड़ियों को लेकर टहल रही थीं। यहां पानी का छिड़काव पहले ही से होकर माली लोग हट चुके थे; इसलिए ये सब निश्चिन्त होकर हँसी दिल्गीकी वातें करते हुए अपना जी भी बहला रही थीं। कुछ देर टहलने के बाद सबके सब एक चमेली की भाड़ी के नीचे बना हुवा एक सङ्गमरमर की वहुत वड़ी चौकी के ऊपर आकर बैठ गए। उसी समय मालिनियों ने तरह तरहके गजरे लाकर कुमारी के सामने सजा दिया।कालिन्दीने उनमें से बेले का एक गजरा उठाकर कुमारीकी ओर देखती हुई कहा—क्या तुम्हें यह बेलेका गजरा पसन्द है?

सरस्वती—(हँसकर) इन्हें बेले की तो ख़बर ही नहीं; क्योंं पसन्द आवेगा?

कुमारी—तुम्हें ही बेले की खबर है; तुम्ही क्यों नहीं पसन्द करती?

सरस्वती-मेरे पसन्द करनेसे क्या तुम्हें भी पसन्द आवेगा?

कुमारी-(हँसकर)मैं देखूँगी;सोचूँगी;—जब तुम्हारे लायक समझूँगी तब पसन्द करूँगी। योंही|तुम्हारी जल्दबाजीसे कौन किसको गड्ढे में गिरा देता है।

सरस्वती—ठीक है; ठीक है। मैं समझ गई। मुझे निशाना बनाकर क्या करोगी? मैं भी बेले में बेले को लाकर बेले से तुम्हें न फँसाऊँ तो; बेले की क़सम कभी न खाऊँगी।

कुमारी—मैं भी तुम्हें बेले ही से छकाऊँगी।

कालिन्दी—मगर कुमारी! तुम इन सब बातों से क्यों इतनी छटकती हो?

सत्यभामा—हाँ, यही बात तो मैं भी पूछते २ रह गई थी?

कुमारी—बस, फिर तुम लोग मुझे तङ्ग करने के लिए बैठ गईं। जाओ, मैं अब किसी से भी न बोलूंगी।

सरस्वती—न बोलो, मगर रूठती काहे को हो। जिस दिन किसी के हृदय की हार बनोगी उसी दिन तुमसे बातें करूँगी खैर तुमने सुना आज बड़े कुमार शिकार के लिए दक्षिण की तरफ़ चले गए हैं।

कुमारी-हाँ यह तो मैंने भी सुना था, मगर क्या वे आज न आवेंगे।

सरस्वती—बड़ी महारानी तो ऐसाही कहती थी, परन्तु उनकी तबीअत का हाल वही जानें।

कुमारी-उनके साथ कौन २ गए हैं। उन्होने आज छोटे भैय्या को क्यों नहीं साथ लिया। इसके जवाब में सरस्वती कुछ कहा ही चाहती थी, इतने में एक लौंडी ने आकर कहा—जनानी ड्योढी के बाहर एक तस्वीर बेचने वाली बुढ़िया आई हुई है।

उसको कई मर्तबः जाने के लिए कहा गया मगर वह सरकार से भेंट किए बिना किसी तरह जाया ही नहीं चाहती है।

कालिन्दी—तो क्या वह वहीं बैठकर जान देगी ?

कुमारी—नहीं नहीं,—जब तक इस तरह मेरे लिए बैठी हुई है तो बुलाकर दो एक तस्वीर को लेना ही उचित है। उसको यहीं ले आवो, मैं उससे भेंट करूँगी। लौंडी चली गई, उसके जाने के बाद सरस्वतीने कहा—यह बुढ़िया अपने मन से तो आई नहीं है।

सत्य—(हँसकर) तो क्या तुम्हारे मन से आई है ?

सर—मेरे मनसे आती तो इस तरह ज़िद करके न बैठती।

कुमारी—ख़ैर किसी के मन से आई हो,—मुझे इन सब बहसों से क्या मतलब ? इतने ही में एक पचास पचपन्न बरस की बुढ़िया को साथ लिये हुए वही लौंडी आपहुँची। सरस्वती ने शिर से पैर तक उसको ग़ौर की निगाह से देखा। बुढ़िया ने आतेही कुमारी को बड़े अदब के साथ झुक कर सलाम किया। उन्होंने उसको अपने सामने ही बैठने का इशारा करके कहा—कहो बूढ़ा ! तुम कहाँ की रहने वाली हो ?

बुढ़िया—(खाँस कर) मैं आगरे की रहने वाली हूँ ! मेरे मालिक ने मुसौवरी में बहुत अच्छा नाम पैदा किया था। मगर अफसोस ! उन्होंने अबकी साल इस गर्मी का मुंह नहीं देखा,—मेरे घरका सहारा जाता रहा। साथही कई एक आफ़तों के आने से जो कुछ जमा पूँजी थी वह भी राही हो गई।

कालिन्दी—तुम तस्वीरें बेचने आई हो या दुखड़ा रोने आई हो ?

बुढ़िया—(बिगड़कर) तुम लोग भले आदमियों के साथ रहने लायक मालूम नहीं होती हो ?

कालिन्दी—तो क्या तुम रहने के लायक मालूम होती हो?

कुमारी--अब यहाँ झगड़े से क्या काम? उसको कहने दो;—मैं सुनती हूँ बूढ़ा तुम कहो? ये सब ऐसीही हैं; इन लोगों की बातों का ख्याल न करो?

बुढ़िया—जी हाँ सरकार! मैं भी तो ऐसाही कहती हूँ। मुझे परमात्मा ने लड़के लड़की का मुँह नहीं दिखाया था, इसलिए लाचार होकर अपनी जीविका के वास्ते अपने मालिक की बनाई हुई तस्वीरों को बड़े बड़े दरबारो में नज़र चढ़ा; वहाँ से मिले हुए इनामों को अपने काम में लाती हुई आती हूँ। मेरे पास अभी भी हज़ारों तस्वीरें बाँकी बची हुई हैं। (बग़ल से एक छोटी सी सन्दुक़ची को निकाल) इसमें आज मैं अपने डेरे से चलती बेर केवल नमूने के लिये बीस पचीस तस्वीरें ले आई हूँ।

कुमारी—तुमने यहाँ कहाँ डेरा डाला है?

बुढिया—मेरा यहाँ कोई जान पहचान का तो है नहीं,—फकत मैं सरकारका नाम सुनकर ही पटने से चली आई हूँ—इसलिए सीधे आकर यही महल्ला, क्या कहते हैं, अच्छा सा नाम रहा, बूढी हो गई,—दिमाग पहले की तरह काम नहीं करता। हाँ, याद आगया, मोहनगली वाली धर्मशाला में टिक गई। परन्तु क्या बतावें—यहाँ परदेशियों को तो बेतरह लूटते हैं।

सत्य—यहाँ परदेशियों को बेतरह लूटत हैं? क्या तुम हम लोगों को गाली देने आई हो?

बुढ़िया—गाली देने क्यों आऊँगी, सच्ची बातें कहने आई हूँ।

कालिन्दी—बेशक बेशक! तुझसे बढ़कर सच्ची बात कहने कौन आवेगा। भारतवर्ष में अपने न्याय का डङ्का बजाने वाले महाराज नरेन्द्रसिंह की राजधानी में लूटी जाने की बातें

कहने के लिए आई हो, इससे बढ़कर और सच्ची बातें क्या हो सकती है ?

बुढ़िया—यह सच का ज़माना नहीं है। दीए के तले क्या अँधेरा नहीं होता ?

कुमारी—ठीक है बूढा ? तुम अपनी तस्वीर को दिखावो ? मैं तुम्हारी उन सब लूट की नुकसानी को पूरी कर दूँगी। उनकी यह बात सुन बुढ़िया ने प्रसन्न हो अपनी सन्दूकची को खोल उनमें से कई एक तस्वीरों को निकाल कुमारी के सामने रख दिया। उन्होने एक एक को उठाकर देखा, सभी कहीं न कहीं के राजकुमारों की तस्वीरें थी। देखकर कुमारी ने पूछा—हाँ तो बूढा यह सब किस किस की तस्वीर है, तुम मुझे बताती तो जावो ?

बुढ़िया—(बताती हुई) यह बांसी के महाराज जयसिंह के लड़के नैनसिंह की तस्वीर है। यह वर्दवान के महाराज नवलकिशोर के लड़के कमलकिशोरकी तस्वीर है। यह विकानेर के महाराज भीमसिंह के लड़के रत्नसिंह की तस्वीर है। यह जोधपुर के महाराज अजयसिंह के लड़के अमरसिंह की तस्वीर है। यह नैपाल के महाराज शाल्वदेव के लड़के भूपदेव की तस्वीर है। यह बस्तर के महाराज रन्तिपाल के लड़के बीरध्वज की तस्वीर है। यह भरतपुर के महाराज बालकिशोर के लड़के नन्दकिशोर की तस्वीर है। यह चुनारगढ़ के महाराज इन्द्रजीतसिंह के लड़के प्रतापसिंह की तस्वीर है। यह गया के महाराज आनन्दसिंह के लड़के कमलसिंह की तस्वीर है। यह जयपुरके महाराज कर्णसिहके लड़के प्रभाकर सिंह की तस्वीर है। यह विलासपुर के महाराज............

कुमारी—(बात कर) बूढा ! मुझे तो इन सब तस्वीरों में से एक भी पसन्द न आई ?

सत्य—पसन्द आने वाली तस्वीरें क्यों ले आती, इसे तो उलहना देनी थी।

बुढ़िया—मैं सरकार को इनसे भी अच्छी अच्छी तस्वीरें दिखाती हूँ। (एक हाथी दांत पर बनी हुई तस्वीर को निकाल कर) यह देखिये, भूपाल के महाराज नारायणसिंह के लड़के चन्द्रसिंह की तस्वीर है।

कुमारी—हां; यह कुछ कुछ मुझे पसन्द आई ?

बुढ़िया—इससे बढ़कर एक और तस्वीर है। (बग़ल से एक हाथी दांत पर बनी हुई तस्वीर को निकाल कर) यह रांची के प्रतापी महाराज गोविन्ददेव के लड़के विजयकृष्ण की तस्वीर है। इस समय राजकुमारों में इनसे बढ़कर बहादुर, इनसे बढ़कर बुद्धिमान, इनसे बढकर खूबसूरत कोई भी नहीं है। आप खुदही देख रही हैं, देखिए कैसी गम्भीरता है, कैसा भाव है। कैसा रोब है। कैसी गठन है। कैसी मुसकुराहट है। इनके ऊपर लाखों सुन्दरियां मर रही हैं। जान दे रही हैं। परमात्मा ने जो कुछ भी दिया इन्ही को दिया है।

सर—मगर साथही इन्हे बालिश्त भर की नाक भी दियाहै।

कुमारी—हाँ ठीक है बूढा? और सब तो तुम्हारे कहने के लायक ही होंगे, मगर सच मुच में नाक तो इनकी बन्दूक के संगीन को भी लजाती है। अच्छे अच्छे तीरों को भी पाछे हटाती है।

कालिन्दी—जरासा यह नाक छुरी माँगती है।

सत्य—मैं अभी खञ्जर ही से न काम लूँ ?

कुमारी—(हँसकर) हाँ कुछ कम कर दिया जाय तो इनमें दूनी खूबसूरती आवे।

सर—(नाक को छीलती हुई) मैं अभी दुरुस्त किए देती हूँ।

बुढ़िया—(बिगड़ कर) तुम लोग बड़े ही वाहियात हो। लावो, मेरी तस्वीर मुझे वापस देदो। मैं यहाँ एक पैसेका सौदाभी न करूँगी, न अब एक पलही ठहरूँगी।

कुमारी—बूढ़ा ? तुम बिगड़ती क्यों हो, (एक लौंड़ी से) इसको पचास अशर्फी देदो ? मैं हाथी दाँत पर बनी हुई दोनो तस्वीर लेती हूँ। तुम खुश होकर जावो ?

बुढ़िया—नहीं सरकार ! अपनी चीज़ की अपने ही सामने ऐसी दुर्दशा होती देख किसको रञ्ज नहीं होता। आपके यहाँ क्या किसी बातकी क़दर नहीं है ?

कालिन्दी—क्यों नहीं, न होती तो इनकी यह बेक़दरी से उभड़ी हुई नाक को कदर के साथ क्यों छील दी जाती।

बुढ़िया—(लाल आखें बनाकर) यह सब तुम लोगों की शरारत, कुछ दिनों के बाद जरूर जान के गाहक बनजायंगे। तुम लोगों को तो न डरही है न शहुरही है।

सरस्वती—बेशक बेशक ! मैं भी यही सोचे हुए बैठी थी। मगर होश रखना बुढ़िया ! यहाँ तुम्हारी एक दाल गलनेकी नहीं ?

बुढ़िया—अच्छा, इसका बदला भी किसी न किसी दिन मिलेहीगा।

कालिन्दी—किसी दिन के लिए क्यों उठा रखती हो आज ही न लेलो ?

बुढ़िया—बस, अब मैं तुम लोगों से बोलना नहीं चाहती (तस्वीरों को बटोरकर) मश्ती में भूली हुई है, कहीं न कहीं ठोकर खाए बिना हर्गिज नहीं रहेगी। (कुमारीसे) अच्छा अब मैं जाती हूँ, मुझे आप लोगों ने बड़ी बेइज्ज़ती की ? इसके एवज़ में मैं भी किसी दिन कुछ दिखाके ही छोड़ूंगी।

सर—मगर तुम्हे वैसा करने के लिए आज यहां से जाने ही कौन देता है ?

बुढिया—मुझे रोकने वाले यहां कोई पैदा नहीं हुए हैं ? मैंने किसका क्या बिगाड़ा है जो मुझे यहां रोकेंगे ?

सर—कुछ बिगाड़ा नहीं है। बदमाश ! पाजी ! हरामजादी ! हम लोगों को दुधमुंही बच्ची समझकर छकाने आई है ?

बुढ़िया—(कमरमें छिपाहुवा खञ्जर निकालकर) बस बस, ज़बान सँभाल कर बातें करो, नहीं तो मैं यहीं ढ़ेर लगा दूँगी यह तुम्हारा राज, यह तुम्हारा बाग़, यह सब तुम्हारे आदमी हैं तो क्या हैं ?

सर—(ख़ञ्जर निकाल कर) अच्छा, आओ, देखें कितना तुम में साहस है ?

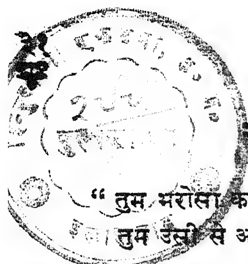
बुढ़िया—(खड़ी हो, एक छोटे से गोले को ज़मीन पर पटक कर) चल छोकड़ी ! हमसे लड़ने आई है। सब गए दिल्ली तो खाने चली बिल्ली। इसके जवाब में सरस्वती कुछ कहाही चाहती थी इतने में उस कुञ्जकी ओट से एक सुन्दर अधेड़ पुरुषने निकल कर कहा—ख़बरदार ! जहां की तहां खड़ी रह जावो,—भागने का नाम लिया तोइसी तमञ्चे से खोपड़ी उड़ा दूँगा (सरस्वती से) तुम जल्दी से सबको लखलखा सुंघादो, नहीं तो इस गोले से निकला हुवा धूंवा बात की बात में बेहोश कर देगा। उसकी यह बातें सुन बुढ़िया घबड़ा उठी, डर के मारे उसका बदन पीला पड़गया, उसने निराशा की निगाहसे उसकी तरफ देखती हुई कहा—मैं तुमसे भी डरने वाली नहीं हूँ। आवो, अगर हिम्मत हो तो बाहर निकलकर मुझसे लड़ो।

अधेड़—मैं तुझ ऐसे धोके बाज के साथ लड़कर अपनी

इज़्ज़त पर पानी नहीं फेर सकता ? अब सबसे पहले इस साड़ी को उतारकर, मर्द बनके मुंह धो लो ?

बुढ़िया—(कुछ पीछेकी ओर हटती हुई) नहीं नहीं, मुझे इस बात के लिये मज़बूर मत करो, मैं जान रहते यह काम हर्गिज न करूँगी। इतना कह वह सङ्गमरमर की चौकी पर से उछल बड़ी तेजी के साथ एक ओर को भाग गई। उसको इस तरह भागती देख वह अधेड़ भी उसके पीछे दौड़ा चल गया। वह बुढ़िया जनानी कपड़ेको उतारती हुई कई एक पेड़ों की चक्कर मारकर दीवार के ऊपर चढ़ घाटकी तरफ कूद पडी। वह अधेड़ भी उसके पीछे पीछे पहुँच, उछलकर दीवार के उस पार चला गया।





चौथा बयान।

"तुम भरोसा कर रहे हो, आज दिन जिसका यहाँ।
तुम उसी से अब फंसोगे, होशलो, जाते कहाँ ? ॥"

सुबह की सुफेदी निकले बहुत देर हो गई है परन्तु आसमान पर छाए हुए गहरे बादल के कारण अभी तक कहीं धूप दिखलाई नहीं पड़ रही है। पानी बरसने का ढंग देखकर चारो तरफ अबाबील मडरा रहे हैं। हवा बिलकूल सन्नाटा मारे हुए है। घण्टे भर भी दिन न आया होगा, ऊमस से सबकी तबीअत बेचैन हो रही है। ऐस समय मधुपुर के पास ही की एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर दो कमसीन औरतों को घोड़े पर सवार धीरे धीरे देवगढ़की ओर आती हुई देख रहे हैं। दोनो औरतोंमें से एक तो निहायतही खूबसूरत थी। उसका तमाम बदन सांचे में ढला-हुवा मालूम पड़ता था। दूसरी भी कम खूबसूरत नहीं थी; मगर उसके सामने उसकी खूबसूरती कुछ दबसी जाती थी। दोनो बीच बीच में बातें भी करते जाते थे। घन्टे भरतक रास्ता कुछ ऊबड़ खावड़ के साथ ही साथ पेचीला भी मिला, उसके तै करने के बाद दोनों एक मैदान में उतरे॥ अब रास्ता बिलकूल साफ था। दोनों बराबर होकर घोड़े को बढ़ाते हुए चलने लगे। हवा पेड़ के पत्ते तक को नहीं हिलाती थी, आसमान पर घिरे हुए बादलोंने और भी गहरा रंग बना लिया था। कुछ दूर आगे बढने के बाद इन दोनों को एक छोटा सा नाला पार करना पड़ा, उसको पार करने के बाद ये दोनों रास्ते को छोड़कर जंगल की तरफ चल पड़े।

आध कोश तक और बढ़ आने के बाद जो ज्यादः खूबसूरत थी उसने दूसरी की ओर देख बड़ी सुरीली आवाज़ में कहा—चन्दा ! मैं बहन के लिए जान तक देने को तैय्यार हूँ, परन्तु इस काम में जान लड़ाकर मुझे तो कुछ नतीजा अच्छा मालूम नहीं पड़ता । क्या तुम ठीक कह सकती हो, उनको इस बात के लिए किसने उभाड़ दिया ?

चन्द्रा—मैं इसके बारे में ठीक तो नहीं कह सकती मगर हमलोगों का जोर भी तो कुछ नहीं है । उनकी तबीअत में जब जैसी बातें आ उपजती है, वह कह बैठती हैं, उसको किसी तरह से भी पूरा करना हम लोगों का कर्तव्य रहता है। मैंने इसके बारे में कई मर्तबः उनको इशारे से समझाया भी, परन्तु वह मानने वाली जमीन पर पैदा होकर आई ही नहीं थी, काहे को समझने बैठती।

वह—मुझे कभी कभी इन सब बातों को सोचकर अफसोस होता है । मगर क्या किया जाय, उनकी मुहब्बत के आगे मैं कुछ शर उठा नहीं सकती । इन्हीं सब बातों को सुनकर गया के महाराज आनन्दसिंह की बड़ी महारानी लाड़लीदेवी ने बुलाकर उन्हे समझाया भी, मगर वे उसके बदले उनसे रञ्ज होकर चली आई ।

चन्द्रा—यह तो उनका कायदाही ठहरा । एक मर्तबः मैं उनकी चीठि लेकर दीनाजपुर गई थी, वहां महाराज वीरेन्द्रसिंह की छोटी महारानी कोकिला भी बहुत कुछ कहने लगी । मैंने सुना, परन्तु कुछ जवाब न देकर उन्हे उन सब बातों को सुना दिया । उन्हे तो उभड़ती हुई जवानी ने अन्धा बना रक्खा है, वे उन सब अच्छी बातों पर ध्यान देकर राह में आने के लिए क्यों अपने को तकलीफ देने चलती ।

वह—चारो तरफ इसी बातकी गौगौ होरही है। मुझे चुनारगढके महाराज इन्द्रजीतसिंह की लड़की कुमारी किरण-शशी भी यही बात कहती थी। उन्होने तो मुझे अपनी बहन के यहां से हटकर अपने यहां आने के लिए भी बहुत जोर दिया था, मगर मैं कैसे इन्हे छोड़ सकती थी? लाख हो, एक ही मां से पैदा हुई है।

चन्दा—इन्ही सब बातों से तो इनका हौसला भी बढ़ रहा है। आज दिन उनके शरपर कोई होता तो ये इस तरह मन-मानतेके रास्ते पर चलकर अपने को बदनामी के किनारे तक न पहुँचाती।

वह—जब से उनकी दोस्ती राजेश्वरी से हुई है, तब से यही हाल देख रही हूँ। गृहस्थी के घर में रण्डी घुसकर कहीं अच्छा बनाके चली है। मैंने तो इसके बारे में एक दिन उनको साफ सुना दिया, इसके लिए मुझसे दो तीन रोज बोला-चाली भी बन्द होगई, परन्तु उसके साथ बैठकर खाना पीना उन्होने बन्द नहीं किया।

चन्दा—खैर परमात्मा की मर्ज़ी को कौन टाल सकता है। जैसा करेगी वैसा फल भोगेगी; आप अपने को हर तरह से बचाए रहिएगा। वे तो अब किसी सूरत से भी सुधर नहीं सकती!?

वह—हां, इसका तो मुझे भी विस्वास होचला है। आज एक पखवारे के करीब होता है, हमारे दोनों बुड्ढे नाना दारोगा अमरसिंह और दारोगा इन्द्रदेव आए हुए थे। उन्होने उनको तरह तरह की बातें दिखाकर समझाया; उस समय तो वे समझ गईं,—कसम भी खायीं, परन्तु उन दोनों के जाते ही उन्होने फिर अपनी उठी हुई सीनरी को दूनी

करके खड़ी कर दिया। जाती वेर उन दोनों ने मुझे अलग बुलाकर कहा—देख, कादम्बिनी! तू अपनी बड़ी बहन अम्बालिका से हमेशा होशियार रह, यह अपनी चालको किसी तरह छोड़ेगी नहीं। तुझे भुलाव देकर किसी हालत से भी अपने रास्तेपर लाने न पावे। यदि जबर्दस्ती करने बैठेगी तो, तू राज के साथही साथ दौलत तककी मुहब्बत को छोड़ अपनी मझली बहन माधुरी की तरह गायब होने के लिए हम लोगों के पास आजाना? मैंने उस बात का कोई जवाब नहीं दिया, इसलिए वे दोनों कुछ विरक्त होकर चले गए। मैं कभी कभी तो रञ्जके मारे कुछ दूसरी ही बातें सोंचती हूँ, मगर फिर उनकी मुहब्बत मुझे एकाएक अलग होने नहीं देती।

चन्दा—हां; अच्छी याद आगई;—आपकी बहन माधुरी कहां चली गईं?

काद—यह मुझे क्या पता? वह तो मुझसे भी रञ्ज होकर चली गईं है। मैं उसके साथ बहुत बेजा काम कर बैठी हूँ; मुझे रह रह कर इसका बहुत बड़ा अफसोस होता है।

चन्दा—बेचारी वह मेरे ऊपर बड़ी मेहरबान थी।

काद—(आंखो में आंशू भरकर) वह किसके ऊपर मेहरबान नहीं थी; जाने दो; इन सब बातों के निकालने से मेरे कलेजे पर सख्त चोट पहुँचती है। अच्छा; अब हम लोगों को कितनी दूर और चलना पड़ेगा?

चन्दा—बस; अब आपहुँचे; वह सामने दिखाई देना वाला टीला ही तो हम लोगों का ठिकाना है।

काद—आज बदली के कारण बड़ी ऊमस है। इसलिए तबीयत किसी तरह से भी स्थिर नहीं होती है। जल्दी से

हम लोग वहां पहुँच जाते तो नहा धोकर कुछ हल्के होते। मगर स्वामीजी इस समय मिलेंगे ?

चन्दा—अगर वे न मिलेंगे तब भी उनके चेले और चेलियों में से कोई न कोई मिलही जायंगे। हम लोगों को आजही तो वापस लौटना है नहीं—इस समय उनसे भेंट न होगी तब भी जहां होंगे वहां से बुलवा भेजेंगे। इसके बाद उन दोनों में कोई बात चीत नहीं हुई। देखते देखते टीला आगया, दोनों एक बने हुए रास्ते से ऊपर चढ़ आए। सामने बहुत बड़ा एक मैदान दिखाई पड़ा। मैदान के बीचो बीच एक संगीन चहार दीवारी थी, उसके अन्दर एक बहुत बड़ी इमारत भी दिखाई पड़ती थी। ये दोनों उसके पास जा घूम-कर दूसरी तरफ चले आए। वहां भीतर जाने के लिए एक बहुत बड़ा फाटक बना हुवा था, उसके दोनों ओर लम्बी चौड़ी दालान भी बनी हुई थी। फाटक पर संगीन चढ़ाए एक सन्तरी पहरा दे रहा था। सौ सवा सौ सिपाही दोनों ओर के दालान में बैठे बन्दुकें साफ़ कर रहे थे। सामने ही एक लम्बा हौज भी बना हुआ था। उसके दोनों तरफ से मकान तक जाने की सड़क बनी हुई थी। इमारत की बनावट बहुतही अच्छी थी। वहां पहुँचतेही चन्दा ने अपने घोड़े को कुछ आगे बढ़ाकर सन्तरी से पूछा—स्वामीजी तो मकानही पर होंगे ?

सन्तरी—हां हैं तो सही मगर आप दोनों कहां से आरही हैं?

चन्दा—(कादम्बिनी को दिखाकर) आप मधुपुर की महारानी अम्बालिका की छोटी बहन कादम्बिनी हैं। मैं आपकी सखी हूँ। स्वामीजी से हमलोगों के आने की इत्तला करा दो ?

सन्तरी—(एक आदमी को बुलाकर) सुबेदार साहब ! मधुपुर की महारानी साहबा आई हैं, ज़रा सरकार को इत्तला कर दीजिये !

सुबेदार—(चन्दा से) क्या आप कोई संकेत भी बता सकती हैं ?

चन्दा—इसकी तो कोई आवश्यता नहीं थी खैर स्वामी-जी से कह देना। जंगल में मङ्गल होने का दिन अब निकटही आ रहा है।

सुबेदार—(अदब से सलाम करने के बाद) अब मुझे इत्तला करते रहने की कोई जरूरत नहीं, आप दोनों जा सकती हैं, जाइए ? उसकी यह बातें सुनते ही दोनों घोड़ा बढ़ाकर मकान के फाटक पर पहुँचे। वहां भी कई एक आदमी पहरे पर तैनात थे। इन दोनों को देखतेही उनमें से एक आदमी ने कुछ पूछ ताछ की, बाद इसके दोनों सन्मान के साथ घोड़े पर से उतार लिए गए। चन्दा ने कादम्बिनी का हाथ थाम-कर फाटक के अन्दर प्रवेश किया। सामने ही दालान थी, उसको पार करने के बाद ये दोनों एक बहुत बड़े कमरे में पहुँचे। वहां बहुत से गेरूवे कपड़े पहने हुये सुन्दर सुन्दर युवतियां बैठी हुई थी। इन दोनों को देखतेही उनमें से एक चञ्चल योगिनी ने बड़ी खुशी के साथ आगे बढ़ कर कहा—वाह ! बहन चन्दा ! आज तो महीनों के बाद यह चांदसा मुखड़ा दिखलाने के लिए आई ? कहो महारानी तो मजे में हैं न ! यह तुम्हारे साथ की चन्द्रवदनी कौन हैं ? ओह ! मेरी आंखों में भी धूल पड़ी, आइए छोटी महारानी साहेबा ! आज आपका दर्शन पाकर हम लोगों का भाग्य जाग उठा ! इसके बाद उसने कादम्बिनी को नमस्कार कर एक कुर्सीपर बैठाया।

चन्दाके साथही साथ यह भी कुर्सीपर बैठगई । कादम्बिनीको उसके ठाटों से कुछ ताजुब में डुबा दिया, वह छिपी निगाह से सबकी चालों को परखने लगी। चन्दा ने उस योगिनी की ओर देखकर कहा—बहन गायत्री! हमलोग बहुत ही थक गई हैं। अब स्वामीजी से भेंट करा दो तो निश्चिन्त होकर कुछ देर आराम लें ।

गायत्री—अभी तो स्वामीजी की पूजा समाप्त नहीं हुई है। तब तक आप लोग नहा धोकर कुछ जलपान कर लीजिए ? (एक योगिनी से) नन्दिनी . तू जाकर आपदोनों को सरकार-वाले हम्माम में नहला के बसन्ती कमरे में बैठा, मैं तब तक जल पानका सामान लिवाकर आती हूँ । नन्दिनी उठी, कादम्बिनी और चन्दा भी उठ खड़ी हुई । उसने उन दोनों को हम्माम में लेजाकर नहलाने के बाद, बदलने के लिये बना-रसी साड़ी दे; बसन्ती कमरे में लेजाकर बैठा दिया । वह कमरा बिलकुल पीले रंग का था, वहां की जितनी चीजें थी वह भी पीले ही रंग की थी । कहां तक बतावें इस समय ये दोनों भी पीले रंग की साड़ी ही पहिने हुए थो। कादम्बिनी को यह ठाट देख भीतर ही भीतर हंसी आई; उसने चन्दा की ओर भेद भरी निगाहों से देखा नन्दिनी चली गई, उसके जाने के बाद एक योगिनीसे केशरिया बर्फी उठाकर गायत्री आई। दोनों ने दो एक बर्फी खाकर जलपान किया। इसके बाद चन्दा ने कहा—अब और कितनी देर में स्वामीजी की पूजा समाप्त होगी ?

गायत्री—उन्हे खबर लग चुकी है, अब मैं समझती हूँ आते ही होंगे ?

चन्दा—इन दिनों स्वामीजी के चेलेमें से यहां कोई नहीं हैं?

गायत्री—हैं क्यों नहीं, मगर इस समय किसी आवश्यक कार्य से बाहर गए हुए हैं। भला यह तो बताओ, तुम किसको खोज रही हो?

चन्द्रा—मैं किसी को भी नहीं खोजती, आज उन लोगो को यहां न देखकर पूछने का जी चाहा, इसी लिए पूछ बैठी थी। क्या वे सब आज ही वापस आवेंगे?

गायत्री—(हँसकर) हां, आवेंगे तो, मगर यह तो बतावो हमारी छोटी महारानी साहेबाने अभीतक किसी भाग्यवान को अपना दिल दिया है या नहीं? इसके जवाब में चन्द्रा कुछ कहा ही चाहती थी; इतने में शिर से पैर तक; पीताम्बर धारण किए, खड़ाऊ चटचटाते मुँहसे "शिवोहं शिवोहं"-की ध्वनि जगाते हुए एक चालीस बरस के अधेड़ पुरुषने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। उनके पीछे पीछे; मोरछल; पङ्खा लिए हुए कई एक युवती योगिनी भी लगी हुई थी। उन्हे देखते ही इन तीनो ने शीघ्रता से उठ झुककर प्रणाम किया। अधेडने आशीर्वाद देने के बाद कुछ देर तक कादम्बनी को घूर कर देखा। उन्हें इस तरहसे देखते देख शरमके मारेकादम्बिनीकी आंखें झुकगई। अधेड़ एक कोंच पर जाके बैठगए;उनके पीछेमोरछलवाली योगिनी भी जा खड़ी हुई। इसके बाद उन्होने इन दोनो को बैठने का इशारा करने के बाद कहा—कहो, कादम्बिनी? तुम तो मजे में हो न?

काद—(हाथ जोड़कर) स्वामी जी की कृपा जब तक हम लोगों के ऊपर है तक तक किसी तरह का भी अनिष्ट नहीं होसकता?

स्वामी—(हँसकर) यह तो तुम मुझे बढ़ावा दे रही हो; अस्तु महारानी आम्बालिका ने कुछ कहला भेजा है?

काद—जी हां; उन्होने आपसे निवेदन किया है। परन्तु—

स्वामी—परन्तु क्या, कहो कहो रूकी क्यों ?

काद—उन्हे आप सँभालिए ? आपके सँभालने से सँभल जायगी।

स्वामी—ओह ! मैं समझ गया। तुम इसके लिए घबड़ाओ मत; मैं उस को सँभाल लूँगा। वह किसी तरह से भी इस कर्मक्षत्र में बिगड़ने न पावेगी। मगर तुम तो कादम्बिनी ! बिलकूल स्यानी हो आई; तुम्हारे लिए वह किसी योग्य वरकी क्यों नहीं फिक्र करती ?

काद—(शर्मा कर) पहले वे अपना हाथ तो किसो योग्य के हाथ में देकर अपने को सँभाल लें। मुझे इनसब बातों की जल्दी नहीं है।

स्वामी—तुम्हे जल्दी नहीं है परन्तु हम लोगोंको तो जल्दो है। अस्तु इसके विषय में फिर कभी बातें करगे। हां; तो अब की महारानीके दिलमें कौनसी अभिलाषाने जगह की है ?

काद—महाराज नरेन्द्रसिंह के बड़े लड़के कुमार रणधीर-सिंह को वे चाहने लगगई हैं। आज कई रोज से उन्होने खाना पीना भी छोड़ दिया है। किसी की बात तक भी नहीं सुनती है। चेहरा बिलकूल उतरा जारहा है। अब सिवाय आपके उनकी इस मुराद को पूरी करदेने वाले कोई भी दिखलाई नहीं पड़ते। उन्होने आती बेर बहुत कुछ प्रार्थना करके भेजा है। आप चाहें तो इसी समय रणधीरसिंह को उनके पास पहुँचा सकते हैं।

स्वामी—यह तो ठीक है, परन्तु नरेन्द्रसिंह के लड़के रणधीरसिंहको, कुछ कठिनता तो अवश्य पड़ेगी; तब भी कोई हर्ज नहीं, मैं महारानीके ऊपर बडाही प्रेमकरता हूँ, उसके लिए

यदि मेरी जानभी देनी पड़े तो देनेके लिए सदैव तय्यार रहता हूँ। तुम दो चार रोज यहीं रहो; मैं आज तो नहीं कल उस काम में हाथ डाल कर तीन रोज के बाद रणधीरसिंह को उसके पास पहुँचा दूँगा।

काद—फिर उनकी चाल में कोई फ़र्क़ न आने पावे?

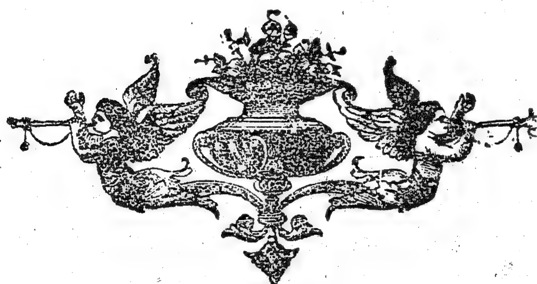
स्वामी—(हँसकर) तुम रह रहकर यही सब बातें क्यों दुहराती हो? क्या तुम्हे बसन्तही के दिन अच्छे लगते हैं। संसार में आदमी किसलिए पैदा होता है। नई नई बातों को देखने सुनने के लिए। यदि उसने उठती जवानी में किसी नई बात पर दिल लगाया तो कुछ बेजा नहीं किया। मैं उसको इसके अतिरिक्त किसी बुरी राहपर गिरकर बिगड़ने नहीं दूँगा। उनकी ऐसी बातें सुन कादम्बिनी कुछ चौंक उठी परन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया। गायत्री सामनेही खड़ी थी उसने कुछ व्यंग भाव से कहा—हमारी छोटी महारानी का विचार कुछ औरही है। ये नए फल के पेड़ तक को अपने बगीचे में लगाने नहीं देती?

स्वामी—मैं इसको किसी समय समझा दूँगा।

चन्दा—(हाथ जोड़कर) तो क्या आज हम लोग वापस नहीं जा सकेंगी?

स्वामी—विना तुम लोगोंके रहे वह काम होही नहीं सकता। मैं महारानी के पास यह ख़बर भेज दूँगा। यहां तुम लोगोंको किसी बात की तकलीफ़ भी न होने पावेगी। कल शाम को मैं यहां से चल दूँगा। जाती बेर तुम दोनों को भी मैं साथही लेता जाऊँगा। अच्छा अब खा पी कर आराम करो। मैं अभी इन्हीं सब बातों के विचार में दूसरी जगह जाकर अपने चेलों से सलाह लेता हूँ। इतना कह स्वामीजी उठकर बाहर चले गए। गायत्री ने इन दोनो को एक दूसरे कमरे में लेजाकर

भोजन कराया। दिन इधर उधर की बातचीत करते बीती। सन्ध्या को स्वामीजी फिर आये। उन्होने कादंबिनी को हर-तरह की तसल्ली देकर उसकी बहनको रणधीरसिंहसे मिलाने का वादा किया। कुछ देर तक इसी विषय में बात चीत करने के बाद स्वामी जी चले गये। उनके जातेही इन दोनो के सामने भोजन परोसा गया। कादंबिनी को रहरह कर किसी बात का सन्देह हो रहा था; उसका चित्त उसके ठिकाने नहीं था। इसलिए वह भोजन करने से इन्कार करने लगगई; मगर चन्दा के समझाने पर बड़ी मुश्किल से दोचार ग्रास खायी। इसके बाद कुछ देर तक उसके साथ धीरे धीरे बात चीत करके वह उसी जगह सोगयी। जब उसकी आँख खुली तो उसने अपने को हथकड़ी बेड़ी से जकडी हुई एक छोटीसी कोठरी में बन्द पाया।



❋ पाँचवाँ बयान ❋

" बड़े हैं बेरहम इनसे, बचावो बच के तुम आवो ।
यहाँ चलती नहीं हैं चाल अब मत जाल फैलावो" ॥

घडियाल ने पाँच का घण्टा बजाते ही पटने की एक गन्दी गली में से तीन आदमी निकल कर गंगाजी की तरफ आते हुए दिखलाई पड़े। उन तीनों में से एक का क़द कुछ ऊंचा था, दो कुछ नाटे क़द के थे। तीनों का बदन काले अबाओं से तो ढका ही था साथही चेहरा भी नक़ाब से छिपा हुआ था। इस लिए औरत मर्द की पहचान नहीं हो सकती थी। तीनों तेज़ी के साथ क़दम बढ़ाए हुए जा रहे थे। घाट किनारे पहुँचते ही एक ने अबा-से बाहर हाथ निकाल कर हिलाया। साथही किनारे में बँधे हुए बजड़े में से एक बहुत बड़े बजड़े के बाहर एक सिपाहियाने ठाट का आदमी ने निकल कर पूछा—क्या, हम लोगों का काम हो चुका? उसकी बातें सुन इनमें से एक नाटे क़द वाले ने कहा—"हां, एक तरह पर हुवा ही समझो, अब हम लोग बजड़े पर आवेंगे, मल्लाहों को बुलाकर उसको कुछ क़रीब ले आवो? इसकी आवाज़ बिलकूल किसी नाज़ुक औरतकीसी थी। इसकी बातें सुनते ही उसने मल्लाहों को बुलाकर बजड़े को बिलकूल किनारे लगवाया। ये तीनों एक एक करके बजड़े पर चले गए। इनके आतेही मल्लाहों ने बजड़े को खोल, बीचोबीच लाकर बहाव में छोड़ दिया। ये तीनो काले अबा वाले ने बजड़े के भीतर आते ही अपने अपने अबाको उतार कर खूंटियों में टाँगने के बाद नकाब

को भी उतार कर किनारे रख दिया। अब उनमें से छोटे क़द वाले दोनों साफ़, हसीन, कमसीन औरतें मालूम पड़ने लगीं। ऊँचे क़दवाला एक खूबसूरत नौजवान दिखलाई देने लगा। बजड़ा तेजी के साथ जा रहा था,—शहर को लांघते ही उन दो में से एक औरत ने दूसरी औरत की तरफ़ देख कर कहा—गुल्शन! अब तूँ रत्नपुर पहुँचतेही उतर कर सीधे महारानी के पास चली जा। मैं महम्मद को लेकर मुंगेर चली जाऊँगी।

गुल्शन—मगर इस तरह फकत इन्हे साथ लेकर तुम क्या करोगी?

मुहम्मद—बहुत कुछ कर गुज़रेंगे। तुम महारानी के पास चली जाओ। हम लोगों को पटने से भी तो बहुत कुछ मदद मिलेगी। वहाँ पहुँचने के बाद तुम भी तो मदद भेजोगी।

गुल्शन—मुंगेर जाकर तुम लोग कहां ठहरोगे?

मुहम्मद—ठहरने की जगह बहुत है। हम लोग कहीं न कहीं ठहर ही जायंगे। न हुवा इन की मामी के यहाँ ठहर जायंगे। क्यों बुलाकन! वह हम लोगों की बातें तो किसी से नहीं खोल देगी?

बुलाकन—नहीं नहीं वह बेचारी मुझे बहुत मानती है। जान रहते कभी भी किसी से हम लोगों का ज़िक्र न करेगी; बल्कि जहां तक होसकेगा हम लोगों को मदद देने से बाज भी न आवेगी।

गुल्शन—हां, यह तो मैं भी जानती हूँ। उसकी बड़ी बड़ी जगहों तक में पहुँच है। वह दो एक अच्छे अच्छे आदमियों को अपनी ओर मिला भी सकती है।

बुला—चाहे मिलावे चाहे न मिलावे; मैं तो अपने ही

भरोसे पर जा रही हूँ। कल शाम तक करीम आजायगा तो काम शुरू करने में ज़रा भी देर न लगाऊँगी। मगर याद रखना; वहां से मदद आने में किसी तरह भी देर होने न पावे?

गुलशन—मुझे इसका बहुत बड़ा ख्याल रहेगा। मैं वहां पहुँचतेही महारानीसे कह सुनकर बहुत जल्द मदद भेजूँगी।

मुहम्मद—क्या तुम उन लोगों के साथ न आवोगी?

गुलशन-अगर महारानी इज़ाज़त देंगी तो चली आवेंगी। नहीं तो मेरे बदले में चमेली को भेज देने के लिये ज़ोर दूंगी।

बुलाकन—हां, अगर तू आ न सकी तो उसे ज़रूर भेज देना।

मुहम्मद—वह अब तक दीनाजपुर पहुँच चुकी होगी या तुम्हारे आसरे वहां बैठी होगी?

गुलशन—यह भी तुम ठीक कहते हो। न होगा, दिल्ली-वाली को भेज दूँगा।

बुलाकन—जैसा महारानी कहें वैसा ही करना। मैं गिल्लन से मिल लूंगी, वह इन दिनों मुंगेर ही में है।

गुलशन—जयसिंह भी तो वहीं होंगे।

बुलाकन—उन्ही की क्या कहती हो। देवीसिंह, तारा-सिंह, लक्ष्मणसिंह और चन्द्रदेव भी वहीं हैं। मगर उन लोगों के किए कुछ भी नहीं हो सका है।

मुहम्मद—वे लोग ऐयार नहीं, मक्खीमार हैं। उतना बड़ा राज रहा, उतनी बड़ी दौलत रही, उतनी बड़ी फ़ौज रही, उतना बड़ा दबदबा रहा, उतने हलके दुश्मन रहे तब भी तो कुछ नहीं कर पाए, अब इस टूटपूंजिही हालत में उभड़ कर क्या कर लेंगे?

गुलशन—हाँ ठीक है, मगर अब तो उन्होंने अपने राज को

बहुत कुछ बढ़ाकर फौजों को जमा किया है। महाराज भूपाल-सिंह की ताक़त तो पहले से कुछ भी कम नहीं हुई है।

मुहम्मद—यह सब कहने भर की बात है। वह ज़माना अब उन लोगों का नहीं रह गया है।

बुलाकन—इससे हम लोगों को क्या मतलब? हम अपना काम देखेंगे या उनकी जमा पूँजी का हिसाब करने बैठेंगे। अगर वे सब मिल जायंगे तो, हमारे लिए नहीं तौभी अपने लिए तो हमारीवाली करेंगे। हमको तो किसी तरह से हो अपना काम निकालना है।

गुलशन—बेशक! उनसे मिलकर काम करने से हम लोगों को बहुत आसान पड़ेगा। वे लोग भी तो जी जान से दोनों कुमारों को उड़ाने की फ़िक्र में हैं।

मुहम्मद—उधर दीनाजपुर की तरफ़ भी कई एक ऐयार इसी ताक झांक में अपने को गरम तवे की मछली बनाए बैठे हुए हैं। मुझे तो न जाने क्यों उन लोगों का जिक्र आते ही आगसी लग जाती है।

बुला—(हँसकर) तुम अपने सामने किसी को भी कुछ नहीं समझते हो। अच्छा ठहर जावो, मैं तुम्हे अच्छी तरह छकाकर उल्लू बनाऊँगी।

मुह—(हँसकर) तुमने कब नहीं मुझे छकाया है। रोज़ ही तो छकाती आती हो। सच पूछो तो खुदा ने तुम्हारी भोली भाली सूरत ही छकाने वाली बना के भेजी है।

गुलशन—क्यों बहन! तुम मुहम्मद को क्यों छकाती फिरती हो?

बुला—यह इन्हीं से पूछो। अपना मिज़ाज़ अपने क़ायम में नहीं रख सकते, न वादे को ही पूरा करते हैं। फिर इनके

छकाने वाले न हों तो किसके हों। जिस दिन ये कुमार रण-धीरसिंह को महारानी के पास पहुँचावेंगे उसी दिन से इनका छकाना भी बन्द हो जायगा।

मुह—मैं इसके लिए कब पीछे हटा हूँ ?

बुला—पीछे न हटने से ही क्या होता है। दूसरे को कहते फिरते हो, मगर तुम भी तो कई मर्तबः मुंगेर आ चुके, तुमने क्या किया ? कहने के सामने काम बहुत वज़नी होता है। अच्छे अच्छे की ज़िन्दगी काम के पीछे बर्बाद हो चुकी है।

मुह—सब कुछ सही है। मगर जल्दी से तो कुछ होता नहीं है। मैंने मुंगेरमें जाकर और कुछ नहीं तो ऐसी नीव डाल दीहै जिससे इमारत खड़ी करने के लिए किसी को भी किसी तरह की दिक्क़त का सामना करना नहीं पड़ेगा।

बुला—अब यह भी दूर की बात नहीं हैं; मैं आज ही देख लूंगी। इसके जवाब में मुहम्मद कुछ कहाही चाहता था, इतने में उसी सिपाहिया ने ठाट के आदमी ने भीतर आकर कहा—दहने किनारे से कोई अपने निशान की झण्डी हिला रहा है। अगर हुक्म हो तो बजड़ा किनारे लगाया जाय।

मुह—हमारे आदमी यहां कौन आए होंगे ?

बुला—शायद कोई आए हों। किनारे लगा कर देखने में क्या हर्ज़ा है ?

मुह—हर्ज़ा तो कुछ नहीं है, मगर हम लोग इस समय बहुत कम हैं।

बुला—मैं ऐसी ऐसी बातों से डरती नहीं हूँ। अगर दुश्मन ही होंगे तो क्या कर लेवेंगे। एक मर्तबः मैं अपने खञ्जर से हज़ारोंके साथ भिड़ सकती हूँ। रहीम! तुम जावो, बजड़े को किनारे लगाकर वह झण्डी दिखाने वाला अगर अकेलाही हो

तो उसे यहीं बुला ले आवो ? उसकी ऐसी बातें सुन रहीम बाहर चला गया। गुलशन ने खिड़की से किनारे की तरफ़ देखकर कहा-आदमी तो एकही दिखलाई देता है।

बुला-यह ज़रूर हम लोगों का दोस्त है। अगर न होता तो हम लोगों के झण्डे का निशान दिखाकर क्यों बुलाता।

मुह-बेशक ! नहीं तो हम लोगों का पता उसे कैसे लगता ?

बुला-अब आई तुम्हारी समझ के बीच में ?

मुह-(हँसकर) बीच में तो नहीं आई मगर किनारे की ओर आरही है। इतना कहकर उसने भी खिड़की से देखा, इतने में बजड़ा किनारे पहुँच गया। उस जगह पक्की घाट तो नहीं मगर एक छोटी सी कच्ची घाट बनी हुई थी। मालूम होता था, क़रीब ही एक छोटा मोटा गाँव है। एक तीस पैंतिस बरस का रोबीला आदमी उसी घाटपर खड़े झण्डी को हिला रहा था, उसको देखते ही मुहम्मद ने कहा—वाह ! बहादुर ! तुम यहाँ कैसे आए ?

बहादुर—तुम लोग बजड़े से उतर आवो तो बताऊँ ?

मुह—तुमहीं क्यों नहीं बजड़े पर चले आते ?

बहा—यही ज़िद तो तुम्हें अभी अपनी जगह से ऊँची होने नहीं देती। मैं वहाँ आकर गप उड़ाने लगा रहूँगा तो जिस काम के लिए आए हैं वह काम किसके शिर में मडराने लगेगा। उन दोनों को भी उतरने के लिए कहो; तुम भी उतर आवो। अब बजड़े की सफर एक तरह पर खतम ही हुई समझो ? उसकी ऐसी बातें सुन इन तीनों ने आपस में कुछ इशारा किया, इसके बाद बहादुर की तरफ देखकर मुहम्मद ने कहा-तुम तो बड़ी जल्दी मचाते हो यार ! मगर यह तो बताओ ? तुम हवा पर आए हो या बादल पर ?

बहादुर—(हँस कर) बस, इसी के लिए उतरने में नाहीं नूहीं करते थे? तुम बजड़े पर आए होतो मैं भी हवा पर आया हूँ। यह सुन तीनों खुशी खुशी उतर पड़े। बहादुर ने रहीम को इशारे से बता कर-बजड़े को उस जगह ले जाने को कहा। मल्लाहों ने किनारे से बजड़ा हटाया। ये चारो घाट से ऊपर चले आए। सामने ही एक छोटा सा गाँव था, उसको देखते ही मुहम्मद ने चौंक कर कहा—ओह! क्या यही रतनपुर है?

बहादुर—हाँ, क्या तुम्हे मालूम नहीं था?

मुहम्मद—मालूम क्यों नहीं था, मैं कई मर्तबः यहां आ भी चुका हूँ। मगर गङ्गाजी तक न कभी आया था, न इस ओर से कभी देखा था, इसीलिए मैं धोके में आ गया?

बुला—तब तो गुलशन एक साथ मुंगेरही जाकर उतरती। ऐसी हालत में हम लोगों का काम भी अधूरा रह जाता?

मुहम्मद—हां, करीब करीब ऐसाही होता।

बुला—तुम अपने को तो बहुत कुछ लगाते हो मगर किसी काम के भी नहीं हो?

बहादुर—(हँसकर) वाकई में तुम्हारा कहना बहुत ही सच है।

मुह—अब जहां तक तुम लोगों से बने मुझे कहने में बाँकी उठा न रक्खो। मैं इसके बारे में चूं तक भी न करूँगा।

बुला—हां यह तो बताओ बहादुर हम लोगों को बजड़े परसे बुलाकर क्यों ले आए? क्या अब मुंगेर नहीं जाना होगा?

बहा—हां ऐसाही है। चलो, उस लाल झोपड़े के भीतर पहुँच कर सब कुछ तुम लोगों को बता दूँगा। इसके बाद उन चारों में कोई बात चीत नहीं हुई। देखते देखते झोपड़ा

आ पहुँचा। ये चारो उसके भीतर चले गए। वह जैसा बाहर से देखने में था वैसा अन्दर से नहीं था। दो तीन कोठरी थी, कोठरियों में कई एक पलङ्ग बिछे हुए थे। करीने से कुर्सी भी लगी हुई थी, बीचोबीच फर्श भी बिछा हुवा था। मेज के ऊपर तरह तरह के मेवे भी सजे हुए थे। सब से बड़ी कोठरी में लाकर बहादुर ने उन तीनों को कुर्सियों पर बैठा के कहा-आज शाम तक महारानी भी यहां आने वाली है।

गुलशन—क्यों क्यों, वे यहां क्यों आवेंगी?

बहादुर—जिस काम के लिए तुम जा रही हो वेही कुमार रणधीरसिंह अपने साथ कई एक ऐयारों को लेकर यहीं आने वाले हैं।

बुला—यह खबर उन्हें किसने पहुँचाई?

बहा—मैंने!

मुह—यह तुम्हें किससे पता लगा?

बहा—उन्हीं के ऐयार जयदेव से?

बुला—उसने तुम्हें कैसे बताया?

बहा—मैं खुदही जयदेव हूँ या और कोई हूँ। अब तुम लोग किसी तरह से भी इस झोपड़े के बाहर निकल नहीं सकते? उसकी यह बातें सुन तीनों चौंक उठे। बुलाकन ने अपनी कमर से खञ्जर खींच कहा—देखें, कैसे तुम हम लोगों को निकलने नहीं देते? मैं तुम्हारी चालों को देख पहले ही समझ चुकी थी, खैर कोई परवाह नहीं, जब तक यह खञ्जर इस हाथ में हैं तब तक मुझे किसी बात का डर नहीं है।

जयदेव—(हँसकर) मैं अगर ऐसे ऐसे खञ्जरों से डरता फिरता तो हर्गिज इस तरह की हिम्मत कर तुम लोगों को

न फँसाता ? अब सीधी तरह करीमवाली चीठि मेरे हवाले करो, नहीं तो तुम लोगों की किसी तरह खैर नहीं ? उसकी बातें सुन मुहम्मदने उसके ऊपर खञ्जर का वार किया। वह चौकन्ना था, इस लिए उसके वारको खाली दे, पैतरा बदल कर मुहम्मद की कलाई को पकड़ जोर से उमेठ दिया । वह इससे बर्दाश्त न कर सका, लड़खड़ाकर जमीन पर बैठ गया। उसके इस तरह बदहवाश हो बैठते ही गुलशन ने खञ्जर को खींच जयदेव की तरफ फेंका । वह उसको भी छटककर खाली दे गया । खञ्जर सीधे जाकर पेंदे तक दीवार में घुस गया। जयदेव ने उछल कर बुलाकन की भी कलाई पकड़ ली । वह जोर से चिल्लाकर छटपटाने लगी। साथ ही कई एक आदमियों ने अन्दर आकर जयदेव को पकड़ लिया।



छठवाँ बयान

" चाल चलते हौ मगर तुम चालको हौ चूकते।
फँस न जाए मश्त होकर अन्त्य कोकिल कूकते"

सन्ध्या होने में अब बहुत देर नहीं है। हवा दिनभर लूको बहाती हुई कुछ ठण्डी हो चली है। मधुपुर के राजमहलवाले नजरबागमें इस समय छोटे कुमार महेन्द्रसिंह को सादी पोशाक पहिरे अकेले टहलते हुए देख रहे हैं। यह मुंगेर से इतनी दूर क्यों आए, कैसे आए, कुछ मालूम नहीं। उनका चेहरा भी कुछ उदास मालूम दे रहा है, वे रह रह कर निगाह उठा महल की तरफ देखते हैं। कुछ देर तक इसी तरह इधर उधर चहलकदमी करने के बाद एक रवीश के किनारे लगा हुवा बेञ्च पर जाकर बैठ गए। उनके रङ्ग ढङ्ग से उन्हें यहाँ आनेका बड़ाही अफसोस मालूम देरहा था। उन्होंने उस जगह बैठते ही अपनी जेबसे एक कागज का टुकड़ा निकाल कर देखा; वे बहुत देर तक उसी को देखते रहते मगर वैसा होने नहीं पाया। पीछे से किसी नाजुक हसीन कमसीन औरत ने आकर अपने सुरीले गले से कहा—कुमार! आप क्यों इस तरह उदास रहा करते हैं?

कुमार—(चौंक कर उठते हुए) आइए आइए, आप कब से आकर मेरे पीछे इस तरह खड़ी हुई हैं। मुझे तो आपके आनेकी जरा भी आहट मालूम नहीं हुई।

सुन्दरी—(हँसकर) आपको क्यों आहट लगती? आप यहां थोड़े ही थे? जिसकी नजर में राँची की राजकुमारी

कनकलता की तस्वीर गुजर चुकी है, उसका दिल उसके साथ क्यों रहने लगता ?

कुमार—(शर्माकर) नहीं नहीं, यह आप मुझे झूठी उलाहना दे रही हैं। मैं कहाँ, राँची की राजकुमारी कहाँ, यह भी कोई कहने की बात है ?

सुन्दरी—(सामने के बेञ्च पर बैठकर) आपके सामने राँची की राजकुमारी तो क्या भारतबर्ष के बड़े बड़े राजे महाराजे की लड़कियाँ भी दासी कहलाने के लायक नहीं समझी जाती । वे सब फक़त इन दोनो पावों के रजको भी तरसा करती हैं।

कुमार-बस, इन्हीं सब बढ़ावेने तो मुझे यहां तक लाकर पटका। अब मुझे न रोकिए, जाने दीजिए। मैं बहुत मेहमान रह चुका। फिर कभी मौका मिला तो चला आऊँगा।

सुन्दरी—आप घबड़ाते क्यों हैं । अब तीन रोज और ठहर जाइए, तब तक आपके भाई साहब की खबर लेकर मेरी बहन आ जाती है, उसके बाद चले जाइएगा।

कुमार—इस तरह आपने मुझे एक हफ्ते से ज्यादह रोका। मेरे यहां लोग क्या कहते होंगे । वहाँ कैसी कुहराम मची होगी। आदमी लोग कहां कहां खोजने दौड़े होंगे। कम से कम हमारे ऐय्यारों में से तो किसी को यहां होने की खबर कर दिया होता।

सुन्दरी-मैंने आपके ऐयार बिक्रमसिंहको कहला भेजा है। वे आज तो नहीं कल तक आ जायँगे ?

कुमार--देखें, आज की रात भी तो वाह तेह घण्टे से ज्यादे की न होगी।

सुन्दरी--(मुस्कुराकर) जो आदमी कभी घर से बाहर

नहीं निकलता उसको इसी तरह की घबड़ाहट हुवा करती है।

कुमार--मैं कभी न घबड़ाता मगर इस समय भैय्या के भी न होने से चित्त दुःखी हो रहा है। उनके मुंगेर पहुँचने की खबर मिल जाती तो मैं आपके यहां रहकर महीनों मेहमानी का आनन्द उठाता।

सुन्दरी--यह तो आप बाहरी दिल से कह रहे हैं। अगर सचमुच में अन्तःकरण से कहते होते तो अपने भाई साहब के साथही साथ राजकुमारी कनकलता का नाम सुने बिना ही मेरे कहने से मेरी मेहमान्दारी के लिए यहां चले आते।

कुमार--मुझे अब की जाने देकर आजमा देखिये?

सुन्दरी--मैं खूब देख चुकी हूँ। मुझे अब कुछ देखना नहीं है। आपको उसी दिन जाने दूँगी जिस दिन आपके भाई साहब को राजी खुशी यहां देखूंगी।

कुमार—यह तो आप हमारे भैय्या के मिलने की राहको इस तरह से जान बूझकर और भी बन्द कर रही हैं। आप मुझे जाने दीजिए, मैं वादा करता हूँ, भैय्यासे मुलाकात होतेही उन्हे लेकर आपके पास आ जाऊँगा।

सुन्दरी—मैं भी तो इन्हीं सब कामों में अपने को लगा रही हूँ। मेरे ऐयार और ऐयारा भी इसी में परेशान हो रहे हैं। मेरे जितने नौकर चाकर हैं वे सब भी उन्हीं के लिए चिन्तित हैं।

कुमार—आपको हमारे भैय्या की इतनी फिक्र क्यों पड़ी हुई है?

सुन्दरी—(शर्माकर) आपको राजकुमारी कनकलता की क्यों इतनी चिन्ता समाई हुई है?

कुमार—(आश्चर्य के ढङ्ग से) तो क्या आप उनको चाहती हैं ?

सुन्दरी—तो क्या मैं उनकी दासी होने लायक नहीं हूँ ?

कुमार—(व्यङ्गसे) मधुपुरकी महारानी हमारे भैय्या की दासी होवे ? मुझे इस तरह मेहमान बनाकर क्यों मुझी से दिल्लगी करती हैं ? वे किसी तरह भी मञ्जूर नहीं करेंगे ? उन्हें विश्वास ही नहीं होगा ।

सुन्दरी-तो मैं भी ज़हर खाकर आत्महत्या कर डालूंगी। मुझे फिर बचकर इस दुनियां में रहने का कोई सरोकार भी नहीं रहेगा ?

कुमार—शायद आपने मुझे इसी खयाल से यहाँ, इस तरह पर रोक रक्खा भी होगा ?

सुन्दरी—तो क्या आपको यहाँ रहने में किसी बात की तकलीफ मालूम पड़ती है ।

कुमार—बाहरी आराम तो मुझे अपने घर से भी बढ़कर मिल रहा है परन्तु भीतर की चिन्ता मेरे सिवाय देखने वाला इस समय कोई भी नहीं है ? आपको जहां तक हो सकेगा मैं भैय्या से मिलाने का उद्योग करूंगा, मुझे जाने के लिए आज्ञा दीजिए, मैं यहां से............

सुन्दरी-(बात काट कर) मेरी प्रार्थना पर आप ज़रा भी ध्यान नहीं देते। कल तक ठहर जाइए, यदि आपके कोई आदमी न आए तो चले जाइएगा। तब तक राजकुमारी कनकलता का समाचार लेकर मेरी ऐयारा भी आ जायगी ।

कुमार—इन्ही सब आशे भरोसे के लच्छे ने तो मुझे इस तरह खींच रक्खा है। नहीं तो मैं कभी के निकल गया होता । अच्छा, यह तो बताइए ? आपके ऊपर कोई है या नहीं?

सुन्दरी—मेरे पिता का देहान्त हुए कई बरस होते हैं। मा रही वह भी सालभर के ऊपर हुवा, उन्ही का साथ देने के लिए चल बसीं। यह राज अब इसी के हाथ से चल रहा है, इसमें कुछ कहने करने वाले कोई नहीं हैं। हाँ, पिता के गुरु भाई स्वामी अच्युतानन्द कभी २ आकर इसकी देख रेख कर जाया करते हैं। मझली बहन माधुरी अपनी ननिहालही में रहती है। छोटी बहन कादम्बिनी मेरे साथ ही रह कर अपना समय बिता रही है। मेरी बुद्धि ने जहां तक काम किया इस राज्य को बढाने में कोई बात उठा नहीं रक्खी। अब समय ने मुझे लड़कपन की हद से बाहर निकाल जवानी के रास्ते पर चलाने बैठा या तो स्वामीजी ने मुझे किसी योग्य के हाथ को थाम कर संसार के कर्म मार्ग पर चलने की आज्ञा दी। मेरा दिल पहले ही से आपके भाई साहब की तस्वीरको देख, उनके गुणोंको सुन उनके हाथ बिक चुका था, इसलिए उन्हे मैंने अपने हृदय का हाल खोल लिख भेजा, परन्तु अफ़सोस! वह उनके हाथ में पहुँचने के पहले ही वे वहां से गायब हो गए? उन्हे किसी चुड़ैल ने बहँका कर बड़ी दूर पहुँचा दिया। यही सब बातें सुनकर मैंने आपको अकेले गंगा किनारे आने के लिए कहला भेजा था।

कुयार—(कुछ सोच कर) मुझे अब कुछ पूछना नहीं है। मैं सब कुछ समझ गया।

सुन्दरी-(हँसकर) अच्छा तो, अब चलिए महल के भीतर, यहां तो बिलकूल ही अँधेरा हो चला! आपकी सूरत भी मैं मुश्किल से पहचाननी हूँ। सवेरे आपने अच्छी तरह भोजन भी नहीं किया है। भूख लगी होगी, कुछ खाकर आराम कीजिए?



कुमार—नहीं नहीं मुझे भूख नहीं लगी है। लगती तो कभी का मैं कहकर खा पी चुका होता। इन दिनों गर्मी की वजह से खाने की ओर इच्छाही ही नहीं उठती।

सुन्दरी—तब भी चलिए, इस अँधेरे में शैतान की तरह गुप्प मार कर बैठने से फ़ायदा ही क्या है। कुमार उठ खड़े हुए, सुन्दरी ने उनका हाथ थामना चाहा मगर उन्होंने ऐसा करने नहीं दिया। वे मन ही मन कुछ सोचते हुए महल की तरफ बढ़े। उनके पीछे छमछम करती हुई वह सुन्दरी भी जाने लगी। दरवाजे के पासही कई एक लौंड़ी, हाथ में रोशनी, मोरछल, पंखा लिए हुए खड़ी थी। इन दोनों के वहां पहुँचते ही उन्होंने अदब के साथ रास्ते को छोड़ दिया। दर-वाजे पर भी कई तरह की रोशनी हो रही थी। ये दोनों धीरे धीरे अन्दर चले गए। कुमार को रहने के लिए एक बहुत ही सजा हुवा कमरा दिया गया था। महल के अन्दर आते ही वह सुन्दरी कुछ पीछे रह गई, कुमार सीधे अपने कमरे में चले आए। उनका चित्त इस समय बहुत ही व्यग्र हो रहा था। उन्होंने आते ही बिजली के सहारे चलने वाले पंखे के नीचे की कोंच में अपने को डाल दिया। उस सुन्दरी ने उनकी ख़िदमत में कई एक लौंडी को मुक़र्रर कर दिया था। उनमें से इस समय यहां सेवा के लिए चार लौंडी खड़ी थी। कुमार के कोंच पर बैठते ही दो लौड़ियों ने पैर दाबना शुरू किया। एक तश्तरी पर पान मसाला लेकर सामने खड़ी हुई, एक उनके पीठ की तरफ आकर नरम नरम हाथों से उनके बदन को सुहराने लगी। कुमार देर तक आंखें बन्द किए किसी गहरी चिन्ता में डूबे रहे। उनको अपने यहां रहने का भी होश नहीं हुवा। वे न जाने कब तक इसी हालत में पड़े

रहते मगर उनके कानमें किसी के-घबड़ाइए मत ? कहने की धीमी आवाज़ से, उन्हे चौंका दिया। उन्होंने आंख खोलकर पीछे की तरफ़ देखा;-एक लौंडी को कुछ झुककर अपने बदन पर हाथ फेरती हुई पाया। उसने इन्हे अपनी तरफ देखते देख बड़ी चालाकी से बांई आंख को दबाकर इशारा किया। वे समझ गए, उन्होंने उससे कहा—तुम तो बदन दबाने में बहुत ही निपुण मालूम देती हो; तुम्हारा नाम क्या है, तुम कब से यहां हो ?

वह—लौंड़ी का नाम नर्मदा है। मैं कबसे यहां रहने की बातें अर्ज करूँ,-महारानी की मेहरबानी जब से होने लगी है तब से यहीं हूँ। समय के हेर फेर को कोई नहीं जानता है। किसी समय मैं अपने को सब बातों में सरस्वती से भी बढ़ कर निपुण समझती थी किन्तु, वह बात अब नहीं है। सब तरह से बुद्धि कुण्ठित होती हुई मुझे धीरे धीरे नीचे गिरा रही है।

कुमार-(प्रसन्न होकर) नहीं नहीं तुम अपने को ऐसा क्यों समझती हो; समय ने अब ठिकाने तक पहुँचा दिया है; किसी न किसी तरह सहायता में चार हाथ होकर पहले के दर्जे में जा रहोगी। तुम्हारी महारानी बड़ी दयालु मालूम देती है। वह तुम्हे तुम्हारे गुणों से अज्ञान हो नीचे गिरन कदापि नहीं देगी ?

नर्मदा-यही तो एक भरोसा है। जब से आई हूँ तब से इस जीवन ने बहुत कुछ देख चुका, परन्तु गिरते हुए को उठते कभी नहीं देखा। देखें, अब इसके आगे कौन; क्या दिखाकर हमारी महारानी के साथही साथ इस लौंड़ीकी भी मुराद को पूरी करता है।

कुमार—तुम भरोसा रक्खो, ईश्वर तुम्हारे विनय पर अवश्य ध्यान देंगे ? इसके जवाब में वह कुछ कहाही चाहती थी इतने में महारानी अम्बालिका बड़ी मश्तानी चाल से झूमती हुई चली आई। इस समय वह कुछ नशे में भी चूर थी। उसको देखतेही कुमार ने अपने भावको छिपाकर हँसते हुए कहा—आइए; आइए; आप तो मुझे अकेले इस तरफ आने देकर कहाँ चली गई थी। अब मेरी तबीयत पहले से कुछ तसल्ली के हाथों में चली आई है। मैंने बहुत कुछ सोच कर देखा, आपके कहने के अनुसारही चलना मुझे उचित दिखाई पड़ा।

महारा—(एक कोंच पर बैठकर झोंक से) मैं झूठी बातें तो कभी किसी से कहती ही नहीं। आपकी तबीअत अभी और खुश होगी। (नर्मदा की तरफ़ देखकर) जा जमुना को तो बुला लेआ ? वह उसी दम बाहर चली गई; उसके जाने के बाद उसने कहा–मैं इस समय एक अच्छी खुशख़बरी सुनाने के लिए आई हूँ ?

कुमार—वह क्या, क्या भैय्या का पता लग गया ?

महरानी—जीहाँ, उसके साथही साथ आपकी मनमोहनी कनकलता का भी समाचार आगया। वह भी कल तक यहां आ पहुँचेगी।

कुमार—यह तो आपने बहुत ही अच्छी ख़बर सुनाई। मगर आपको कैसे पता चला ? इसका उत्तर वह कुछ दिया ही चाहती थी; इतने में एक युवती को लेकर नर्मदा आ पहुँची। उसको देखतेही उसने कहा—यही मेरी ऐयारा जमुना है। इसीने इस समय आकर यह सब खुश ख़बरी सुनाई है। (जमुना से) हां, यह तो बता; आपके बारे में राजकुमारी

कनकलता क्या कहती थी; उसका दिल कैसा है? वह अब कलतक हमलोगों से मिलेगी या नहीं?

जमुना—मैंने तो आपसे सब कुछ कह दिया है। वह रात दिन आपही की याद में बावली सी होकर रहती है। उसको ख़ाना पीना हराम हो रहा है। उसने आपके यहाँ होनेकी ख़बर सुनतेही मुझे बहुत कुछ पुरष्कार देकर कहा—मैं महारानी के पास अपनी सखी को लेकर अवश्य आऊंगी। मेरा दिल अब इन सब बातों को सुनकर अपने वशमें नहीं रहा; मैं किसी तरह भी रुक नहीं सकती; एक मर्तबः उनके पावों का दर्शन करके तब मरना भी पड़े तो मरूँगी," अतएव वह आज नहीं तो कल शाम तक अवश्य आजायगी। वास्तव में वह राज-कुमारी; राजकुमारी ही है। उसके बरोबर सुन्दरी तो मैंने इन आंखों से कभी देखाही नहीं है। उसको देखने वाले कभी भी अपने दिलको अपने काबू में नहीं रख सकते।

महारानी–सुना! ऐसी अलौकिक वस्तु आपके ऊपर इस तरह मर रही है। आपसे बढ़कर भाग्यवान भी इस दुनियां में कोई होंगे?

कुआर—हाँ तो भैय्या के बारे में इसने कौन सी खबर लाकर सुनाया?

जमुना—वे इनदिनों बिहार के महाराज गङ्गासिंह की लड़की नलिनी के कब्जे में पहुँचे हुए हैं। उनके कानों तक मैंने ख़बर पहुँचा कर अपने दोनो ऐयारों को उन्हे निकाल लानेकी ताक़ीद किया है। वे भी कल परसों तक यहाँ आ पहुँचेंगे। कुमार को उसकी बातों का विस्वास नहीं हुवा। मगर कुछ बोले नहीं। नर्मदा की तरफ देखकर कहा—मुझे जरा सा ठण्डा जल पिलावो? वह उनके आशय को समझ गई। चट-

पट बाहर जा पानी में कुछ दवा मिलाकर उनके पास ले आई। वह उसको बेखटके पी गए। इसके बाद महारानी ने उनको भोजन करने के लिए ज़ोर दिया। लाचार कुछ खाकर आराम करने के लिए पलङ्ग पर चले गए। महारानी भी उठकर अपने कमरे में चली गई। उसके जातेही कुमार ने नर्मदा की तरफ देखकर कहा—मैं अब सोना चाहता हूँ,तुम लोग दरवाज़ा बन्द करके चली जावो ? उनकी यह बातें सुन एक लौंड़ी ने चौंक कर शककी नज़र से नर्मदा की तरफ़ देखा। जबसे कुमार आए हैं तब से कभी ऐसा नहीं कहते थे;—यह आज नई बात कहते सुनकर उसके दिलमें खलबली मचगई। उसने कुछ कहने के लिए मुंह भी खोला था मगर कुछ सोचकर चुप रहगई। कुमार ने भी उसके भाव को ताड़ लिया; मगर कुछ बोले नहीं; नर्मदा की तरफ कुछ भेदभरी निगाहों से देख आंखें बन्द करली। नर्मदा ने उस लौंड़ी की तरफ़ देखकर धीरे से कहा—प्रेमा ! आज यह नया मामला कैसा हो रहा है ?

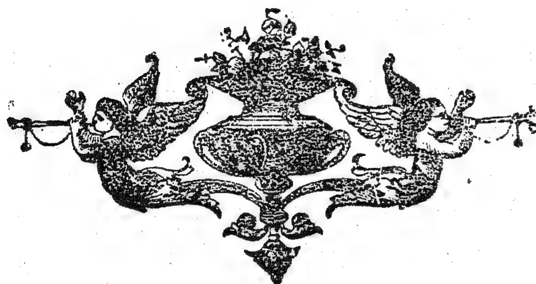
प्रेमा—मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं कह सकती।

नर्मदा-कुछ न कुछ दालमें काला ज़रूर है। अच्छा चलो; मैं तुम्हारे साथ एकान्त में कुछ बातें किया चाहती हूँ। प्रेमा ने फिर उसके ऊपर नज़र उठाकर गौर से देखा;—यह देख नर्मदा ने अपने चेहरे को बनाकर कहा—सखी ! तू बार बार मेरी ओर क्यों शककी निगाह से देखती है। अगर मुझे कोई दूसरी ही समझती है तो जांचकर देख ले ?

प्रेमा—(रुखाई) मैं तुम्हे क्यों जांचने जाऊंगी। तुमने तो अपनी बेवकूफी से अपने आप हमलोगों के सामने किसी नक़ली नर्मदा का होना ज़ाहर कर दिया।

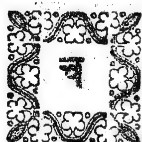
कुमार—(उठकर) क्या कहा; नकली नर्मदा ! तब तो

इसको जाने देना नहीं चाहिए। जावो; महारानी को बुला ले आवो; मैं उन्हीं के सामने इसकी जांच करूँगा? पाहुने के कमरे में भी इस तरह की चालबाज़ी का होना मुझे पहले मालूम नहीं था। प्रेमा तुरन्त चली गई; उसके जाते ही उन्होने नर्मदा की तरफ देखकर कुछ इशारा किया। वह उस बात को समझ गई। उसने उसी दम सामने की खड़ी दोनो लौंड़ियों को बेहोशी की बुकनी मार बेहोश किया; इसके बाद जल्दी २ से एकको नर्मदा की सूरत बना; आप उसकी सूरत बन उन दोनो के मुंह में ज़बान ऐंठने का अर्क डाल;—कुमार की तरफ़ देखकर धीरे से कहा;–आप भी बेहोश की तरह होकर लेट जाइए; मैं इनलोगों को अब खूब छकाती हूँ। कुमार उसके कहे मुताबिक़ हो पलङ्ग पर लेट गए। उनके लेटतेही नर्मदा भी ज़मीन पर बैठ झूमने लगी। साथही कई एक लौंड़ियों को साथ ले महारानी अम्बालिका आती हुई दिखलाई दियी।



सातवाँ बयान

" होशलो, फन्दा बना है, होश से अब कामलो।
होश को तुम छोड़कर बेहोश का मत नामलो ॥



चन्द्रमाकी खिलती हुई चांदनी अपने साथ जगतको भी खिला रही है। समय से खिली हुई कुमुदिनी गूञ्जते हुए भौंरेको अपना नया रस पिला रही है। बिरह में डूबी हुई कमलिनी हवाकी अठखेलियों से विरक्त हो शिर हिला रही है। खिलती हुई रजनी खिलखिला कर शौकीनों से हाथ मिला रही है। मुरझाए हुए प्राणियों को तर करदेने वाली ठण्डी हवा जिला रही है। समय ने रात को ज्यादे घड़ियों के ऊपर पहुँचाया नहीं है, आठ बजने में भी अभी कई मिनटों की देरी है; ऐसे समय हज़ारीबाग से गिरिडीह की तरफ़ जानेवाली सड़कपर एक नौजवान जोगन हाथ में वीणा लिए धीरे धीरे—"जगमें जगमग है जग ज्योति" कहती हुई आगेकी ओर बढ़ रही है। सन्नाटे की जगह में कोकिल विनिन्दित कण्ठ से निकली हुई सुरीली तान दूर दूर तक गूञ्जकर निर्जीव चीज़ों को भी लुभा रही है। उसको किसी बातकी परवाह नहीं है; किसी ओर निगाह उठाकर भी नहीं देखती है। अपनी चालमें कम बेसी भी पड़ने नहीं देती है। बड़े बड़े विशाल नयन कभी कभी तानों में मश्त हो पलकों के भीतर छिप जाते हैं; मगर देर तक वे भी उस हालत में रहना पसन्द नहीं करते हैं। इसी तरह चलते चलते घण्टे भरके बाद वह एक ऐसी जगह पर पहुँची; जहाँ एक छोटासा शिवजी का मन्दिर था; पास ही में एक चौड़ी; ऊंची जगत का

कूवाँ भी बना हुवा था। कूए के अगल बगल कई सायदार पेड़ भी लगे हुए थे। मन्दिर के सामने ही एक छोटी सी कुटी भी बनी हुई थी। चांदनी के उजाले में पाव भरकी दूरी पर एक बहुत बड़ा कस्वा भी दिखलाई पड़ता था।

अपनी उसी मश्तानी चाल से गाते गाते वह जोगन मन्दिर के सामने पहुँची; उसने पहले बड़ेही प्रेमसे झुकर प्रणाम किया; इसके बाद कुटी के पास आकर जोर से कहा—"जय शङ्कर; अब आया समय भयङ्कर; तुमही उठावो लङ्गर, तब तो काँटा गड़ेगा न कङ्कर"। इसके जवाब में कुटी का द्वार खोलता हुवा एक भयङ्कर जटा धारी बाबाजी ने आकर कहा—कहो देवी ! तुम इतनी जल्दी वहाँ से कैसे लौट आई; क्या वह काम तुम्हारा बनने में नहीं आया?

देवी-बना तो सही मगर मतलब भर बनने नहीं पाया। मैं एक मर्तबः फिर उस दुष्ट को सताकर अपना काम निकाला चाहती हूँ।

बाबा-वह तो आपही तड़प तड़प कर मरा चाहता है, उसको सताने से तुम्हारा क्या फ़ायदा निकलेगा। वह उससे ज्यादा बतलाही नहीं सकता है।

देवी-शंकर! तुम इतने दिनों तक हम लोगों के पास रह कर छँट चुके हो परन्तु अभी भी तुम्हारा सीधापन निकला नहीं है। वह बड़ा ही चालबाज़ है, उसको ऐसे वैसे आदमी पहिचान ही नहीं सकते। मालूम होता है तुम उसके फेर में आ चुके हो, अच्छा ज़रा उसको यहां तक तो लेआवो मैं अभी तुम्हारे सामने ठीक कर के दिखा देती हूँ।

शंकर-तुम सब मनुष्य नारी नहीं हो, दानवी हो। तुम लोग दया का नाम तक नहीं जानती। सोचो, और कुछ नहीं

तो परमात्मा का डर रक्खो ? किसी को अन्याय के साथ ज़बर्दस्ती सताना अच्छा नहीं होता।

देवी-(हँसकर) तुम डरपोक भी बहुत हो, कायरपन तो तुम में कूटकूट कर भरा हुवा है। यह राजनीति है; इसके सामने यदि कलेजे को नरम बनाकर काम लिया जायगा तो किसी तरह से भी अपने मतलब के किनारे तक पहुँचने की नौबत न आवेगी। यहाँ रहम से; फिसलाहट से; गिड़गिड़ाहट से; बहते हुए आँशुओं से; किसी को तकलीफ पहुँचने के विचारों से कोई सरोकार नहीं; जिस तरह से हो अपना काम निकालनाही इन्शाफ़ का मार्ग है। यही मार्ग अपने को ऊँचे दर्जे तक पहुँचाकर दुश्मन को नीचा भी दिखाता है। अच्छा, अब इस बहस से कोई फ़ायदा नहीं हैं; तुम उसको यहां ले आवो; मैं अपना काम करके इसी दम रवाना हो जाती हूँ। उसकी ऐसी बातें सुन कुछ जवाब दिए बिनाही शिर झुकाकर शंकर कुटी के अन्दर चला गया। उसके जातेही जोगन ने फिर अपनी तान अलापना शुरू कर दिया। चारो तरफ़ चाँदनाने उजाला कर रक्खा था; मगर जिस जगह वह खड़ी हो अपनी तान को आसमान में पहुँचाया चाहती थी उस जगह पेड़ की छाया के आ पड़ने से कुछ अँधेरा सा हो रहा था। शंकर को अन्दर गए अभी पाँच मिनट भी न हो पाई थी इतने में किसी ने इसके मोढ़े पर हाथ रक्खा। यह चौंक कर पीछेकी तरफ़ देखने लगी। साथही एक लाम्बे क़दका आदमी ने कुछ आगे बढ़कर कड़ाई के साथ कहा-देवी ! मैं बहुत देर से तुम्हारे पीछे पीछे लगा चला आ रहा हूँ; मगर तुमने मुझे देखा नहीं। अब इस जगह आकर तुम उस गरीब को सताने के लिए उतारु हो उठी हो; यह मैं हर्गिज करने न दूँगा।

इससे परिणाम में तुम्ही लोगों का नुक्सान होगा। चलो; मेरे साथ चलो; मैं तुम्हारे मतलब तक पहुँचने का अच्छा रास्ता बता दूँगा ?

देवी-(जलकर) यह तो तुम मेरे साथ खासी ज़बर्दस्ती करने के लिए आ धमके हो। माफ़ करो; मैं इस समय किसी तरह से भी तुम्हारे साथ कहीं नहीं चल सकती ?

वह-देखना; यही ज़िद तुम्हे पीछे अफ़सोस दिलाने वाली बन जायगी। मैं ग़रीबों को सताकर अपना मतलब साधने वाले में से नहीं हूँ। मुझे यह सब बातें जरा भी पसन्द नहीं है ! कुछ न हो; मैंने तुम्हारी मालिकिन की तरफ़ से बहुत कुछ पाया है, इस लिए तुम्हे अच्छाही रास्ता बताने के लिए इस तरह तकलीफ़ को उठाता हुआ यहां तक चला आया हूँ। सब से पहले तुम बिचारे गरीब को सताने के बदले छोड़कर इसके परिणाम में होने वाले अच्छे फल को चक्खो; नहीं तो जिस उद्देश्य से चली हो वह उद्देश्य तुम्हारा निस्फल के रूपमें परिणत होता हुआ तुम्हारी मालिकिन को कष्ट पहुँचाने का कारण बन जायगा।

देवी-तुम बार बार इस तरह हम लोगों के कामों में बाधा डालने के लिए क्यों उपस्थित हुवा करते हो ? डरने वाले डरें मगर मैं तुम से ज़रा भी नहीं डरती। क्या तुम ने वह सब पुरानी बातें एक दमही भूलदी; क्या वह समय तुम्हें ज़रा भी याद नहीं आता ?

वह-देखो देवी ! मैंने तुम्हे कोई बुरी राय नहीं दी है; न तुम्हारे अच्छे कामों में ही बाधा डाली है। मगर तिस परभी तुम इस तरह उछल कर मुझे धमकाना चाहती हो तो; धमकावो; मैं ऐसी छोटी छोटी धमकी से डरने वाला नहीं

हूँ। मैंने बड़े बड़े ज़माने को देखा है; बड़े बड़े बहादुरों को देखा है; बड़ी बड़ी शक्ति वाले को देखा है; उन सबों के सामने तुम्हे क्या समझता हूँ। आज तुमने मेरे दबे हुए गुस्से को भड़का दिया; तुम अब हर्गिज उस बेचारे को सताकर राजकुमारी कनकलता का अनिष्ट कर नहीं सकती। इसके जवाब में देवी कुछ कहा ही चाहती थी इतने में एक दुबले; पतले; अधेड़ को पकड़े हुए शंकर कुटी के अन्दर से बाहर निकल आया। उसको देखते ही देवी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा—शंकर! तुम इस हरामज़ादे को अभी उसी काल कोठरी में लेजाकर रक्खे रहो; मैं किसी समय फिर समझ लूँगी। देखना; यह इसे किसी तरह छुड़ाने न पावे?

शंकर—अब ऐसी आशा तो तुम मत रक्खो?

देवी-(कड़क कर) क्यों; क्या तुम भी इसके फेर में आ गए? मेरा कहना नहीं मानोगे? महारानी की शक्ति को तुम एक दमही भूल गए?

शंकर(हँस कर) चुल्हे में जाय तुम्हारी महरानी की शक्ति? भांड़ में जाय उससे डरने वाले? यहां तो समझती हो; शंकर ने अपनी लिवास बदल कर समझ से भी भयंकर रूप धारण कर रक्खा है। अब सीधी तरह तुम यहां से भाग जावो नहीं तो तुम्हारे हक़ में किसी तरह से भी अच्छा नहीं होगा।

देवी-(डर कर) तो क्या तुमने शंकर को मार डाला?

आदमी-हम लोग किसी को मारते नहीं; मारने वाले कायर होते हैं। तुम्हारा शंकर जीता जागता एक नई गौरी के पास बैठा हुवा गांजे का दम लगा रहा है। अब तुम इसी दम अपनी मालिकनी के पास जाकर समझा दो। वह

कुमारी कनकलता को फँसाने के फेर में न पड़े। उसकी मुहब्बत कुमार महेन्द्रसिंह के ऊपर ज्यादा हो तो उनसे प्रार्थना कर भेजे। जहाँ नरमी से काम निकालना होता है वहां कड़ाई से काम नहीं बनता। तुम लोग अपने हाथों ही से अपना बना बनाया खेल बिगाड़ा चाहती हो।

देवी–मैं सब कुछ समझ चुकी; मगर कुछ परवाह नहीं। तुम लोग किसी तरह भी इसको मेरे हाथों से निकाल कर नहीं लेजा सकते? मैं वही करके दिखाऊँगी; जिसके लिए यहां तक चली आई हूँ?

आदमी–(हँसकर) तुम अपने को अपने ही मकान के भीतर सैकड़ों सिपाहीयों के बीच में बैठी हुई समझ रही हो?

देवी–हां हां; मैं वही समझ रही हूँ। (सीटी बजाकर) क्या मुझे तुमने अकेली समझ लिया? मैं इस तरह बेवक़ूफ़ी के साथ कभी कहीं नहीं चलती? उसकी बातें सुन वह आदमी कुछ कहा ही चाहता था इतने में कई आदमियों के साथ अर्जुनसिंह और भरतसिंह के लड़के दिलीपसिंह ने आकर इन सबोंको घेर लिया। यह देखतेही उसने ललकारकर कहा–अर्जुन सिंह! देखिए; ये तीनों शैतान के बच्चे जाने न पावे? इन्ही के चङ्गुल में कुमारी सरोजिनी फँसी हुई हैं। यही सब कुमार अजयसिंहको भी भुलावा देकर फँसा आए हैं? यह सुनते ही अर्जुनसिंह और दिलीपसिंह ने उस आदमी को पकड़ लिया, बांक़ी के औरों ने शंकर को और उस कैदी को पकड़ लिया। इसके बाद देवी ने हँसती हुई उस आदमी की ओर देखकर कहा–क्यों बच्चू! अब तो तुमने मेरी ताक़तको देखी होगी?

आदमी–(अर्जुनसिंह से) मैं इस मौके पर कुछ भी नहीं बोल सकता; मगर देखिए, आपलोगों को यह सरासर धोका दे रही है?

अर्जुन—इसकी सबूत भी तो होनी चाहिए ?

देवी-आप इसकी बातों में हर्गिज़ न आइएगा ?

आदमी—मैं इस समय क्या बताऊं; जो चोर वही कोतवाल बना हुआ है। आप लोग मुझे पकड़ कर इसके फ़न्दे में पड़ अवश्य पछतावेंगे ?

देवी-धोखा देनेवाले मक्कार इसी तरह की बातें बनाया करते हैं। आप ज़रा दो चार नरम नरम कोड़े तो इसकी पीठ पर जमाके देखिए; यह किस तरह छिपी हुई बातों को धीरे धीरे उगलता जाता है। सब से बढ़कर तो इसने कुमार महेन्द्रसिंह को अपने मालिक के यहां कैद कर बेहिसाब तकलीफें पहुँचा रहा है।

दिलीप—ठीक कह रही हो; मुझे इसकी सूरत देखकर तुम्हारी बातों का विश्वास हो चला ?

आदमी—अफ़सोस ! मैं इस समय न लड़कर निकलने की कोशिश ही कर सकता हूँ, न आप लोगों को यकीन ही दिला सकता हूँ। यही हरामज़ादी कुमार महेन्द्रसिंह की प्रेमिनी कुमारी कनकलता को फँसाने के लिए बड़ी बड़ी तर्कीबें सोच कर यहां तक चली आई है। इसी की मालिकनी ही इन सब कार्रवाइयों की जड़ है। अगर आप लोग कुछ भी मेरी बातों में गौर करके इसको आजमाइएगा तो मुझे अपने विचार से भी बढकर सच्चा पाइएगा।

दिलीप-मैंने तो इसकी मालिकनी को आजमाया है। वह तुम्हारे सामने किसी तरह से भी झूटी नहीं ठहर सकती।

देवी-अब तुम अपनी चालाकी को अपने ही पास रहने दो?

अर्जुन-मैं इन सब बातों को कुछ भी नहीं जानता। तुम सीधी तरह कुमार अजयसिंह का और कुमारी सरोजिनी का

पता बतावो; नहीं तो तुम्हें बड़ी तकलीफ़ भोगनी पड़ेगी। तुम जीतेजी कभी स्वतन्त्रता की हवा खाने न पावोगे ?

आदमी–आप लोग इस तरह एक चुड़ैल के भुलावे में आ, अन्धे होकर क्यों बातें करते हैं? देखिए, यह सामने का खड़ा क़ैदी कुमारी कनकलता का आदमी है। यह उनकी चीठ्ठि ले कुमार महेन्द्रसिंह के पास जाकर आ रहा था, इतने में इन्ही सब चुड़ैलों ने मिलकर इसको गिरफ्तार किया। यह विचारा अपने को छुड़ा न सकने के कारण बड़ाही दुःखित हुवा। ये लोग इससे भी सन्तोष न हो, इसे तरह तरह की तकलीफें देकर कुमार महेन्द्रसिंह का हाल पूछने लगे। मगर इसने बड़ी बड़ी तकलीफों को पाते हुए भी उनका हाल कुछ नहीं बताया। इसी बीचमें इन्होंने कुमारी कनकलता को रांची के दरबार से निकालकर एक भयानक जगह पर पहुँचा दिया। मुझे इन सब बातों का पता परसों लगा। इसलिए शंकर को यहां से हटाकर उसकी जगह अपने आदमी को शंकर बनाकर रख छोड़ा। मैं आपही लोगों की भलाई में लगा हुवा आदमी हूँ। मुझे कुमार अजयसिंह और कुमारी सरोजिनी की भी बड़ी फिक्र लगी हुई है। मैंने उनकी तलाश के लिए कई एक आदमियों को भेजा भी है। आज कलमें पता लगा भी लावेंगे। मैं भी उसी कोशिशमें लगा हुवा हूँ। परन्तु इतना सब कुछ बताने पर भी आप लोगों को बिश्वास नहो तो, जो जीमें आवे सो कीजिए, मगर पीछे अपने हितैषियों के सामने झेंपने का संयोग न दीजिएगा ?

दिलीप—तुम बिलकूल झूटे हो। देवी की मालिकनी कुमार अजयसिंह और कुमारी सरोजिनी की खोज में जीज़ान से लगी हुई है। बेचारी ने मेरे सामने ही कई एक ऐयार और



ऐयारा को उनलोगों की तलाश में भेजा। साथही पता लगाने पर कई लाख पुरष्कार देने का वादा भी किया। वैसी नेक-चलन, सुशीला औरत तो मैंने बड़े बड़े के घरमें भी नहीं देखा है।

आदमी—(हँसकर) आप लोग तो अच्छे जालमें जकड़े जा रहे हैं, खैर कोई चिन्ता नहीं, मुझे गिरफ्तार करके जहां लेजाना चाहें वहां ले जाइए ? मैं इस बीच में अब कुछ भी न बोलूंगा ?

देवी–तुम्हें बोलने का मुँहही कहाँ है ? (दिलीपसिंह से) अच्छा, अब इन तीनों को अर्जुनसिंहजी के साथ दीनाजपुर भेजकर आप मेरे साथ जहां मैं कहती हूँ वहां चलिए ? मुझे कुमारी सरोजिनी के साथही साथ कुमार रणधीरसिंह का भी पता लग चुका है। यह सुनकर दोनों ऐयार बहुत ही प्रसन्न हुए, इसके बाद कुछ देर तक अलग जा आपस में सलाह कर, उन तीनों को अपने साथ ले अर्जुनसिंह एक तरफ चले गए। उनके जाने के बाद ये दोनों भी मन्दिर के बाईं ओर से एक छोटीसी पगडण्डी को पकड़कर चलने लगे। देवी की सूरत बड़ी ही लुभाने वाली थी। उसकी चञ्चल बड़ी बड़ी आंखें जिस तरफ फिरती थी वह अपना दिल मसोसकर रह जाता था। रात अब करीब करीब सबेरे के पास पहुँच चुकी थी। चलते चलते ये दोनों एक नालेके किनारे आपहुँचे, वहां आते ही दिलीपसिंहकी ओर देख देवीने कहा–अब कुछ देरके लिए हम लोगों को यहीं रहकर अपने आदमियों का इन्तज़ार देखना होगा ?

दिलीप—तब तक हम लोग अपने नित्य कृत्य से भी छुट्टी पा जायंगे।

देवी—हां, इन्ही सब सुभीताओं को सोचकर तो मैंने उन सबों को यहीं आने के लिए कहा था । अब सवेरा भी हो चला, आप नहा धोकर निश्चिन्त हो जाइए ?

दिलीप—तो क्या तुम न नहाओगी ?

देवी—(हँसकर) देवियों का शरीर ही पवित्र होता है इसलिए उन्हे नहाने की आवश्यकता नहीं पड़ती । गौ कभी नहाती नहीं मगर उन्हे सभी पूजते हैं । भैंस रात दिन पानी ही में पड़ा रहना चाहता है मगर उसे कोई पूछता भी नहीं ।

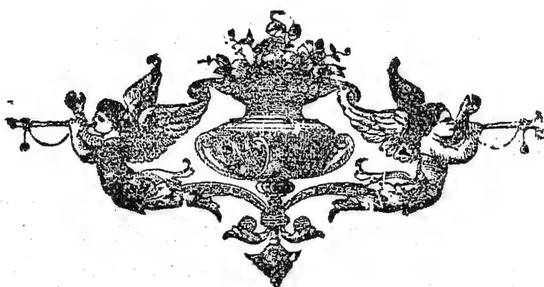
दिलीप—(हँसकर) तो क्या तुम अपने को गौ बनाकर मुझे भैंस बनाया चाहती हो । खैर यही सही, आवो, आज दोनों आदमी एक साथही मिलकर नहावें ?

देवी—मैं किसी गैर मर्द के साथ मिलकर कभी नहाती ही नहीं ।

दिलीप—तो तुम मुझे अपनाही समझ लेना ।

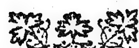
देवी—तो फिर चम्पा किसके नाम की माला जप कर रहेगी ? इसके जवाब में दिलीपसिंह हँसने लगे। देवी भी हँसने लगी। कुछ देर तक इसी तरह की बात चीत करने के बाद दोनों आदमी नित्य कृत्य से निवृत्त हो, एक अच्छी जगह देखकर बैठ गए। अब चारो ओर सुबह की सुफेदी फैल चुकी थी। अरुण की लालिमा बड़ी आनन्ददायिनी बन ज़मीन पर टपका चाहती थी। इस लुभावने समय को देख दोनो आदमी हँस हँस कर बातें कर रहे थे। उन दोनों को इस समय किसी बात की चिन्ता नहीं थी । बातें करते करते देवी ने अपने बटुए में से दो बीड़ा पान निकाल, बड़े प्रेम से एक बीड़ा दिलीपसिंह को दे एक बीड़ा आप खाई । इसके बाद फिर बात चीत होने लगी । पान को खाए अभी पाँच मिनट भी

। गुजरा था, दिलीपसिंह बेहोश होकर वहीं लेट गए। उन्हें
ोहोश होते देख देवी ने हँस कर कहा—क्या अच्छे उल्लुओं
को फँसाया, चालाकी इसी का नाम है, अब मैं जो चाहे सो
कर सकती हूँ" । इतने में पीछे से किसी ने आवाज दी—
तुम्हारी चालाकी तुम्ही तक रहे, मैं अभी कहीं मर नहीं गया
हूँ"। देवी ने चौंक कर पीछे देखा, जिस आदमी को चालाकी
से फँसाकर अर्जुनसिंह के हवाले किया था उसी आदमी को
सामने पाया । वह हक्की बक्की सी हो उसीकी ओर देखने
लगी। साथही विक्रमसिंह भी तेजी के साथ इसी तरफ आते
हुए दिखलाई पड़े ।



आठवाँ बयान

" मुहब्बत में शरम होती, न गम होता न डर होता।
मुहब्बत में मुहब्बत के नशे से बेखबर होता " ॥



गहरा नीला आसमान इस समय बादलों के नहोने से और भी नीला हो रहा है। भगवान भास्कर ने विश्राम का मार्ग पकड़ा है, चिड़िया चहचहाते हुए इधर उधर मँडरा रहे हैं। पसीने में उतना ज़ोर नहीं है। हवा ठण्डी ठण्डी बह रही है। ठीक ऐसे समय रामगढ़ के पासही की एक छोटी सी बस्ती के एक सुन्दर बग़ीचे में हम तीन हसीन कमसीन औरतों को बावली के किनारे बैठी धीरे धीरे आपस में बातें करती हुई देख रहे हैं। उन तीनों में से जो सब से छोटी है, वह निहायत ही खूबसूरत है। उसकी बड़ी बड़ी लोजभरी आंखें किसी भी दिल को अपने वश में रखने नहीं देती है। उसके गुलाबी गाल अपार सौन्दर्य के भण्डार हैं। नाक, कान, ललाट, हाथ; पांव; सभी एक से एक बने हुए हैं। उसका गोरापन देखकर चन्द्रमा को भूल जाना पड़ता है। उसकी पतली रेशमी बैगनी साड़ी उसके हुस्न को दूना कर रही है। बदन में पड़े हुए जड़ाऊ जेवर और भी गज़ब ढारहे हैं। उसकी उमर पन्द्रह सोलहसे ज्यादः की मालूम नहीं पड़ती है। इस समय इसका चेहरा कुछ उदास सा मालूम पड़ता है। उसके पासही बैठी हुई दोनों हसीनों की उमर भी क़रीब क़रीब सोलह सत्रह की दिखाई पड़ती है, ये उतनी खूबसूरत नहीं हैं तो भी सैकड़ों के बीच में पसन्द होने के लायक़ ही हैं। दोनों की पोशाक मामूली ही है, बदन

पर गहने भी मामूली ही पहने हुए हैं। बातें करते करते कुछ उदासी के साथ उस खूबसूरत नबेली ने अपनी बायीं तरफ़ बैठी हुई सुन्दरी से कहा—भामिनी ! मुझे रहरह कर इस मामले में कुछ शक मालूम पड़ रहा है; यदि ऐसा न होता तो वे अवश्य कुछ न कुछ कहला भेजते ?

भामिनी-हां; शक तो मुझे भी पड़ रहा है; मगर अब शंक करने से क्या हो सकता है। मैंने तो तुम्हे पहले ही कह दिया था; परन्तु तुम्हारी ज़िद्दके सामने कौन क्या कर सकता है। अब निकल आयी हो तो कुछ ख़ामोश रह कर देखती जाओ, परमात्मा यदि सच्चे प्रेमी को ठिकाने लगाकर आनन्द देते हों तो अवश्य ही देंगे।

सुन्दरी-यह तो तुम ठीक कहती हो परन्तु हृदय किसी तरह से भी नहीं मानता। (दूसरी से) क्यों कामिनी ! महारानी तुम्हे क्या कहती रही ?

कामिनी—वह क्या कहेगी, उसके तो ढंग ही निराले दिखाई पडते हैं। कल तक इस बग़ीचेके चारो तरफ एक भी पहरेदार दिखाई नहीं पड़ते थे; आज सैकड़ों सिपाहियों का पहरा पड़ा हुवा देख रही हूँ।

सुन्दरी—इस बात से तुम क्यों उन्हे दोष दे रही हो ? यह सब होना तो हमही लोगों के हक़ में अच्छा है।

कामिनी-ख़ाक अच्छा है; अगर ऐसी ही भोली भाली समझ लिए हुए न होती तो काहे को इस तरह धोक़े में फँस कर यहां तक चली आती ?

सुन्दरी—(हँसकर) तो उस समय तुम अपनी आसमान और पाताल को एक कर देने वाली समझ को लेकर कहाँ घाँस छीलने बैठी हुई थी ? जब परमात्मा के नाम से निकल

ही आए हैं तो किसी को दोष देना अच्छा नहीं होता। उसने जोर देकर हमलोगों को घसीटा नहीं; हमही लोगों ने जल्दी मचाकर उसका साथ दिया। अब ऐसी हालत में अपने को छोड़ तुम किस को क्या कहोगी, तुम्हारे पास कहने की जगह ही कहां है?

कामिनी-यह सब कुछ तो मैंने मान लिया; मगर कुमारी! तुम अच्छे अच्छे चालबाज़ों की चालाकी को बिलकूल ही नहीं समझती हो। मैंने आती मर्तबः तुम्हे क्या कहा था; मगर तुमने मेरी बातों पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। यह चुडैल की नानी अम्बालिका अपना मतलब साधने के लिए तुम से कितना प्रेम जाहिर करती है। परसों राजेश्वरी के साथ आकर कैसी कैसी बातें करती रही। मुझे तो सच पूछो, तुम्हारी मामी की लड़की होने से कुछ बातें कर लिया करती हूँ; नहीं तो उसकी सूरत तक देखना पसन्द नहीं है, न देखतीही।

भामिनी—अब इस तरह इनसे बिगड़ कर तो कुछ होना है नहीं। कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिससे छुटकारा मिलने के साथ ही साथ अपनी मुराद के किनारे तक भी पहुँच जायँ, कोई हम लोगों को बाधा डालने के लिए उँगली उठाकर सामने खड़ा भी न हो सके।

कामिनी—ऐसा तो करना ही होगा; मगर पत्थर के नीचे हाथ पड़ने पर समझ बूझकर बड़ी तदबीर के साथ धीरे से निकालना पड़ता है। हम लोग एक दम फँस गए हैं, फँसने में कोई भी शक नहीं है। यही सब ख्याल आ जाने पर मैं सबेरे अपने को बाहर पहुँचाने की गरज़ से फाटक तक चली गई थी; मगर मुझे बाहर निकने के लिए किसी ने भी नहीं दिया; मैं बड़ी नर्मी के साथ रोकी गई। वे सब बातें यहां

लौटते ही तुम लोगों को कह कर सचेत करना चाहती थी परन्तु उस हरामजादी की लौंड़ियां ने अब तक पीछा नहीं छोड़ा था; इसलिये कह नहीं सकी थी।

सुन्दरी-अब सचेत होने से होताही क्या है। तक़दीर जब पलटा खाती है तो इसी तरह से आदमियों को हलाक़ान किया करती है। ठीक कहती हो; मैंने बड़ी जल्दी की। अगर रमेश के आने तक ठहर जाती तो तुम्हारे कहने की तरह हर्गिज धोखा नहीं खाती। वह बिचारा मुंगेर से वापस आकर क्या कहता होगा। उन्होंने मेरी किश्मत का किस तरह फैसला किया होगा। मुझे अपने फँसने की तो उतनी चिन्ता नहीं है; मगर उनके जवाब को सुन न पाने की बड़ी ही चिन्ता लगी हुई है।

भामिनी-चिन्ता की तो बात ही आ पड़ी है। मगर अब घबड़ाने से तो कुछ हो नहीं सकता। (चौंककर) देखो; वह चुड़ैल फिर राजेश्वरी को लेकर आ पहुँची। अब उससे खूब सँभालकर बातें करना; कहीं वह हम लोगों के भाव को ताड़ न जाय। मैंने इसी समय एक तदवीर सोची है, अगर वह लग गई तो हम लोगों का बेड़ा पार हो जायगा। उसने यह आख़िरी बात जोश में आकर ज़रा ज़ोर से कहा। इतने ही में एक अत्यन्त ही सुन्दर औरत को लेकर महारानी अंबालिका भी आ पहुँची। उसने आते ही भामिनी की तरफ देखकर कहा—कैसा बेड़ा पार हो जायगा?

भामिनी—कुछ नहीं, योंही बैठे बैठे तबीअत घबड़ा रही थी इसलिए कुमारी से बेदान्त की बातें निकाल कर समझाने लगी। उसी में मैंने चित्त को स्थिर करके, अद्वैत ब्रह्म में रात-

दिन लौ लगाए रहने से अपार संसार सागर में तैरता हुवा अपना बेड़ा पार हो जायगा कहा था।

अंबा—तुम्हारा कहना ठीक है। परन्तु इस उभड़ती हुई जवानी में चित्त स्थिर कहां से होता है। इसको जितना भी रोकने की कोशिश करो उतना ही छटकता जाता है।

राजे—मैं आपके इस मत से सम्मत नहीं हूँ। यह सब पुराने पुराने खूँचड़ ब्राह्मणों ने जंगली जातियों को अपने बश में करने के लिए लिखी हुई बातें हैं। वे लोग इसी तरह के बिषयों को समझाकर अपने को पूजाते फिरते थे। उनका सिद्धान्त ही अपने को बड़ा बनाने के ऊपर था। वही बातें अब होते होते शास्त्र के नाम से कही जाने लग गई है। मैं तो रात दिन आनन्दके रंगमें डूबकर अपने चाहतेके संग में रहना ही अद्वैत ब्रह्म में मिलकर अपना बेड़ापार होना समझती हूँ।

अंबा—(हँसकर) तुम्हारा बिचार ही अनोखा है।

भामिनी—इनको सिवाय रंग रेलियों के और कुछ भाता ही नहीं है।

कामिनी—उसके सिवाय इन्होंने और कुछ पाठ पढ़ा भी नहीं है।

राजे—मैं झूठी झूठी बातों से भरी हुई किताबों को कभी हाथ से छूती भी नहीं। आदमी को वही चीज़ लेना चाहिए, जिसमें रसके साथ ही साथ आनन्द भी आता हो।

अम्बा—बेशक बेशक! इस बात को तो मैंने भी माना।

कामिनी—जब आप मान रही हैं तो हम लोगों ने भी माना; मगर यह तो बताइए, आप फिर कष्ट उठाकर यहां क्यों चली आई?

अम्बा—(हँसकर) तो क्या मेरा आना तुम्हे अच्छा नहीं मालूम पड़ा?

कामिनी—यह तो आपने मेरी बातों को दूसरे ही अर्थ में मिला डाला। भला बताइए तो मुझे आपका आना क्यों बुरा मालूम पड़ेगा? आपही के भरोसे पर हम लोग अपने दरबार से निकल आई हैं। आपही के आधार पर हम लोग यहां भी पड़ी हुई हैं। मगर आज सबेरे से ज़रा हम लोगों के दिल में कुछ खुटका सा पैदा हो रहा है।

अम्बा-क्या! क्या! कैसा खुटका पैदा हो रहा है?

कामिनी—और तो कुछ नहीं मगर एक लाम्बे क़दका अधेड़ नें हम लोगों को आकर चौकन्ना कर दिया।

राजे—(जल्दी से) वह वही तो नहीं था। उसने तुम से क्या क्या कहा?

कामिनी—और तो कुछ नहीं कहता था,-मगर भाव से कुमार महेन्द्रसिंह आपही के कब्जे में पड़े हुए हैं कहता था।

अम्बा—राम! राम! यह अनहोनी बातें भी कहीं हो सकती है। अगर वे मेरे यहाँ होते तो मैं अपनी बहन को इस तरह तड़पाकर कहीं रह सकती थी? फिर तुम्ही सोचो, मुझे उन्हें अपने यहां छिपाने से फायदा ही क्या है? वह कहने वाला चाहे जो भी हो, सरासर झूठा है।

कामिनी—यह तो मैं कह नहीं सकती मगर उसने यही सब बातें दोहरा तेहरा कर कहा सही है। साथ ही वह रमेश को भी आपही ने कहीं कैद करवा डाला है कहता था। परन्तु इस बात पर तो मुझे बहुत कम विश्वास हो चला।

भामिनी—आज के पहरे का इन्तजाम देखकर तो मुझे बहुत कुछ विश्वास हो आया है।

अम्बा—(गुस्से से तमक कर) मगर उस हरामजादे को यहाँ आने ही किसने दिया?

कामिनी–यह तो आप अपने पहरेदारों से पूछ सकती हैं।

अम्बा–(सुन्दरी से) क्यों बहन कनक ! क्या तुम्हे इस बात का यकीन हुवा ? मैं तुम्हारे ऊपर कभी ज्यादती कर सकती हूँ ?

कनक—पहले तो मुझे यक़ीन नहीं था, मगर मुझे वहां से निकाल, अपने दरबार में न ले जाकर यहाँ एक गुप्त जगह पर छिपाने के बाद कड़ाई के साथ पहरे का इन्तजाम करने से कुछ कुछ यक़ीन हो चला है । तुम मेरे ऊपर ऐसा क्यों कर रही हो ? तुम्हारा मैंने क्या बिगाड़ा था ? अब यदि तुम्हारे मनमें जरा भी दया हो तो मुझे अपने घर वापस जाने दो ?

राजे—देखा, यह भलाई का ज़माना नहीं है, जिसके लिए आप इतना कुछ कर रही हैं, वही आपकी शिक़ायत करने के लिए कमर कसके खड़ी हो गई।

अम्बा—खैर कनकलता ! अगर तुम मुझे इस तरह झूठा दोष दे रही हो तो मैं भी सच कहने से बाज न आऊँगी। ठीक है, मेरे ही यहां महेन्द्रसिंह नजरबन्द हैं, मैंने ही रमेश को भी क़ैद किया है, मगर अब तुम लोगों के किए से क्या हो सकता है ? महेन्द्रसिंह राजेश्वरी के ऊपर मर रहे हैं, आजही कल में दोनों की शादी भी होने वाली है । वह अब तुम्हारा नाम तक सुना नहीं चाहते हैं। मैं तुम्हें इसी लिए वहाँ न ले-जाकर यहां ले आई ? अब स्वामी अच्युतानन्द की चेली बनकर रहा चाहो तो यहां से स्वतन्त्र कर दी जा सकती हो नहीं तो इस ज़िन्दगी में आज़ादी की हवा खाना तुम्हारे नसीब में नहीं है ।

कनक—(तन कर) देखें, कैसे नहीं है, हरामज़ादी !

आज मेरे गुस्से को तूने मेरे दिलके अन्दर से निकाल कर बाहर कर दिया। मैं तुझे ऐसी पापिनी नहीं जाती थी। तूने मुझे पूरा धोका दिया। मगर याद रखना, सच्चे क्षत्री के लड़के होंगे तो प्रतापी महाराज नरेन्द्रसिंह के छोटे लड़के कभी भूलकर भी इस बाज़ारू कुत्ते की चिचोरी हुई हड्डी से बातें न करेंगे।

अम्बा—अच्छी बात है, मैं भी देख लूंगी। अगर तेरी इस शेखी को मिट्टी में न मिलाया तो मेरा नाम ही नहीं। अच्छा, राजेश्वरी! जा तो, उन लोगों को बुला ला? उसकी यह बातें सुन वह पासही की एक झुरमुट में घुसकर गायब हो गई। इसके बाद उसने गुस्से से थरथर काँपकर कहा—अब मैं तुम्हे ज़िन्दगी भरके लिए काल कोठरी की हवा खिलाने भेजती हूँ। तूने आज गाली देकर मुझे सख्त नाराज़ कर दिया।

कनक—कोई हर्ज नहीं, परमात्मा की अगर ऐसो ही मर्जी होगी तो मैं इसी तरह सड़ी सड़ी मर जाऊँगी, नहीं तो तुम्हे भी इसका फल भोगना होगा?

कामिना—आप लोग इस तरह अपने अपने में क्यों झगड़ा खड़ा कर रही हैं।

अम्बा—मैंने ही झगड़ा खड़ा किया, तू अपनी लाड़ली से क्यों नहीं पूछती है?

भामिनी—माफ़ कीजिए, ये आपकी छोटी बहन है। इसको अभी तक बोलने का तमीज़ ही नहीं है। सुना, सुनकर लड़कपन कर गई, इससे आपको नाराज़ होना उचित नहीं है।

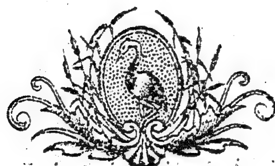
अम्बा—तब तू अच्युतानन्दकी चेली बनाकर इसको रखदे?

भामिनी—यह तो जान रहते हर्गिज़ नहीं हो सकता। अगर ऐसाही करना हो तो हम तीनों को इसी दम मार डालिए?

अम्बा—मैं मारने के लिए थोड़े ही यहां इसको लाई हूँ?

कामिनी—(गुस्से से) तो क्या करने लाई हैं?

अम्बा—अपना मतलब साधने के लिए। स्वामी अच्युतानन्द इसके ऊपर आशक हैं, उनसे मेरा बहुत कुछ मतलब निकलता रहता है। वे मेरे ऊपर बड़ेही मेहरबान हैं। उन्ही के कहने सुनने से मैंने ऐसा किया, अब उन्ही के सुपुर्द भी कर देती हूँ। कुमार रणधीरसिंह के ऊपर मेरी नज़र लगी हुई है, मैं उन्हें दिलसे चाहने लग गई हूँ। मेरी सखी राजेश्वरी कुमार महेन्द्रसिंह के ऊपर मरती है, मैंने उसीके लिए उन्हे तुम्हारी बातों का झाँसा पट्टी दे अपने यहाँ बुलाकर नज़रबन्द किया है। परसों वे उड़ही चुके थे, मगर मेरी ऐयारा रञ्जनी ने उन्हे अच्छी तरह से छकाकर रोक रक्खा। अब वे किसी तरह से भी मेरे चंगुल से निकल कर नहीं जा सकते। उसकी यह बातें सुनते ही कनकलता को वे हिसाब गुस्सा चढ़ आया, उसकी आँखों से आग बरसने लगी, वह अपने को सँभाल न सकने के कारण भूखी बाघिनी की तरह उछल कर उसका सँवारा हुवा बाल पकड़, जमीन पर गिरा उसके ऊपर चढ़ बैठी। इतने ही में पीछे से कई एक जबर्दश्त हाथों ने इसकी पकड़ कर बेरहमी के साथ घसीटा।



नौवाँ बयान

" सूझता कुछ भी नहीं है इस नशे के रङ्ग में ।
है बहुत बिगड़ा ज़माना, इस नशे के सङ्ग में " ॥



दिन भर में सबसे प्यारा समय सुबह का होता है। सब तरह से तबीअत खुश रहती है। सभी ठण्डी ठण्डी हवाके सेवन से आनन्द उठाते हैं। चाहे कितने ही दुःख में पड़े हुए प्राणी क्यों न हो, परन्तु इस समय उनको कुछ न कुछ राहत आही जाती है। दिमाग़ तर रहता है। मिज़ाज़ दुरुस्त रहता है। उत्साह बढ़ा हुवा रहता है। चिन्ता की भयानक ज्वाला तक ठण्डी पड़ी हुई होती है। इस समय वही सुबहने संसार में अपना मनोहर दृश्य दिखाया है। चिड़िया चारो ओर चह चहा रहे हैं । गर्मी का दिन है; छोटे बड़े सभी हवा खाने के लिए बाहर निकले हुए हैं। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही है । ठीक ऐसे समय राँची के महाराज गोविन्ददेव के नज़रबाग़ में अपने हमसीन कई एक मुसाहबों को ले उनके लड़के विजयकृष्ण टहल रहे हैं। इनकी उमर चौबीस पचीस बरस की है, चेहरा कुछ कुछ अपनी बहन कनकलता से मिलता जुलता है, मगर नाक कुछ लम्बी है। बदन दुबला पतला है । आँखें लाल चमकीली है । इस समय सोने की पोशाक ही पहने हुए हैं। टहलते टहलते उन्हो ने कुछ उदासी के साथ अपने पास ही के एक खूबसूरत नौजवान की ओर देखकर कहा–कुसुमलता को इतना घमण्ड होगया, वह मेरा इतना अपमान करने के लिए तय्यार हो गई। अच्छी बात है, मैं भी इसी हाथ से उसको अपने पैरका

धोवन न पिलाऊँ तो मेरा नामही नहीं ? मुझे इसके पहले उसके ऊपर प्रेम था, अब ईर्ष्या है, द्वेष है, बदला लेने की हवस है। मैं उस अपमान का अवश्य बदला लेकर छोड़ूँगा। मुंगेर के एक मामूली राजको मैं क्या समझता हूँ ? अच्छा, यह तो बताओ जसवन्त ! पिताजी की इस विषय में कैसी राय है ?

जसवन्त—उनका प्रेम आपके ऊपर पूरा है इसलिए वे आपके कामों में कुछ भी दख़ल नहीं दिया चाहते। हाँ, महारानी कुछ इसके ख़िलाफ़ हो रही हैं।

विजय—मैं उन्हे मनालूँगा। वे पहले चाहे कुछ भी हठ करने बैठे मगर जब मेरा सामना होता है तो बहुत देर तक अपनी बातों में कायम नहीं रह सकती। इसी तरह कई एक को मैंने अपने महल में लाके रक्खा है।

जसन्त—वह तो मुझे भी मालूम है, मगर इसमें उससे ज्यादा झन्झटों का सामना करना पड़ेगा। ताज़ुब नहीं, मुंगेर के साथ लड़ाई भी छेड़ना पड़े। वे भी अपने को इन दिनों एक ही लगाते हैं। साथही दीनाजपुर वाले भी उनके मददगार हैं।

विजय—मैं तमाम ओरिसे का मालिक होकर इन सब तुच्छ बातों से ज़रा भी नहीं डरता। मुझे और कुछ नहीं, उस मामूली छोकड़ी कुसुमलता का दर्प दलन करना है। तुम आज ही अपने ऐयारों को उसके फ़िराक़ में भेज दो। यदि उनसे कुछ न हो सका तो मैं अपनी फ़ौज लेकर चढ़ बैठूंगा। उस समय बहन अम्बालिका क्या मेरी मदद न करेगी ?

जसवन्त—यह तो मैं कह नहीं सकता, क्योंकि महारानी अम्बालिका खुद कुमार रणधीरसिंह के ऊपर पागल हो रही हैं।



विजय—ऐसा ! यह तुमसे किसने कहा ?

जसवन्त—मैं कई दिनों से जानता हूँ !

विषय—यह तो मुझे मालूम नहीं था । मगर क्या हर्ज है, जब मैं उसे कहूँगा, तो चाहे जो कुछ भी हो वह मेरी मदद करने पर तैय्यार हो जायगी । उसकी और मेरी दूसरी ही बात है। उसके बहुत से भेदों को मैं जानता हूँ । मुझसे वह सदैव दबती रहती है। उस दिन बहन कनकलता को लेने आई थी तो किस तरह मेरे साथ घुलघुल कर बातें करती थी । मैं जोर देकर कहता हूँ, वह मेरी बातों को हर्गिज टाल न सकेगी ।

जसवन्त—इन सब झन्झटों को छोड़कर यदि महाराज नरेन्द्रसिंह के पास कुसुमलता की मँगनी माँग भेजें तो क्या हर्ज है ?

विजय—(बिगड़कर) क्या उस कमबख्त से शादी करने के लिए कहते हो, मैं हर्गिज़ ऐसा नहीं करूंगा । इससे मेरी पूरी बेइज्ज़ती होगी ! उसको तो वहां से उड़ाकर ले आने के बाद अपनी लौंड़ी की भी लौंडी बनाकर रक्खूँगा ।

जसवन्त-इस बात को तो महाराज भी पसन्द नहीं करेंगे ।

विजय—न करें, मैं समझ लूंगा । क्या मेरा अपमान होना उनका अपमान नहीं है । वे मेरी आबरू का ज़रा भी ख्याल नहीं करेंगे ?

जसवन्त—आप समझदार हैं, बुद्धिमान हैं, पढ़े लिखे हैं । अतएव जो भी काम करेंगे वह समझ बुझकर ही करेंगे। मगर मेरी राय में तो एकाएकी किसी बड़े शक्तिशाली को दुश्मन बनाना बिल्कुल ही अच्छा नहीं जँचता ।

विजय-तुम डरपोक हो, तुममें मान अपमान का ख्याल नहीं है ! तुम अपने को सब से नीचे ही रखकर काम किया

चाहते हो। तुम्हे ऐयारों की सरदारी देकर पिताजी ने बहुत बड़ी भूल की है?

जस—मैंने कोई बेजा बातें आपसे नहीं की, इन बातों में ज़रासा भी आप ध्यान देंगे तो सब कुछ समझ जायंगे। मैं आपके हुक्म से बाहर नहीं हूँ, जैसा कहिए वैसा करने के लिए तय्यार हूँ। मगर परिणाम को सोचकर काम करेंगे तो अपना ही कल्याण होगा।

विजय—मैंने सब कुछ सोच लिया है। मुझे अब किसी बात को समझ ने की आवश्यकता नहीं है। तुम अगर मुझे चाहते हो तो किसी तरह से भी कुसुमलता को मेरे हरम में लाने का उद्योग करो, मैं तुम्हे उसके बदले पांच लाख रुपैया पुरष्कार दूँगा?

जस–मैं आपका मित्र हूँ, मैं आपका नौकर हूँ, मैं आपही के नमक से पला हुवा हूँ। मुझे पुरस्कार की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं जहां तक हो सकेगा आपकी मुराद को पूरी करने की कोशिश करूंगा। यदि इसके लिए जान भी लड़ाना पड़े तो लड़ाने में पीछे न हटूंगा।

विज़य—शाबास! मुझे तुम्हारी ओर से ऐसी ही आशा थी। अच्छा, अब चलो इसकी खुशी में कुछ नाच होना चाहिए। इस समय की बातों से मेरा हृदय गद्गद हो उठा है। इतना कहकर उन्होंने बड़े प्रेम से जसवन्तसिंह का हाथ थामा। इसके बाद राजमहल ही से सटा हुवा एक सुन्दर बंगले की ओर सबके सब गए। वह बंगला तरह तरह के शौकीनी सामानों से सजा हुवा था। वहां रात दिन खूबसूरत, नौजवान लौड़ियाँ बैठकर गाया, बजाया करती थी। इस समय भी कई एक सुन्दरियां बैठकर गा, बजा रही थी। विजयकृष्ण



के साथही साथ उनके मुसाहबों को आते देख वे सब के उठ खड़ी हुई। विजयकृष्ण एक मखमली गद्देदार बिछौने पर जाकर बैठे, उनके मुसाहब लोग कुछ दूर हटकर कालीन पर बैठे। लौंडियों ने मोरछल झलना शुरू किया। धीरे धीरे बिजुली के पंखे चलने लगे। एक लौंड़ी ने शीशे के ग्लाश में भरकर रंगीन शराब ले आई। विजयकृष्ण ने उसको एकही घूँट में समाप्त कर कहा—इन लोगों को भी एक एक ग्लास भर कर दो? उस लौंडीने वैसाही किया। जसवन्तसिंहने ग्लास तो लिया, मगर उसको नहीं पिया। यह देख विजयकृष्ण ने एक दूसरे मुसाहब की तरफ़ फिरकर कहा—देखा नगेन्द्र! जसवन्तसिंह की दोस्ती हम लोगों से बाहर ही रहती है। ये भीतर से हम लोगों को कभी चाहते ही नहीं हैं।

नगेन्द्र—ये स्वर्ग से भी बढ़कर मिलने वाले आनन्द को कभी स्वप्न में भी नहीं चाहते। इनको इस बातका चशक़ाही नहीं लगा हुवा है। खेत के बैल खेतही के घाँस पर उछल कूद करते रहते हैं।

विजय—यह बात तो तुमने ठीक कहा। (एक लौंडी से) हां, और पिलाओ नैना! इस एक ग्लास में तो कुछ भी रंग चढ़ता नज़र नहीं आता। जब तक तीन तीन ग्लास मुंह में लग न जाय तब तक इसका मजाही किरकिरा होता है।

नगेन्द्र—जी हां, सरकार! यह चौथे ग्लास में तो स्वर्ग के क़रीब ही पहुँचा देता है मगर जसवन्तसिंहजी? आप ग्लास को ढाले बिना क्यों चुपचाप लिए बैठे हैं? आप को सरकार की खातिरी भी नहीं करनी है?

जसवन्त—मैं इस समय काम की फिकर में जाऊँगा या इस रंग रेलियाँ में मश्त होकर अपना समय गवाऊँगा।

क्या मैंने सरकार की खातिरी से कभी लिया नहीं है? इतने में नैना ने कई मर्तबः ग्लास भर कर सबको पिलाया। चार पांच ग्लास चढ़ा लेने के बाद नशे में चूर होकर बिजयकृष्ण ने एक तीसरे मुसाहब की तरफ देखकर कहा—देखा! किशोर! जसवन्तसिंह को कभी काम से फुरसत ही नहीं मिलती है। जब इनसे इसके बारे में कहा जाता है तब एक न एक बहाना करके निकल ही जाते हैं?

किशोर—(जसवन्त से) आपको सरसार की दिल-शिकनी करना उचित नहीं है।

जसवन्त—तो क्या आज मैं कुमारी कुसुमलता के कामों की फिक्र में न जाऊँ?

विजय—चुल्हे में जाय कुसुमलता, भाड़ में जाय उसकी फिक्र, जहन्नुम में जाय उसका काम? मैं उसको क्या समझता हूँ। तुम लो, खूब लो, इसी रङ्गीन रससे मुंह धो, हाथ धो, पाँव धो, इसी में नहाओ, डूबो, गोता लगावो, मगर लो। मैं तुम्हारा काम बैठे बैठे बात की बात में कर दिखाता हूँ। (एक लौंडी से) जा तो नलिनी! मेरी प्यारी गाने वालियों को बुलाला। मैं इस जगह को अब इन्द्रका अखाड़ा बनाना चाहता हूँ।

मैंने मै को जब लिया, मैं मैं नहीं से मै हुवा।
मैं यहाँ रङ्गीन रसका अब बनाता हूँ कुवा॥

नलिनी चली गई, उसके जाते ही जसवन्तसिंहने कहा—कुमार! आप अपने को ज़रा तो सँभाल कर देखिए? इस तरह से इतना बड़ा राज कैसे चलावेंगे?

विजय—चलावेंगे, मजे में चलावेंगे, तुम घबड़ाते क्यों हो। हम ऐसा चलाके दिखावेंगे जैसा कभी किसी ने स्वप्न

में भी न चलाया होगा। तुम तो यार! नीरे फीके ही निकले, तुमसे इस ऐयारी की सरदारी नहीं चल सकती। मुझे तुम्हारे बदले किसी दूसरे ही को तलाश करना पड़ेगा। देखो, सामने देखो, वह परियों का झुण्ड आ रहा है। इसको देख कर भी तुम्हे मज़ा उठाने का दिल नहीं चाहता! तुम में मनुष्यत्व से ज्यादा पशुत्व का सम्मेलन है। तुम आदमी नहीं हो जानवर के दुम हो। तुम मेरी तरफ देखते क्या हो, उस तरफ देखो? आ जावो मेरी जान! आ जावो मेरी मेहर्बान! क़दरदान! आरामों की खान!

नगेन्द्र—जी हां कृपानिधान! यही सब तो हैं नन्दन के बाग़बान! इतने में तबला, सितार, बेन को लिए हुए दस बाह खूबसूरत, खूबसूरत कमसीन औरतों ने आकर विजय-कृष्ण को अदब के साथ झुक कर सलाम किया। उन्हों ने उनके आतेही बड़ी मुहब्बत से कहा-तुम लोग बैठ जावो। आज कुसुमलता को लौंडी बनाने की खुशी में यह सब रंग रेलियों का बाजार गर्माया हुवा है। (नैना से) बिना रङ्गीन रसको पिलाए इन्हे ज़रा भी आनन्द नहीं आवेगा। इन सबों को दो दो ग्लास भर कर मेरी ओर से पिलावो। नैना ने सब को पिलाया; इसके बाद विजयकृष्ण ने गाने वालियों में से एक सबसे हसीन, कमसीन; चञ्चल; नाज़नी की तरफ झूमते हुए देखकर कहा-मेरी प्यारी! रङ्गिली! ज़रा अपने कोकिल-विनिन्दित कण्ठ से एक आध मीठास तो हम सबों को चखा कर परमानन्द में पहुँचा दो? यह सुनते ही रङ्गिली ने मुस्कुराकर अपनी नुकीली नज़र से तीरों को छोड़ती हुई कहा—सरकार भी बाँदी को बढ़ावा देकर आसमान में पहुँचा दिया करते हैं। लौंडी क्या जानती है, खैर सुनिए—

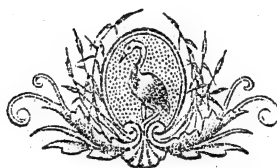
पिलादे,-पी रहूँ रङ्गीन रसकी धार लेले कर।
जिलादे,-फिर रही हूँ आज दिल बीमार लेले कर॥
तुम्हे फुरसत न हो तो लो अभी फुरसत दिलाती हूँ।
इधर देखो, उधर देखो न तुम तरवार लेले कर॥
सुनो; सुनते रहो बुलबुल कहाकरती है क्या तुम से।
न हो नाराज़, उस में मत चुभावो ख़ार लेले कर॥
गयी वह वस्ल की बातें, रही फुरक़त की ये रातें।
कहाँ जाते हो? तुम अब बेरहम हो यार लेले कर॥
रहो, दम भर मुझे तो देख लेने दो, इधर आके।
किसे दूँगी चढ़ा अब फूल का यह हार लेलेकर॥

विजय—(झूमता हुवा) वाह! वाह? किसे दूँगी चढा; वाह! वाह! तुमने भी खूब कहा, क्या मैं मर गया हूँ। तुम मुझे अपने सामने बैठा हुवा नहीं देखती हो?

किशोर—(लड़खड़ाकर) देखती है देखती? मगर इस समय नहीं देखती, इसको दिखा देना होगा, इसको घुमा फिराकर दिखा देना होगा? इसको समझा बुझाकर दिखा देना होगा!

नगेन्द्र—बस दिखा चुके, इसने स्वर्ग मृत्यु पाताल तीनों लोकों को एक साथ ही दिखा दिया, अब बाँकी क्या रह गया है जो तुम दिखा दोगे? इतने ही में बाहर से एक लौंडी घबड़ाती हुई आकर विजयकृष्ण की तरफ देख रूँधे हुए गले से कहने लगी-सर्वनाश! बिलकूल सर्वनाश! कुमारी कनकलता का पता नहीं हैं, साथ ही छोटी बहू मन्दाकिनी का भी पता नहीं है। उन दोनों की कोठरी खून से तरावोर हो रहा है। महारानी अम्बालिका की ऐयारा जमुना भी नहीं है। कामिनी और भामिनी की सूरत भी दिखाई नहीं पड़ती है।

इस बात से अन्दर कुहराम मची हुई है । महाराज आपको याद कर रहे हैं "। उसकी बातें सुन विजयकृष्ण ने लापरवाही से कहा—याद करते हैं तो करने दो; मैं ऐसी छोटी छोटी बातों के ऊपर विशेष ध्यान नहीं देता। तुम छोटे भैय्या से जाकर कह दो; मुझे इस समय फुरसत नहीं है, मैं नहीं आ सकता। वे दोनों कुल कलङ्किनी कहीं गई नहीं है, अपने यार की तलाश में निकली होंगी। दिल भरने के बाद आपही चली आवेगी, जावो; मुझसे इस समय छेड़छाड़ न करो "। वह लौंडी रोती हुई वापस चली गई। उसके साथ ही जसवन्तसिंह भी जाया ही चाहते थे, इतने में एक लाम्बे कद का खूबसूरत अधेड़ ने आकर इनको इशारे से बाहर बुला कुछ कहा, जिसको सुनते ही यह उसका हाथ पकड़ तेज़ी के साथ दौड़ते हुए बगीचे की तरफ चले गए।



दसवाँ बयान

"मिला गुल था न मिलने का, हुआ ग़ायब ज़रा खिलकर।
जिलादे मैं तड़पता हूँ, रहम कर फिर इधर मिलकर" ॥

नकाबपोशों से खैंचातानी होकर इस समय राजकुमारी सावित्रीकी घूंघट कुछ सरक गई थी; उसका चन्द्रमा को लजानेवाला सुन्दर गहरे रङ्गका मुखड़ा गुलाब की तरह लाल हो बाहर निकला हुआ था। उसकी चञ्चल कमल दलकी तरह बड़ी बड़ी आँखों में सुर्खी चढी हुई थी। उसकी यह हालत देख युवक अपने को सँभाल न सका; उसने सबसे पहले जिसने उसको पकड़ा था उसकी गर्दन पकड़ पटकने के बाद; उसको छुड़ा; अपने पीछे कर; बड़ी फूर्ति के साथ दोको ज़ख्मी करके गिराया। उसकी ऐसी फूर्ति देख बांकी के दोनों नकाबपोश भौंचक्कासा हो भागाही चाहते थे इतने में इसने आगे बढ़ उनमें से एकको पकड़ के एक घूंसा दिया। वह मारे दर्दके चिल्लाकर वहीं बैठ गया। बांकी का एक नकाबपोशने जल्दी से निकलने की राह न देख; तरवार निकाल इनका मुकाबला किया। युवक की आंखों से आग बरस रहीथी, मारे गुस्से के उसका शरीर थर थर कांप रहा था। उसने उस को दोही चार पैतरे बदल; सख्त चोट पहुँचा कर गिरा दिया। वे सब दर्द के मारे कराहने लगे। इतने में वह युवती भी आ पहुँची; उसने आते ही युवक को कृतज्ञता की दृष्टि से देखकर कहा—कुमार! आज आपने कुमारी की जान बचाकर अनन्त पुण्य को लूट लिया। इसका बदला इस ज़िन्दगी भर यह किसी तरह से भी नहीं दे सकेगी।

कुमार-ये सब बातें तो पीछे होती रहेगी; पहले इनचारों दुष्टों को तो ठिकाना लगाया जाय।

युवती—पहले ये सब कौन हैं; पहचान तो लें। इतना कहकर उसने एकके मुखसे नकाब हटाकर देखा; देखते ही चौंककर कहने लगी "ओफ ! यह तो सुदर्शनसिंह के लड़के शिवदत्तसिंहका दोस्त है। यह यहां कैसे आ पहुँचा ? इसी के डरके मारे तो हमलोग वीरपुरको छोड़ यहां चली आई। वहाँ इसने पहुँचकर हम लोगों को बड़ाही तङ्ग करडाला था। अच्छा हुआ; परमातमा ने आपही के हाथ इस दुष्टको सज़ा दिलाई। जैसा किया था वैसाही फल पाया।

कुमार—ये सब तुम लोगों के पीछे क्यों लगे हुए हैं ?

युवती—मैं यह सब बातें आपसे पीछे कहूँगी। पहले इन लोगों को तो ठिकाना लगा के आऊँ। इतना कहकर उसने अपनी बग़ल से बटुआ निकाल; उसमें से एक हरे रङ्गके मल्हम की डिबिया खोल; उन दोनों के ज़ख्मों में लगा; पट्टी बांध चारो को पारी पारी से घसीटती हुई एक पासही की कोठरी में लेजाकर बन्द कर दिया। तबतक कुमारी सावित्री अपने बिगड़े हुए कपड़ों को दुरुस्त करने के लिए ऊपर जा चुकी थी। कुमार टकटकी लगाए हुए उस युवतीका काम देख रहे-थे। जब वह उसकाम से निवृत्त हुई तो कुमार ने कहा—सुन्दरी ! आप वास्तव में दया की मूर्त्ति हैं। यदि ऐसा न होता तो अपने ही दुश्मनके ऊपर दया दिखाकर यह सब दया का भाव ज़ाहर न करती।

युवती-आप मुझे क्यों आप आप कहकर लज्जित करते हैं। मैं उस योग्य नहीं हूँ; मुझे फिर से आप ऐसा कहेंगे तो मैं कभी भी आपसे न बोलूंगी।

कुमार—(हँसकर) ख़ैर; एक बारके लिए माफ़ करना; फिर मैं कभी तुम्हे आप कहकर न बुलाऊँगा। अच्छा; यह तो बताओ; तुम्हारी सखी को किसी ने चोट तो नहीं पहुँचाया ?

युवती—यह मैंने अभी उससे पूछा नहीं है। चलिए; वह भी ऊपर चली गई है; वहीं उससे पूछ लिया जायगा। मगर वे सब उसे चोट क्यों करेंगे; वे सब तो उड़ा लेजाने के लिए आए हुए थे। बुरे ख्याल का बुरा नतीजा होता ही है। इतना कह उसने चारो तरफ़ देखभाल; कुमार को ऊपर के एक कमरे में लेआई। कुमार वहां पहुँचतेही सतृष्ण आंखोंसे इधर उधर किसी को खोजने लगे। परन्तु उस समय वह अद्वितीय रूपरासि उनके सामने दिखाई नहीं पड़ी। उनकी आतुरता पल पल में बढ़कर सीमा के पार होने लगी; उन्होने अपने चित्तको बड़ी कठिनता से सँभालकर एक लम्बी साँस लिया। युवती खड़ी खड़ी उनकी यह सब अवस्था को देख रही थी; उनको इस तरह व्यग्र होते देख उसने हँसकर कहा–अब आप इसी जगह बिश्राम लीजिए; मैं जलपान का सामान लिए आती हूँ।

कुमार–इस समय मेरी प्यास की अभिलाषा मुझसे बहुत दूर जाकर मेरे कलेजे को एक दूसरीही अलौकिक चीज़ आपही आप तर बना रही है। मैं अब कुछ भी मामूली चीज़ न खाऊंगा। मुझे यह सब पिलाने के बदले अब इसी तरह चुपचाप पड़े रहने दो ?

युवती—(हँसकर) मैं सब कुछ समझ चुकी हूँ। आप घबड़ाते क्यों हैं। आपकी प्यास मामूली कुए के जलके बदले किसी के अलौकिक नयन सरोवर के जलसे बुझाई जायगी। इतना कहकर जवाब का आसरा देखे बिनाही वह युवती बाहर चली गई। उसके जाने के बाद कुमार कलेजे पर हाथ

रखकर आपही आप न जाने क्या क्या कहकर बड़बड़ाने लगे। उनका चित्त अत्यन्त ही आतुर हुवा। इतने ही में सामने दीवार पर टँगी हुई एक तस्वीर पर उनकी नज़र पड़ी; वे उसके पासही जाकर खड़े हो देखने लगे। जिसकी तस्वीर उन्होंने पहले देखी थी; जिसका पत्र पाकर वे वीरपुर चले आए थे; जिसको उन्होंने चार चार दुष्टों के हाथ से बचाया था; वह तस्वीर उसी हृदयहारिणी अद्वितीय सुन्दरी सावित्री की थी। वह उसे देखते देखते उसी में लीन होगए। उन्हे कुछ होश नहीं रहा। बहुत देरके बाद आपही आप होश में आकर कहने लगे—प्रिये! क्या तुम मुझे चाहती हो? नहीं; मुझे क्यों चाहोगी? मैं तुम्हारे चाहने योग्य ही नहीं हूँ। कहाँ स्वर्गीय कुसुम; कहां एक तुच्छ भौंरा। इस संसार में भी ऐसी अलौकिक सुन्दरी पैदा होती हैं; यह मुझे पहले मालूम नहीं था। मैंने तुम्हे दुष्ट के हाथ से बचाया परन्तु तुम्हे उस समय अच्छी तरह से नहीं देखा; तुम भी घबड़ाई हुई होने से बहुत देर तक वहां खड़ो नहीं रही; चपलासी चमककर मेरी आँखों की ओट होगई; परन्तु इस समय तो मैं तुम्हे अच्छी तरह देख रहा हूँ। बोलो; क्यों नहीं बोलती; क्या तुम मुझे अपने हृदय में ज़रासा भी स्थान नहीं दोगी? मैं किसी भी औरतको अपने बरोबर नहीं समझता था; परन्तु आज वह मेरी शेखी हवा होगई। मैं हारा; एकबार नहीं हज़ार बार हारा। इतना कहकर वे कुछ आगे बढ़ाही चाहते थे इतने में किसी के पीछे से हँसने की आवाज़ आई; वह चौंक कर पीछे की तरफ़ फिरे। वही युवती एक हाथ में चाँदी का जलपात्र; एक हाथमें मिठाइयों से भरी हुई तश्तरी लिए खड़ी हँस रही थी। उसने इन्हे अपनी ओर देखते देख कहा—क्या आप कुछ हाथ मुँह धोकर अपने शरीर को विश्राम न दीजिएगा?

कुमार-मैंने तो तुम से पहलेही कह दिया था; फिर कहते कहते यह सब कष्ट क्यों उठाया? मैं अभी कुछ भी न खाऊँगा।

युवती—यदि आप ऐसा करेंगे तो मेरे साथही साथ एक और अवला को भी अत्यन्त कष्ट पहुँचावेगें।

कुमार—यह तो तुम मुझपर सरासर ज़ुल्म कर रही हो?

युवती-जब आप प्यास के मारे विकल होकर दरवाज़ा खुलवाने की चेष्टा कर रहे थे तब तो मैंने ज़ुल्म नहीं किया था। उस समय आप एक बून्द पानी के लिए तरसते थे; इस समय मन भर पानी को भी आप तुच्छ समझते हैं। खैर समझिए; परन्तु हम दोनो की प्रार्थना को सुन इसको इस समय स्वीकार करने की कृपा कीजिए? उसकी ऐसी बातें सुन उन्हो ने कुछ जवाब नहीं दिया। युवती ने हाथ मुंह धुलाकर मिठाई की तश्तरी हाथ में रखदी। उन्होंने उसमें से कुछ खाकर पानी पिया। इसके बाद कृतज्ञता की निगाह से युवती की तरफ़ देखकर कहा—तुम्हारी सखी कहां है? वह तब से क्यों नहीं दिखाई पड़ी? क्या मुझे देखकर उसे भय लगता है?

युवती—इसी से तो उसने आपको बुलवा भेजा था?

कुमार—तो फिर क्यों नहीं यहां आती?

युवती-यह मैं क्या जानूं; आप उसीसे पूछ लीजिएगा? मगर इस समय तो वह आपही के लिए अपने हाथ से रसोई बना रही है।

कुमार—ऐं? रसोई बना रही है? उसे कहदो कि मेरे लिए होतो वह ज़राभी कष्ट न उठावे। मेरी खाने की ओर इस समय रत्ती भर भी इच्छा नहीं है।

युवती-अब तक तो वह बना चुकी होगी। आप लाख न खाएँगे कहें, परन्तु वह आपको खिलाए बिना हर्गिज न मानेगी।



जब आप उसके बुलाने से आए तो उसकी इस ज़रासी मेह-मानी को कबूल न करेंगे; ?

कुमार—(जोशमें आकर) क्यों नहीं करेंगे; जीजान से करेंगे। जब तक दममें दम है तब तक करेंगे; परन्तु यह तो बताओ; तुम्हारा नाम क्या है ?

युवती-मुझे लोग सरला के नाम से बुलाते हैं।

कुमार—ठीक बुलाते हैं, तुम सरला यथार्थ में सरलाही हो। मगर यहां तुम दोनो ही रहती हो या और भी तुम्हारे साथ कोई है ?

सरला—जीहाँ हैं। हमलोग विलासपुर से आतीबेर चार आदमी आए हुए थे। मैंने अपने साथ अपने भाई आनन्द को भी लिया था। उसके अलावे मेरे चचा की लड़की चपला भी साथही आई थी। वीरपुर पहुँचने के बाद पत्र लेकर चपलातो आपके पास चली गई, आनन्द हमलोगों के साथही रहकर हिफ़ाज़त करने लगा। जब शिवदत्तसिंह के आदमियों ने वहां तङ्ग करना शुरू किया तो उसी की राय के मुताबिक़ हमलोग यहाँ आकर रहने लगीं। आनन्द दिन भर वीरपुर में रहकर आपही का आसरा देख; रात को यहाँ चला आता है, चपला अभी तक आई नहीं है।

कुमार—तुम लोग क्यों विलासपुर से निकल आए ?

सरला—यह रहस्य मैं अभी आपको बताती हूँ। इतना कहकर वह बाहर चली गई, मगर देर तक लौट कर नहीं आई। कुमार उसके आसरे बैठे बैठे घबड़ा उठे। इतने में सन्ध्या आ उपस्थित हुई, धीरे धीरे अन्धकार ने अपना राज्य जमाना शुरू कर दिया। कुमार ने खिड़की के पास आ नीचे की ओर झाँक कर देखा। जिस जगह उन्होंने अपने घोड़े को

बाँधा था उस जगह वह नहीं था, न खोलकर रक्खा हुवा साज ही था। यह देख, वह उसकी ख़बर लेने के लिए घूमेही-थे, इतने में रोशनी लिए हुए सरला आ पहुँची। उसको देखते ही उन्होंने कहा—मेरा घोड़ा कहाँ गया, इस समय वह क्यों वहाँ दिखलाई नहीं पड़ता?

सरला—उसको मैंने भीतर दालान में लाकर बांध दिया है?

कुमार—अच्छा हुवा, उसकी मुझे बड़ी चिन्ता लग गई थी। मगर तुम तो बहुत देर लगाकर लौट रही हो, क्या अतिथि को इसी तरह अकेले छोड़कर सन्मान किया जाता है। तुमलोगों की तरफ़ ऐसी ही रीति होती है?

सरला—(हँसकर) होती तो नहीं थी मगर अब होने लग गई है। अच्छा, अब आप सन्ध्या बन्दन से निवृत्त होइए; कुमारी खाना परोसकर ले आ रही है। उसकी ऐसी बातें सुन कुमार ने बहुत कुछ नाहीं नूहीं की, परन्तु उसने एक न मानी, अन्त को लाचार होकर हाथ मुंह धो उन्होंने सन्ध्या बन्दन किया। सरला ने पानी छिटक कर सामने ही एक चौकी और आसन बिछा दिया। इसके कुछ क्षण वाद परोसी हुई थाली लिए हुए, लम्बी घूंघट के अन्दर अपने चन्द्रमुख को छिपाकर; लज्जाके मारे सिमटते सिमटते कुमारी सावित्री आई। कुमार का शरीर रोमाञ्चित हो उठा। सावित्रीने चौकी पर थाली रख दिया। सरलाने कुमार का हाथ पकड़ उठाकर आसन में बैठा दिया। सावित्री सामने खड़ी हो पंखा झलने लगी। कुमार चुपचाप उसकी ओर देखते हुए भोजन करने लगे। उनका चित्त इस समय प्रणय के अद्वितीय मैदान में सरपट घोड़ा फेंके उड़ा जा रहा था। धीरे धीरे भोजन समाप्त

करने के बाद वे उठे, सरला ने हाथ मुंह धुलाया। सावित्री ने पान का बीड़ा लाकर उसके हाथ से कुमार को दिलाया। वे उसको खाते हुए सरला की तरफ़ देखकर कहने लगे— अकेले हम्हीं को खिलावोगी या आप भी भोजन करने बैठोगी? क्या तुमलोगों का समय अभी नहीं हुवा है?

सरला—जी हाँ, अब हो रहा है; जाते ही हैं। आप निश्चिन्त होकर पलङ्ग पर विश्राम कीजिए। इतना कहकर वह सावित्री को ले बाहर चली गई। कुमार कुछ देर तक इधर उधर टहलने के बाद एक कुर्सीपर बैठ गए। बाहर चाँदना हो रहा था; खिड़की से ठण्डी ठण्डी हवा आरही थी। दिन भरके थके माँदे, कुमारको नींद सी आने लगी। वे पलङ्ग पर जाकर लेट गए, लेटतेही उन्हे निन्द्राने घर दबाया। वे आनन्द पूर्वक सब बातों को भूल गहरी नींद में खर्राटा लेने लगे। धीरेधीरे रात बीतते बीतते तीसरे पहर के पास पहुँची। चारो तरफ़ निस्तब्धता का प्रबल राज्य जमा हुवा था। चाँदनी खिलखिला कर हँस रही थी, ठण्डी ठण्डी हवा के झपेटे बार बार आ रहे थे। ऐसे समय कुमार रणधीरसिंह की आंख खुली, देखा, कमरे में भरपूर रोशनी हो रही है। पलङ्ग के पासही एक चौकी के ऊपर, अपने चन्द्रमुख से चकाचौंध डालती हुई हाथ में पंखा लिए कुमारी सावित्री उन्हे झल रही है। यह देख उनका प्रेम उमड आया; वे अपने को सँभाल न सके; उन्होने एक लम्बी सांस ले उसकी तरफ़ देखा। इस समय सावित्री घूंघट काढे हुए नहीं थी। उनकी आँखों से आँखें मिलती ही वह लज्जित हो चल देना ही चाहती थी; परन्तु चलने की शक्ति ने उसको साफ जवाब दे दिया। कुमार पलङ्ग पर उठ बैठे। दोनो का हृदय जोर जोर से धड़-

कने लगा। सावित्री ने संकुचित हो नीचे मुख किया;–कुमार की टकटकी बँध गई। सावित्री के हाथ से पंखा छूटा। कुमार ने अपने हृदय के वेग को बड़ी कठिनता से रोक कर कहा—क्या तुम अभी तक सोई नहीं हो; मेरे लिए इतना कष्ट उठाने को तुम्हे किसने कहा ? यदि मैं ऐसा जानता तो हर्गिज़ दरवाज़ा खुला रखकर न सोता। सावित्री क्या कहे; वह लज्जा के मारे सिमटी जाती थी; उससे कुछ बोला नहीं गया। यह देख कुमार ने कहा—तो क्या मुझे बुलाकर तुम मुझसे दो बातें भी न करोगी ? नारियों का यही धर्म है ? उसने तब भी जवाब नहीं दिया। लज्जा से उसका कण्ठ रुकता जाता था। कुमार ने फिर कहा—मुझसा हतभाग्य भी शायद ही कोई होगा। किसी ने ठीक कहा है; बिना तकदीर के समुद्र में गोता लगाने पर भी सीपही हाथ लगता है। मेरा भी यही हाल हुवा है। अमृत के खान में आकर भी अमृत के लिए तरस रहे हैं; मालूम होता है मेरा यहाँ रहना तुम्हे पसन्द नहीं आया है। अबकी सावित्री ने संकोच को एक किनारे रखकर बड़ेही मृदुस्वर से कहा—यदि पसन्द न आता तो मैं कष्ट ही क्यों देती। परन्तु मेरा यह अपराध क्षमा के लायक नहीं है।

कुमार—ठीक कहती हो, मैं तुम्हे इस ज़िन्दगी में तो कभी भी क्षमा नहीं कर सकता। परन्तु मेरा भी तो एक अपराध क्षमा के लायक़ नहीं है। सावित्री ने उनके हृदय का भाव को समझ लिया; वह संकुचित हो ज़मीन की तरफ़ देखने लगी। कुमार ने प्रेम के आवेग में आ उसके कोमल कर को पकड़ कर कहा—क्या तुम मुझे रात भर पङ्खा झलती रही ?

सावित्री—जी नहीं, मैं तो अभी अभी चली आई हूँ।

कुमार—क्या किसी को बुलाकर उसके साथ झूट बोलना उचित होता है ?

सावित्री-(शर्माकर) कल से आज कुछ ज्यादाही गर्मी है।

कुमार—तुम बातें बनाकर क्यों मुझे भुलावे में डाल रही हो। अस्तु—यह तो बताओ; तुम अपने बापके यहाँ से निकल कर क्यों चली आई ?

सावित्री—मेरे ऊपर तरह तरह का अत्याचार होने लगा; इसी लिए चली आई।

कुमार—कैसा अत्याचार ! किसने अत्याचार किया ?

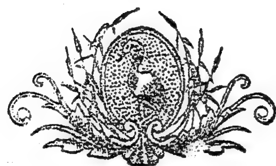
सावित्री-पिताजी ने मेरी शादी सुदर्शनसिंह के लड़के शिवदत्तसिंह से करने का वचन देकर उसके लिए सामानों को जुटाना शुरू कर दिया; इस लिए मुझे विवश होकर निकल आना पड़ा।

कुमार—त्यो क्या तुम इसी को अत्याचार कहती हो ?

सावित्री—क्यों नहीं; एक दूसरे ही देवता की आराधना करनेवाली अबला को एक राक्षस के गले मढ़ना चाहें तो अत्याचार नहीं होता है। मुझे वह बात पसन्द नहीं आई; मुझे वह अत्याचार मालूम हुवा इसी लिए अपनी माँसे सम्मति ले मैंने अपने आराध्य देवता की शरण ली। इसके आगे वह कुछ कह न सकी; उसका गला भर आया; आँखों से झरझर कर मोतियों की लड़ी झड़ने लगी। कुमार ने जल्दीसे उसका आँशू पोंछकर कहा—ऐं ! तुम रोने क्यों लग गई; यह क्या रोने का समय है ? मुझसे यह सब बातें देखी नहीं जाती। बोलो; हँसकर बोलो; क्या तुम मुझे सचमुच चाहती हो ?

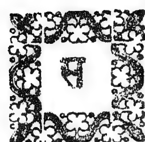
सावित्री—नहीं; मैं तो आपको चाहती नहीं हूँ, मगर मेरा दिल, मेरा हृदय, मेरा शरीर, मेरे रोम रोम, मेरी आत्मा, मेरा भाव, मेरा अन्तःकरण आपके इन चरणों को...। कुमार

ने जल्दी से उसके मुखको बन्द कर कहा—प्यारी! मैं भी तुम्हे जी जान से चाहने लग गया हूँ। अब यदि इस हृदय मन्दिर में कोई स्थान पावेगा तो तुम्ही एक पावोगी, अन्यथा और कोई स्वप्न में भी देखने न पावेंगे। आज तुमने अपनी सुन्दरता के साथ ही साथ अपने अलौकिक गुणों से भी मुग्ध कर दिया। वास्तव में तुम सती सावित्री ही हो। इतना कह-कर उन्हों ने उसको कण्ठ से लगा उसके गुलाबी गालों का चुम्बन लिया। इतने ही में खिड़की के बाहर से सनसनाता हुवा एक गोला आ, दीवार से टकराकर फट गया, साथ ही उसमें से बेहिसाब धूवाँ निकल; बात की बात में कमरे भर फैल गया। वे दोनों इससे चौंक कर उठाही चाहते थे, परन्तु उठ न सके। नाक, मुँहमें धूवाँ घुस, उसने कुछ बोलनेके लिए मुहलत तक न दे, बेहोश करके पलङ्ग परही सुला दिया।



ग्यारहवाँ बयान

" है दग़ा, भाजीव्वा, बदमाशियाँ इस भेष में ।
भूलकर भी पाँवको मत दो कभी उस देश में " ॥



मयने आधीरात की सीमा पर अपना डेरा खड़ा कर रक्खा है। चारोतरफ निस्तब्धताकी भयानक सूरत अपनी अँधियारी की झण्डी के नीचे खड़ी हो कर इधर उधर देख रही है। आसमान में बेतरह फैले हुए तारे इस समय अपनी चमक को चन्द्रमा से बढ़कर समझ घमण्ड के साथ तनकर ज़मीन को घूररहे हैं। कभी कभी निस्तब्धता की फौज में हारे हुए दुश्मनों के गोले की तरह निशाचरों के बोलने की आवाज़ सुनाई देती है। जगत् इस समय सन्नाटे के बीच में घुला हुवा है; परन्तु कादम्बिनी की आँखोंमें नींद नहीं है। वह रहरह कर लम्बीलम्बी उसासें ले दीवार के पास टिमटिमाते हुए दीए की तरफ़ देख रही है । उसका चित्त बिल्कुल ही व्यग्र है। उसको किसी तरह से भी चैन नहीं है। छोटी सी कोठरी, टूटी फूटी चारपाई; पुराना मैला बिछौना; गन्दे मटके का पानी; सूखी हुई रोटियाँ, भला उसको किस तरह की चैन देती। अच्युतानन्द के मकान में सोकर जिस समय इसकी आंखें खुली है; उस समय हथकड़ी; बेड़ी से जकड़ी हुई अपने को इसी बन्द कोठरी में पाया था। वह समय आज तीन दिन के हिसाब में चढ़ चुका; परन्तु इसके बीच में उसने किसीकी सूरत तक नहीं देखी। उसको बड़ा ही ताज्जुब होता था; उसकी समझ कुछ भी काम नहीं करती थी । इस

समय भी वह इसी उधेड़बुन में लगी हुई अपने दिलके भाफ़ को टिमटिमाते हुए दीए से निकले हुए धूँए की तरह बाहर की तरफ़ फेंक रही है । उसके हाथ; पैर में हथकड़ी; बेड़ी नहीं है । उसने कल बड़ी बड़ी कोशिश के बाद निकाल डाला-था । परन्तु दरवाजे को खोलने के पीछे समय को बहुत कुछ नष्ट कर हार मानचुकी थी । कुछ देर तक चिन्ता से विकल होकर वह उठ खड़ी हुई; आँखों से झरझर कर आँशू बहने लगे । हृदय में हाथ धर कर वह इधर उधर टहलती हुई आपही आप कहने लगी—मुझे इस तरह कैद कर इस कोठरी में बन्द कर देनेवाला कौन होगा । मैंने तो कभी भूलकर भी किसी का अपराध नहीं किया है । यह सब स्वामीजी की चालाकी तो नहीं है । वह बड़ी बुरी नज़र से मुझे घूरते थे । उनकी वह चाल मुझे ज़रा भी पसन्द नहीं आई थी । मगर वे मेरे साथ क्यों ऐसा सलूक करते । तो फिर उनके वैसे सुरक्षित मकान से मुझे कौन उठा लेआया ? मुझे न पाकर चन्दा क्या कहती होगी । स्वामीजी ने मेरी खोज लगाई या नहीं । सुनती थी; उनके चेले बड़े बदमाश हैं; उन्हीं में से किसी ने तो मेरे साथ यह दग़ाबाज़ी नहीं की । बहन को यह ख़बर पहुँचेगी तो कितना अफ़सोस करेगी । अब मैं क्या करूँ; कैसे इस संगीन कोठरी से निकल बाहर हूँ । क्या मेरी ज़िन्दगी इसी तरह से यहीं बितेगी ! वह इसके आगे भी न जाने और क्या क्या कहती; इतने ही में बन्द दरवाजे के बाहर से साँकल उतरने की झन्कार सुन चौंक पड़ी । साथ-ही सावधानी के साथ कान लगाकर सुनने लगी । धीरे धीरे दरवाज़ा खुलता हुवा, एक पलले के बाद दूसरा पल्ला भी खुला । यह चुपचाप टक लगाए हुए उसी ओर देख रही

थी,—इतने ही में उस धुँधली रोशनी के सहारे उसने देखा, स्वामीजी हाथ में कमन्द लिए हुए धीरे धीरे कोठरी के अन्दर आ रहे हैं। यह देख खुशी के मारे इसके मुँह से कुछ निकला ही चाहता था, इतने में स्वामीजी ने अपने मुँह पर हाथ रख, धीरे से कहा—तुम्हारे जागते रहने से मुझे बड़ी सुविधा मिली, नहीं तो जगाने की तरद्दुद उठानी पड़ती। तुम बोलो मत; ठिकाने पहुँच कर सभी कुछ बतावेंगे। अभी चुपचाप मेरे पीछे पीछे चली आवो?

कादम्बिनी को आसमान का चाँद मिल गया। वह चुपचाप पैर दबाती हुई स्वामीजी के पास पहुँची। उन्हों ने उसका हाथ पकड़कर दरवाजे के बाहर किया। वहाँ अन्धःकार से कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। स्वामीजी उसका हाथ पकड़े हुए धीरे धीरे किसी तरफ़ जाने लगे। वह चुपचाप पीछे पीछे चलने लगी। घण्टे भर तक इसी तरह इधर उधर चलने के बाद ये दोनों एक बन्द दरवाजे को खोल बाहर हुए। इस समय चाँद निकल आए थे। चारो तरफ की चीजें बहुत कुछ साफ़ साफ़ दिखलाई पड़ती थी। ये दोनों इस समय एक बग़ीचे में खड़े थे। सामने ही एक आदमी कसे-कसाए दो घोड़े लिए खड़ा था। कादम्बिनी को लिए हुए स्वामी जी उसीके पास पहुँचे। उस आदमी ने आगे बढ़कर अदब के साथ प्रणाम किया। स्वामी जी एक घोड़े पर सवार हुए, उनके इशारे से कादम्बिनी दूसरे घोड़े पर सवार हुई। स्वामीजी ने उस आदमी को झुक कर धीरे से कुछ कहा, जिसको सुनते ही वह वहां से एक तरफ़ को रवाना हुवा। ये दोनों भी बगीचे को पार कर एक तरफ़ को चल खड़े हुए। कोश भरतक चुपचाप घोड़े को बढ़ाते हुए चलने के बाद

कादम्बिनी की तरफ़ देखकर स्वामीजी ने कहा–कादम्बिनी! तुम्हारी ग्रहदशा अच्छी न होती तो इस भयानक जगह से कभी भी निकलने न पाती।

काद—(कृतज्ञता प्रकट करती हुई) ठीक है; परन्तु आप की दया दृष्टि मेरे ऊपर होकर इस तरह का कष्ट न उठाते तो मैं इस जन्म में कभी भी न छूटती। इस उपकार का बदला मैं आपको किस तरह से दूँ। सिवाय कृतज्ञता प्रकट करने-के और मैं इस जिन्दगी में देही नहीं सकती?

स्वामी—दे सकती हो, अच्छी तरह से दे सकती हो। मगर देती समय मुकर जावो तो मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं आज जान को हथेली में रखकर तुम्हे छुड़ाने के लिए आया हूँ। अगर मैं एक मामूली आदमी होता तो हर्गिज इस क़िले से तुम्हे सही सलामत बाहर निकाल नहीं सकता।

काद—ठीक है, मगर यह तो बताइए, मुझे आपके मकान से इस तरह सोते में उठाकर किसने यहाँ लाया? जहाँ मैं कैद थी वह किसका मकान था?

स्वामी—यह सुनकर तुम क्या करोगी, यह न सुनो, सुन कर तुम्हारे दिलको बड़ी कड़ी चोट पहुँचेगी। पहले तो मुझे सुन-कर विश्वास नहीं हुवा, परन्तु पीछे वह अविश्वास निश्चय के साथ बदल गया।

काद—जब की करनेवाले ने मेरे साथ ऐसी बेरहमी का सलूक किया तो; उसकी बातें सुन; उसे पहचानने से मेरा दिल क्यों दुःखी होगा? मैं अपने जी को कड़ा करके अवश्य सुनूँगी; मुझे सुना दिजीए? सुनें; इस दुनियां में मेरा भी कौन दुश्मन बन के आया?

स्वामी—सुनोगी ? अच्छा सुनो;—यह सब काम तुम्हारी मझली बहन माधुरी का है। उसी ने तुमको मेरे यहाँ से उठा कर कैद करने का साहस किया था ?

काद—(चौंक कर) माधुरी ने ? बहन माधुरी ने ! असम्भव; बिलकुल असम्भव ! आपको सुनने; समझने में धोका हुवा होगा . वैसी नेकचलन; वैसी सुशीला; वैसी सच्चरित्रा तो कठिन से कोई औरत होगी। फिर मैंने उसका क्या बिगाड़ा था जिससे मेरे साथ इस तरह की दुश्मनी लेकर; आपके यहाँ से उठा; मुझे तकलीफ़ पहुँचाने पर उतारू होती। बताइए; यह सब बातें आपको किसने कही ?

स्वामी—तुम अभी लड़की हो; तुममें ज़रा भी समझ नहीं है। इसी से तो कहने में मैं आनाकानी करता था। तुम्हे बिश्वास है; क्या मैं तुमसे झूट बोलूंगा ? ज़माना अब पहले का नहीं है। जो सीधा होता है उसी के ऊपर लोग हाथ साफ़ किया करते हैं। तुमने किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं था परन्तु तुम्हारी सहोदरा बहन माधुरीही ने ऐसा नहीं समझा; वह तुम्हारी जान की गाहक बनकर तुम्हारे पीछे पड़ गई। यह सुन कादम्बिनी रोने लगी;। रोते रोते उसकी हिचकीसी बँध गई। इसपर स्वामीजी ने बहुत कुछ समझाया। परन्तु उसका रोना किसी तरह से भी बन्द नहीं हुवा। इसी तरह चलते चलते ये लोग एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ से घूम कर नदी को पार करना पड़ता था। उस जगह मोड़ही पर से एक खूबसूरत लम्बा चौड़ा पुल बना हुवा था ! वहाँ पहुँचतेही इन दोनो ने एक कमसीन; हसीन योगिन को बड़ी मीठी तान से गाती हुई आते देखा। वह इन दोनो को देखतेही

पहले तो कुछ चिहुँक उठी, पीछे ग़ौर से देखने के बाद प्रसन्न हो सामने आ स्वामीजी को प्रणाम करके कहने लगी—मैं तो कोई दूसरा ही समझ कर ज़रासा डर गई थी, परन्तु आप इस आधीरात को इस तरह इन्हें लेकर कहाँ जा रहे हैं?

स्वामी—मैं एक बड़े भारी झमेले में फँस गया था। इस समय इन्हे एक जगह से छुड़ा कर ले आरहा हूँ। तुम बताओ; इस तरह अकेली कहाँ जा रही हो? तुम्हारी बहू महारानी तो मज़े में हैन? वह अब कभी मुझे याद करती है या नहीं?

योगन—यह भी कुछ कहने की बात है; वह रोज़ ही याद किया करती है। उसको किसने उस दरजे तक पहुँचाया? आज मैं भी उसी के काम से इस तरह अकेली इधर उधर की चक्कर देरही हूँ।

स्वामी-वह सब मुझे मालूम है। तुम जाओ; उसने अगर महेन्द्रसिंह की चीठि नदी तो परसों तक मेरे पास आजाना मैं तुम्हे एक आसान तरीक़ा बता दूँगा।

योगन—(आश्चर्य से) मगर यह सब ख़बर आपको किसने बताया?

स्वामी-(हँसकर) मुझे जिस समय तुम घरसे निकलने का विचार कर रही थी उसी समय मालूम होगया था। इस दुनियाँ के परदे में मुझसे कोई बातें छिपी रहजा सकती है?

योगन—आप की मैं किस मुंह से तारीफ़ करूँ? यदि ऐसा न होता तो उतनी बड़ी शक्तिशाली महारानी आप को लौंड़ी की तरह हाथ जोड़कर कदापि नहीं मानती।

स्वामी—(हँसकर) यह सब उनकी मेहरबानी है। अच्छा अब जावो; तुमसे मिलने के लिए उसी ठिकाने पर

अर्जुनसिंह और दिलीपसिंह भी आ रहे हैं । इतना कह कर उन्होंने झुक; उसके कान में कुछ कह दिया जिसको सुनतेही कादम्बिनी की तरफ़ देख वह हँसती हुई जिधर जा रही थी, उधरही चली गई । उसके जाते ही यह दोनों भी पुल पार करके एक चौड़ी सड़क पर चलने लगे । लगातार-घण्टेभर तक चलने के बाद दोनो ने सड़क को छोड़ एक छोटी सी पगडण्डी का रास्ता पकड़ा । इसपर भी आध घण्टे तक चलने के बाद एक लम्बा चौड़ा मैदान तै करके ये दोनों एक छोटे मोटे जंगल के भीतर घुसे। कादम्बिनी का रोना अभी तक बन्द नहीं हुवा था । वह धीरे धीरे सिसक सिसक कर रो रही थी। बीच बीच में स्वामीजी उसे समझाते भी जाते थे। जंगल के अन्त में एक नाले के किनारे एक बहुत बड़ा संगीन मकान बना हुवा था। मगर चाँदनी के उजाले में वह बिलकुल पुराना मालूम देता था। स्वामी जी ने तुरन्त ही दरवाजे का पता लगाया, वहाँ पहुँच कर उन्होंने घोड़े पर से उतर दरवाजे को किसी ढंग से खोल कादम्बिनी की तरफ़ देखकर कहा—बस तुम भी उतर पड़ो, अब यहीं तक इसकी सफ़र थी, यह सुनते ही वह भी उतर पड़ी। स्वामीजी ने उसका हाथ पकड़ा, वह उस समय काँप रही थी। मगर उन्होंने इसका कुछ ख्याल न कर उसको लिए दिए दरवाजे के अन्दर पैर रक्खा। दोनों घोड़े आपस में हिनहिना कर नाले की तरफ़ चले गए। अन्दर आते ही स्वामी जी ने किसी तरकीब से दरवाजे को बन्द किया। इसके बाद कादम्बिनी का हाथ पकड़ अँधेरे ही में एक तरफ़ चलने लगे। पाँच सात मिनट तक इसी तरह चलने के बाद एक जगह जाकर रुके, साथही खटके के साथ किसी दरवाजे के खुलने

की आवाज आई। उसके खुलतेही अन्दर की तरफ़ एक बहुत बड़ा चौक दिखाई पड़ा। वहां इस समय खूब तेज़ रोशनी हो रही थी। रोशनी के आस पास कई एक आदमी खड़े कुछ कर रहे थे। स्वामीजी कादम्बिनी को लेकर वहीं पहुँचे, वहां वीस बाईस बरस की दो खूब योगन, दो स्वामीजी ही की तरह कपड़े पहने हुए आदमी और दो सिपाही, दो औरत मर्द के छिन्न भिन्न लाश को बटोर कर बाँध रहे थे। उनसे कुछ ही दूर पर एक निहायत ही खूबसूरत तेरह चौदह बरस की लड़की बदहवास सी खड़ी हो लाशों की तरफ़ देख रही थी। स्वामी-जी ने वहां पहुँचते ही एक योगन की तरफ़ देखकर कहा—तुम महारानी के यहां से कब आई?

वह—मुझे आए, चार घण्टों से कुछ ऊपर हुआ होगा।

स्वामी—छोटी महारानी के साथ कामकला तो रवाना हो चुकी होगी?

वह—जी नहीं, कल सवेरे ही महारानी से भेंट करने के लिए महाराजा साहब आए हुए थे। उन्होंने उस काम को अभी रोक रखने के लिए कहकर उन्हे जाने नहीं दिया।

स्वामी—(सोचकर) उन्होंने ऐसा क्यों किया? कभी २ महारानी भी अपने आपेमें नहीं रहती हैं। अच्छा, मैं खुद जाकर इस बात को समझ लूंगा। मगर इन दोनों हरामज़ादों के बच्चों ने कुछ बता कर दम तोड़ा या नहीं?

वह–सिवाय राम राम के और चूँ तक भी नहीं किया।

स्वामी–(लड़की की तरफ़ दिखाकर) और इस हराम-ज़ादी लड़की ने?

लड़की—(हाथ जोड़ कर रोती हुई) नहीं नहीं मैं कुछ

नहीं जानती, मुझे मारो मत ? हाय ! तुम लोग बड़े ही निर्दयी हो। मेरी प्यारी मौसी को अब मैं कहां पाऊँगी ?

स्वामी—जहन्नुम में पावोगी। यह शैतान की बच्ची इस तरह नहीं मानेगी। इसको ले जाकर उसी लोहे वाले देव-मन्दिर में बन्द कर दो, मैं इससे समझ लूंगा। यह सुनते ही वह लड़की पागल की तरह चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी। मगर उसके ऊपर दया करने वाले कोई भी न निकले। यह दृश्य देख कादम्बिनी का रोंगटा खड़ा हुवा, उसकी आंखों में आंशू भर आया। वह उस लड़की के लिए कुछ कहा ही चाहती थी परन्तु स्वामीजी ने ऐसा करने का मौका ही नहीं दिया। तुरन्त उन सबों को उसी हालत में छोड़ उसका हाथ पकड़ दालान से घूमते हुए ऊपर की मंज़िल में चले आए। वहां पूरा अन्धकार था। स्वामीजी पहले की तरह उसका हाथ थामे हुए एक तरफ़ को चलने लगे। करीब घण्टे भर तक इसी तरह चलने के बाद सीढ़ी पर से उतर कर एक दरवाजे को खोलते हुए ये दोनों एक सजे सजाए कमरे में पहुँचे। वहां रोशनी भरपूर हो रही थी, सामने निकलने का दरवाज़ा खुला था। कमरे में तीन चार खूबसूरत लौंडियां हाथों में रूमाल ले मेज़, कुर्सी, कोंच को झाड़ रही थी। स्वामीजी के आते ही वे सब क़ायदे के साथ खड़ी हो गई। उन्होंने इशारे से उन सबों को कुछ समझाया, जिसको समझ कर एक लौंड़ी ने ग्लास में कुछ भर कर उनके हाथ में दिया। उन्होंने खड़े-खड़े ही उसको पीने के बाद कादम्बिनी को एक कोंच पर बैठने का इशारा किया। वह अपनी इच्छा से तो नहीं उनकी इच्छा से उस पर बैठ गई। स्वामीजी ने कई ग्लास को ख़ाली करने के बाद कुछ लड़खड़ाई हुई ज़बान से एक लौंड़ी की

तरफ़ देखकर कहा—कादम्बिनी को भी प्यास लगी होगी, इसे भी पिला दो ?

काद—नहीं नहीं, अभी मुझे ज़रा भी प्यास मालूम नहीं पड़ रही है।

स्वामी—तब भी पियो रानी ! यह पानी नहीं, सुधा है सुधा, इसको पीते ही आदमी अमर हो जाते हैं। थकावट नहीं रहती है, बदन में फूर्त्ति आ जाती है। यह ख़ास मेरे हाथ का बना हुआ रसादि है। मैं कभी दूसरे के हाथ का पीता ही नहीं।

काद—(डरकर) स्वामीजी ! आपको इस तरह ज़ोर देना उचित नहीं हैं।

स्वामी—क्यों नहीं है, (एक लौंडी से) तुम मुझे भरकर दो, मैं अपनी रानी को अपने ही हाथों से पिलाऊंगा।

काद—(हाथ जोड़कर) नहीं स्वामी जी ! मैं कुछ भी न पीऊँगी, मुझे माफ़ कीजिए ?

स्वामी—(लौंड़ी के हाथ से ग्लास लेकर) तुम लोग हट जावो, तुम लोगों के सामने मेरी जीवनाधार कुछ नहीं पीएगी। देखना, समझे,—मेरी प्राण शरमाती है। लौड़ियां हँसती हुई दरवाजे को बन्दकर चली गई। कादम्बिनी थर थर काँपकर हाथ पैर जोड़ने लगी। स्वामीजी ने बावले की तरह उसका हाथ पकड़ कर कहा—मेरी हृदयहारिणी ! मुझे क्यों सताती हो, मेरा कलेजा जल रहा है, मैं अब अपने को सँभाल नहीं सकता। जिस समय तुम्हे साल भर के बाद अपने मकान पर देखा उसी समय से मैं तुम्हारे ऊपर जी जान से न्यौछार हुवा। अब मेरी जीवनधन ! यह कामकी बढ़ती हुई ज्वाला मुझसे सही नहीं जाती। तुम मुझे अपने अम्मृतमय होठों का रस पिलाकर शीतल करदो। मैंने इसी लिए तो तुम्हे कैद......

काद—(उनके हाथ को झटकार कर) बस स्वामीजी! बस, आपका ऐसा व्यभिचारी होना मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं था। आप हमारे पिता तुल्य होकर हम्ही से ऐसा कहते हैं? शरम नहीं आती! और सब बातों की कुछ शरम नहीं रक्खी तब भी इस भेष की तो शरम रखिए? छीः व्यभिचार की भी हद होती है। मुझे छोड़ दीजिए, मैं इसी दम चली जाऊँगी।

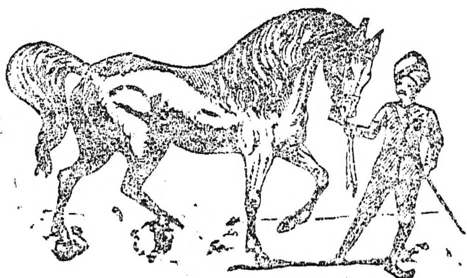
स्वामी—(लड़खड़ा कर) कहां जावोगी मेरी जान! मैं तुम्हे इस ज़िन्दगी में अब कहाँ जाने दूँगा। हृदय चीरकर देख-लो;-तुम्हे मैंने किस सिंहासन पर बैठाया है। तुम मेरी गोदको छोड़कर वहांक्यों खड़ी हो, आवो, बैठ जावो,-एक मीठा; बहुतही मीठा चुम्बा देकर मुझ ऐसे शक्तिशाली को बिना दामही ख़रीदो? मैं तुम्हे अम्बालिका को निकाल कर उसकी जगह पर बैठा दूँगा। इतना कहकर स्वामीजी ने उसको पकड़ना चाहा परन्तु वह घृणा से उन्हे थूकती हुई छटक कर दूर जा खड़ी हुई। वे लड़खड़ाते हुए उसकी ओर बढ़ने लगे। उसने सहायता के लिए चिल्लाकर दरवाज़ा खोलना चाहा, मगर किसी तरह से भी न खुला, न कोई सहायता ही के लिए आया। स्वामीजी ने उसके पास पहुँच कर उसका हाथ पकड़ना चाहा। वह बचाव का रास्ता न देख अत्यन्त निराश होकर इधर उधर देखने लगी। इतने में जिस रास्ते से ये दोनों आए थे उसी रास्ते के दरवाजे को खोल कर एक काली औरत ने आ स्वामी जी को ज़ोर से धक्का देकर गिरा दिया। साथ ही फूर्त्ति से उनका हाथ पैर बांध; उनके मुंह में रूमाल ठूंस कर; डरके मारे थर थर कॉंपती हुई कादम्बिनी को मुहब्बत से पकड़ जिस रास्ते से आई थी उसी रास्ते से चली गई।

कादम्बिनी के जी में जी आया; वह अपने बचाने वाली

औरत का हाथ ज़ोर से पकड़ जिधर वह ले जाती थी उधर ही जाने लगी। अन्दर बिलकुल अन्धकार था। कहां जा रहे हैं; किस तरफ़ जा रहे हैं; उसको कुछ भी मालूम न हो सका। आध घण्टे तक बराबर चलने के बाद ये दोनों एक दरवाजे से बाहर हुए। सामने ही एक रास्ता था; रास्ते से कुछ हटकर एक पेड़ के साथ एक घोड़ा बँधा हुआ था। उस काली औरत ने कादम्बिनी को उसके पास ले जाकर; उसमें पहले आप सवार हो; अपने पीछे उसको भी सवार कराके घोड़े को तेज़ी के साथ हांक एक ओर का रास्ता लिया। अब रात डेढ़ घंटे के क़रीब बांकी रह गई थी। पाव घंटे तक सर पट घोड़े को फेंक चलने के बाद ये दोनों बहुत बड़े बाग़ के चोरदरवाजे पर पहुँचे। बाग के साथही साथ उस चोर दरवाजे को देख कादम्बिनी चौंक उठी। यह देख काली औरत ने उसे कहा—हाँ; अब तुम अपने महल में आ पहुँची; इसी चोर दरवाजे से भीतर चली जावो; मैं बिदा होती हूँ।" इतना कहते कहते उसकी आंखों से दो बून्द आंसू टपक पड़ा; परन्तु कादम्बिनी ने उसको नहीं देखा। इसके बाद उसने घोड़े पर से उतर; कादम्बिनी को भी उतार किसी तरकीब से दरवाजे को खोल; अन्दर जाने के लिए कह, घोड़े पर सवार हो जिधर से आई थी तेज़ी के साथ उधर ही चली गई। कादम्बिनी को अपना इस तरह से उपकार करने वाली औरत का नाम तक पूछने की मुहलत न मिली। कुछ देर तक वहीं खड़ी खड़ी सोचने के बाद दरवाजे को बन्द कर बाग़ से होती हुई वह किसी गुप्त राह से महल के अन्दर घुस गई। उस समय आध घंटे के क़रीब रात रह गई थी। वह जल्दी जल्दी चलकर अपने कमरे के पास पहुँची। दरवाज़ा बन्द था। उसने उसे किसी तरकीबसे

खोल अन्दर पैर रक्खा। कमरे में पूरी रोशनी हो रही थी। उस रोशनी में उसने देखा; एक अत्यन्त ही सुन्दर नौजवान उसके पलंग पर बेखबर हो लेटा हुआ है; एक अधेडसी औरत हाथ में खंजर ले झुककर उसके मुंह की ओर देख रही है। यह देख उसने तीर की तरह छूट उसके हाथ से खञ्जर छीन लिया।

* पहिला हिस्सा समाप्त *



इसके आगेका भीषण हाल जानना होतो दूसरा हिस्सा मंगाकर पढ़िए ?